Page-1_Layout 1 7/8/2025 5:03 PM Page 1

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

वर्ष–11 अंक–9 पाक्षिक समाचार पत्रिका कोलकाता, गुरुवार 10 जुलाई – 24 जुलाई 2025 मूल्यः 5 रुपये RNI No. WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata

जनधन का उपयोग कर हो रहा फर्जीवाड़ा

डेढ़ करोड़ बैंक खाते होंगे बंद

निज संवाददाता : देश में जनधन योजना के तहत खोले गए कुल बैंक खातों की संख्या 55 करोड़ 70 लाख है। इसमें से करीब 1.5 करोड़ खाते अभी निष्क्रिय हैं। इन निष्क्रिय जनधन खातों का एक बड़ा हिस्सा साइबर फ्रॉड के जरिए चुराए गए पैसे को ट्रांसफर करने में इस्तेमाल किया जा रहा है। स्थिति इतनी भयावह है कि इस बार खुद रिजर्व बैंक को कदम उठाना पड़ा है। उसने विभिन्न सरकारी बैंकों को सिफारिश की है कि इन निष्क्रिय खातों को बंद कर दिया जाए। इसके लिए तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। जिन जनधन खातों का इस्तेमाल लंबे समय से किसी वित्तीय लेनदेन, जमा या पैसे निकालने के लिए नहीं किया गया है, उन्हें बंद किया जाएगा। क्या सभी निष्क्रिय 1.5 करोड़ खाते बंद किए जाएंगे? या कुछ खाता धारकों को नोटिस भेजा जाएगा? इसका फैसला बैंक अधिकारी करेंगे।मोदी सरकार के जनधन खाता प्रोत्साहन की सफलता को लेकर पहले भी कई बार सवाल उठ चुके हैं। क्योंकि कई साल पहले पता चला था कि बड़ी संख्या में जनधन खाते जीरो बैलेंस पर हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो सरकार ने देश के गरीब लोगों के बैंक खाते खोलकर गरीबी कम करने का रिकॉर्ड बनाया है। दरअसल, कई लोगों के पास खाते खुले रखने के लिए नियमित वित्तीय बचत या आय नहीं होती है। फिर विवाद तब और बढ़ गया जब पता चला कि अचानक बैंक अधिकारी कई जनधन खातों में छोटी–छोटी रकम जमा करके जीरो बैलेंस खातों की संख्या कम करने की कोशिश कर रहे हैं। शिकायतें और विवाद थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। ₹

रिजर्व बैंक की रिपोर्ट कहती है कि पिछले दिसंबर की तुलना में निष्क्रिय जनधन खातों की संख्या बढ़ रही है। इसी तरह, डिजिटल माध्यमों से आम लोगों को ठगने और चुराए गए पैसे को निष्क्रिय जनधन खातों में जमा करने की प्रवृत्ति ने और भी बड़ा संकट पैदा कर दिया है। जमा किए गए पैसे भी निकाले जा रहे हैं। यह कैसे संभव है? इसकी जांच के लिए रिजर्व बैंक ने म्यूल हंटर नाम से एक विशेष अभियान शुरू किया है। उस जांच में पता चला है कि अकेले बैंक ऑफ इंडिया के तहत ऐसे निष्क्रिय जनधन खातों का इस्तेमाल 147 करोड़ रुपये की रकम को फर्जी तरीके से ट्रांसफर करने के लिए किया गया है। यह सिर्फ 6 महीने का आंकड़ा है। रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले वित्त वर्ष में कुल 13,516 डिजिटल धोखाधड़ी हुई हैं, जिनकी कीमत 520 करोड़ रुपये है। पिछले सालों में एक के बाद एक देशभर में जनधन खाते इस डिजिटल धोखाधड़ी को अंजाम देने के मकसद से खोले गए हैं। शुरुआत में हर खाते के लिए केवाईसी मांगी जाएगी। फिर सत्यापन का दौर चलेगा। इसके बाद ही खाता रद्द करने की प्रक्रिया शुरू होगी। हालांकि जनधन बैंक खातों में केंद्रीय योजनाओं के कई डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर जमा होते हैं। इस वजह से बैंक अपनी मर्जी से खाते रद्द नहीं कर पाते हैं। इसलिए सबसे पहले उन खातों की पहचान की जाएगी जो निष्क्रिय हैं और जिनके जरिए डिजिटल धोखाधड़ी की जा रही है।

मैं किसी न किसी मंच पर जरूर नजर आऊंगा: दिलीप घोष

निज संवाददाता। बंगाल भाजपा की कमान बदलते ही कई नई संभावनाओं को लेकर चर्चा और अफवाह शुरू हो गई है। शमिक भट्टाचार्य के नए प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने अपने अनोखे भाषण में बताया कि संगठन में बड़ा फेरबदल होने जा रहा है। भाजपा भी कट्टर हिंदुत्व की लाइन से हट रही है। बल्कि शमिक ने सबका साथ का संदेश दिया। यह अफवाह भी सुनने को मिली कि शमिक के कमान संभालने से दिलीप घोष गुट सक्रिय हो सकता है। इस बारे में अब शमिक भट्टाचार्य ने खुलकर बात की है। उन्होंने कहा, दिलीप घोष का जहां भी इस्तेमाल हो सकेगा, किया जाएगा। अब दिलीप घोष इस साल 21 जुलाई को मंच पर नजर आ सकते हैं। इसे लेकर कयास तेज हैं। सोमवार की सुबह इको पार्क में पत्रकारों से फिर मुखातिब होते हुए भाजपा नेता दिलीप घोष ने कहा, कि मैं किसी मंच पर जरूर दिखूंगा। 21 तारीख आए या न आए। राजनीति अटकलों पर आधारित होती है। देखते हैं क्या होता है। लोग जो जानना चाहते हैं, वही असली बात है। कई लोग अटकलों के आधार पर राजनीति करते हैं। मेरे पास पानी भी नहीं है। मेरे पास पोना भी नहीं है। मेरे पास राजनीति है। 21 जुलाई के बाद कोई सवाल नहीं रहेगा। सभी सवालों का समाधान हो जाएगा।

एजबेस्टन में भारत का ऐतिहासिक विजय अभियान

निज संवाददाता :भारत ने एजबेस्टन में खेले गए दूसरे टेस्ट में इंग्लैंड को 336 रनों से हराकर श्रृंखला को 11 से बराबरी पर ला दिया। यह एक दमदार ऑलराउंड प्रदर्शन था, जिसकी अगुवाई कप्तान शुभमन गिल की दो शतकों और आकाशदीप व मोहम्मद सिराज की धारदार गेंदबाज़ी ने की। इसी के साथ भारत ने इस ऐतिहासिक मैदान पर 58 वर्षों का इंतजार खत्म करते हुए पहली बार टेस्ट मैच जीता।यह एजबेस्टन में भारत की पहली टेस्ट जीत थी, जहां उसने इससे पहले खेले गए 8 में से 7 मुकाबले हारे थे।शुभमन गिल विदेश में टेस्ट जीतने वाले सबसे युवा भारतीय कप्तान बने और इंग्लैंड में एक टेस्ट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय खिलाड़ी भी बने।श्रृंखला अब 11 की बराबरी पर है और अगला टेस्ट 10 जुलाई से लॉर्ड्स में खेला जाएगा। भारत अब इस ज़बरदस्त जीत की लय को बरकरार रखना चाहेगा, खासकर जब जसप्रीत बुमराह की वापसी की भी उम्मीद है।टॉस जीतो, पहले गेंदबाज़ी करो और लक्ष्य का पीछा करो यह रणनीति पिछले तीन वर्षों से बेन स्टोक्स के लिए काफी सफल रही है, लेकिन इस बार यह दांव उल्टा पड़ गया। इसके बजाय शुभमन गिल थे, जिन्हें मुकाबले के अंत में सराहना मिल रही थी उनकी कप्तानी में यह पहली जीत रही, और वह भी इंग्लैंड पर 336 रनों की करारी शिकस्त के साथ, जिससे भारत ने श्रृंखला में बराबरी कर ली।

बंगाल में फिर एनआरसी का आतंक!

♦ **कूचबिहार निवासी को मिला नोटिस**

निज संवाददाता : बंगाल में फिर एनआरसी का आतंक देखने को मिल रहा है। कूचबिहार निवासी को असम सरकार की ओर से भेजा गया नोटिस मिला है। घटना को लेकर इलाके में काफी हंगामा मचा हुआ है। उत्तर बंगाल विकास मंत्री उदयन गुहा ने घटना की निंदा की है। नोटिस मिलने की वजह से व्यक्ति को कोई राहत नहीं मिल रही है।

घटना की शुरुआत जनवरी में हुई थी। उस समय कूचबिहार जिले के सीमावर्ती इलाके के निवासी उत्तम कुमार ब्रजबासी को डाक से एक पत्र मिला था। पहले तो उन्हें मामला समझ में नहीं आया। बाद में उन्हें पता चला कि वह पत्र एनआरसी का नोटिस था। जिसे गुवाहाटी से भेजा गया था। इसके बाद उन्होंने प्रशासन से संपर्क किया।

पता चला कि व्यक्ति को 15 जुलाई तक असम के कामरूप में जिला पुलिस अधीक्षक के समक्ष पेश होने का आदेश दिया गया है। उसे भारतीय होने का प्रमाण साथ रखना होगा। स्वाभाविक रूप से वह काफी डरे हुए हैं। लेकिन दावा किया जा रहा है कि व्यक्ति और असम के बीच कोई संबंध नहीं है। उत्तर बंगाल विकास मंत्री उदयन गुहा का दावा है कि इस घटना के पीछे भाजपा की साजिश है। गौरतलब है कि एनआरसी की अंतिम सूची 31 अगस्त, 2019 को प्रकाशित हुई थी। जिसमें 19 लाख 6 हजार 657 लोगों के नाम बाहर कर दिए गए थे। अंतिम सूची में 3 करोड़ 11 लाख 21 हजार 4 लोगों को जगह मिली। लेकिन अंतिम सूची सार्वजनिक होने के बाद देखा गया कि असम में रहने वाले कई हिंदुओं के नाम भी इस सूची से बाहर कर दिए गए। खासकर, बराक घाटी में रहने वाले कई हिंदुओं के नाम राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) की अंतिम सूची में नहीं हैं।

बीजेपी के नए प्रदेश अध्यक्ष के सामने हैं कई चुनौतियां

♦ **विरोधी भी शमिक भट्टाचार्य के कायल**
♦ **राज्य इकाई में गुटबाजी खत्म करना सबसे बड़ा चैलेंज**

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव होने में अब एक साल से भी कम समय बचा है और बीजेपी पार्टी को दुरुस्त करने में जुट गई है। राज्यसभा सांसद शमिक भट्टाचार्य बंगाल के नए प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए। लेकिन बीजेपी के इस सेनापति के सामने कई चुनौतियां हैं। भट्टाचार्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती चुनाव से पहले राज्य इकाई में गुटबाजी को खत्म करना होगा। बता दें कि सुकांत मजूमदार, नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी और पूर्व सांसद दिलीप घोष के नेतृत्व वाले गुटों के बीच खींचतान चलती रही है। केंद्रीय नेतृत्व का मानना है कि भट्टाचार्य राज्य इकाई के विभिन्न गुटों के लिए स्वीकार्य साबित होंगे। 2026 के विधानसभा चुनाव में पार्टी कैसा प्रदर्शन करती है। यह उनके नेतृत्व की असली परीक्षा होगी। ऐसे में सवाल है कि क्या ममता बनर्जी के सामने शमिक खेला करने में सफल हो पाएंगे?

शमिक क्यों पड़ें सब पर भारी?

बीजेपी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि पार्टी हमेशा जमीनी स्तर के नेताओं को पसंद करती है। शमिक भट्टाचार्य खास तौर पर विधानसभा चुनावों से पहले एकदम सही विकल्प हैं। सभी

जिला स्तर के नेता उन्हें वर्षों से जानते हैं और उनसे आसानी से बात कर सकते हैं। एक्सपर्ट मानते हैं कि शमिक भट्टाचार्य की छवि साफ–सुथरी रही है। राज्य और केंद्रीय नेतृत्व के खिलाफ कभी विद्रोह न करना, पार्टी के सभी गुटों के साथ अच्छे संबंध और आरएसएस से नजदीकी के कारण उन्हें बड़ी जिम्मेदारी दी गई। शमिक की एक खासियत है कि वह कभी भी नेताओं पर व्यक्तिगत हमले नहीं करते। बीजेपी उनके नेतृत्व में 2026 का चुनाव एकजुट होकर लड़ेगी।

चार दशक की राजनीति का अनुभव

शमिक भट्टाचार्य 61 साल के हैं। उनके पास 4 दशकों से ज्यादा का राजनीतिक अनुभव है। उन्होंने 1971 में हावड़ा में आरएसएस के साथ अपना करियर शुरू किया। बाद में वह बीजेपी में आ गए थे। 1990 के दशक में वे अपनी वाक्पटुता के कारण राज्य में पार्टी के सबसे लोकप्रिय चेहरों में से एक बन गए। उन्होंने भारतीय जनता युवा मोर्चा के दक्षिण हावड़ा मंडल के महासचिव और हावड़ा जिले के महासचिव जैसे कई पदों पर काम किया। बाद में उन्हें भारतीय जनता युवा मोर्चा का महासचिव बनाया गया। शमिक इस पोस्ट पर 11 साल तक रहे, फिर तीन बार बीजेपी के महासचिव बने। 2014 में उन्होंने बसीरहाट दक्षिण विधानसभा उपचुनाव जीता और एक साल से थोड़ा अधिक समय तक विधायक रहे। बीजेपी ने 2024 में उन्हें पहली बार पश्चिम बंगाल से राज्यसभा भेजा। शमिक के भाषण के कायल विरोधी भी रहे हैं। माकपा के एक नेता ने बताया कि वे इतने अच्छे वक्ता हैं कि एक बार नेता प्रतिपक्ष रहे सूर्यकांत मिश्रा ने उन्हें विधानसभा में अपने कोटे से समय दिया था। विधानसभा अध्यक्ष ने उन्हें सिर्फ पांच मिनट दिया था। अपने भाषणों में शमिक अक्सर शंख घोष और शक्ति चट्टोपाध्याय जैसे प्रतिष्ठित कवियों की कविता सुनाते हैं। 2017 में पश्चिम बंगाल सीआईडी ने प्रधानमंत्री आवास योजना के कार्यान्वयन में कथित घोटाले की जांच के सिलसिले में भट्टाचार्य को तलब किया था।

पीएम मोदी का राज्य दौरा 18 जुलाई को

♦ **इस साल दक्षिण बंगाल में मोदी की पहली बैठक**
♦ **बंगाल भाजपा में तैयारियां शुरू**

निज संवाददाता : तृणमूल के शहीद दिवस 21 जुलाई से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिर राज्य में आ रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक 18 तारीख को उनका संभावित बंगाल दौरा है। दमदम या बारासात में कहीं जनसभा हो सकती है। पता चला है कि मोदी इन चार संगठनात्मक जिलों– बारासात, बनगांव, बैरकपुर, कोलकाता उत्तर में जनसभाएं करेंगे। खबर है कि इन जगहों के नेता, कार्यकर्ता और समर्थकों ने पहले ही जोर–शोर से तैयारियां शुरू कर दी हैं। इससे पहले मई में प्रधानमंत्री ने उत्तर बंगाल के अलीपुरद्वार में सभा की थी। इस बार उनकी जनसभा दक्षिण बंगाल में है। तृणमूल के शहीद दिवस 21 जुलाई से पहले मोदी की यह बैठक निस्संदेह काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है।राज्य में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। हर बार की तरह भगवा खेमा बंगाल पर

कब्जा करने की जी–तोड़ कोशिश कर रहा है। बंगाल भाजपा में पहले ही बड़ा फेरबदल किया जा चुका है। सुकांत मजूमदार के बाद राज्यसभा सांसद और पुराने भाजपा नेता शमिक भट्टाचार्य को प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। उनके लिए बड़ी चुनौती अगले विधानसभा चुनाव में भाजपा शिविर की झोली में कई और सीटें लाना है। इससे पहले मई में मोदी ने अलीपुरद्वार में जनसभा कर अगले चुनाव में राज्य की सत्ता से तृणमूल को बेदखल करने का आह्वान किया था। तब से ही अटकलें लगाई जा रही थीं कि वह दक्षिण बंगाल का दौरा कब करेंगे। उन अफवाहों को दूर करते हुए अब भाजपा सूत्रों ने खबर दी है कि प्रधानमंत्री 18 जुलाई को फिर से कोलकाता आ रहे हैं। जनसभा दमदम सेंट्रल जेल मैदान या बारासात में कहीं हो सकती है। दक्षिण बंगाल में भाजपा ब्रिगेड पहले से ही सांगठनिक रूप से कमजोर है। यहां भाजपा को मिली सीटों की संख्या कम है। इसलिए प्रधानमंत्री आगामी दौरे में पार्टी को मजबूत करने के लिए मुखरता से टॉनिक देने जा रहे हैं।

लॉ कॉलेज कांड : न्याय की आस में एक और बेटी

पीड़ित बहन को जरूर मिलेगा न्यायः उमेश राय

‘यह सिर्फ एक मामला नहीं, बल्कि बंगाल की महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा की लड़ाई है।’

ममता सरकार पर गरजे भाजपा नेता

किशन मिश्रा

पश्चिम बंगाल में महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध एक बार फिर राज्य सरकार की कार्यप्रणाली और कानून व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर रहे हैं। हाल ही में दक्षिण कोलकाता स्थित एक लॉ कॉलेज में छात्रा के साथ हुए सामूहिक बलात्कार के जघन्य मामले ने पूरे राज्य को झकझोर कर रख दिया है। इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए बंगाल भाजपा के प्रदेश सचिव उमेश राय ने राज्य सरकार और विशेष रूप से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी जब 2011 में पहली बार राज्य की मुख्यमंत्री बनीं, तो लोगों को उम्मीद थी कि महिलाओं को न्याय और सुरक्षा मिलेगी। उन्होंने खुद अपनी सरकार को ‘मां, माटी, मानुष’ की सरकार बताया था, लेकिन दुख की बात है कि इस सरकार में सबसे अधिक उत्पीड़न मां यानी नारी को ही झेलना पड़ रहा है। महिलाओं के चरित्र पर सवाल उठाने और बलात्कार पीड़िताओं के लिए मुआवजा तय करने जैसी बयानबाजी करके मुख्यमंत्री ने संवेदनशील मामलों को भी राजनीतिक रंग देने की कोशिश की है।

उन्होंने याद दिलाया कि ममता बनर्जी

उमेश राय (सचिव, प्रदेश भाजपा)

ने कभी पार्क स्ट्रीट कांड को ‘मनगढ़ंत’ बताया था, तो एक अन्य मामले में पीड़िता की गर्भावस्था पर सवाल उठाए थे। उन्होंने कहा कि राज्य के कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और यहां तक कि अस्पतालों तक में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। आरजी कर मेडिकल कॉलेज में महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या की घटना को याद करते हुए उमेश राय ने कहा कि उस मामले में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विरोध देखने को मिला था, लेकिन आज तक पीड़िता के माता-पिता न्याय के लिए भटक रहे हैं। हालांकि, लॉ कॉलेज की पीड़िता जिंदा है और उसने पूरे होशोहवास में लिखित बयान दिया है। यूनियन रूम में गैंगरेप होना शर्मनाक और भयावह है। इस मामले में सारे सबूत मौजूद हैं, लिहाजा उम्मीद की जानी चाहिए कि पीड़िता को न्याय अवश्य मिलेगा।

तृणमूल की चुप्पी और सत्ता संरक्षण पर सवाल

भाजपा नेता राय ने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस इस मामले में जिम्मेदारी लेने की मानसिक स्थिति में नहीं है। उन्होंने कहा कि राज्य की शिक्षा व्यवस्था को पार्टी नेताओं की पैरवी पर नियुक्तियों के माध्यम से बर्बाद किया जा रहा है। कॉलेजों में छात्र संघ चुनाव 12 वर्षों से नहीं हुए हैं और जिन छात्र नेताओं पर पहले से बलात्कार और छेड़छाड़ के केस दर्ज हैं, उन्हें ही कॉलेजों की गवर्निंग बॉडी में बैठाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यही कारण है कि ऐसी घटनाओं की जड़ें और भी गहरी होती जा रही हैं। सत्ता संरक्षण और लापरवाही ने अपराधियों को और अधिक दुस्साहसी बना दिया है। वहीं, पीड़िता का साहस और सामने आए प्रमाण न्याय दिलाने में सहायक सिद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि पुलिस के सामने दर्ज लिखित बयान और मौजूद साक्ष्य यह साबित करते हैं कि सच्चाई को दबाना इस बार आसान नहीं होगा।

महिला आरक्षण की दहलीज़ पर लोकतंत्र : अब दलों को उठानी होगी जिम्मेदारी

2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम भारत में राजनीति के स्वरूप को बदलने का ऐतिहासिक अवसर है। हालांकि इसका क्रियान्वयन 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले संभव है, लेकिन यह तभी सफल होगा जब राजनीतिक दल अभी से महिलाओं के लिए अनुकूल वातावरण बनाएं। केवल आरक्षित सीटें देना पर्याप्त नहीं; दलों को आंतरिक कोटा, वित्तीय सहयोग, प्रशिक्षण, मेंटरशिप और निर्णयकारी भूमिका में महिलाओं को प्राथमिकता देनी होगी। अगर यह मौका चूक गया तो आरक्षण भी दिखावा बन जाएगा। समावेशी और सशक्त लोकतंत्र के लिए अब निर्णायक और नीतिगत पहल ज़रूरी है।

प्रियंका सौरभ

2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम, यानी संविधान का 106वां संशोधन, भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने का ऐतिहासिक प्रयास है। यह अधिनियम लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण सुनिश्चित करता है, लेकिन इसकी सफलता महज संविधान में दर्ज होने से नहीं होगीबल्कि इस पर अमल करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति से तय होगी। वर्ष 2029 के आम चुनावों में यदि यह आरक्षण प्रभावी होता है, तो यह न केवल भारत के लोकतंत्र के लिए निर्णायक मोड़ होगा, बल्कि महिलाओं के नेतृत्व की दिशा भी तय करेगा। इसके लिए राजनीतिक दलों को अभी से व्यापक और दूरदर्शी कदम उठाने होंगे।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति हमेशा सीमित रही है। 2024 में चुनी गई 18वीं लोकसभा में सिर्फ 74 महिलाएं चुनकर आईं, जो कुल सीटों का मात्र 13.6 फीसदी हैं। यह आंकड़ा 2019 की तुलना में भी घटा है और वैश्विक औसत 26.9 फीसदी से काफी पीछे है। राज्य विधानसभाओं की स्थिति और भी चिंताजनक है, जहां औसतन केवल 9 फीसदी ही महिलाएं विधायक हैं। यह न केवल लैंगिक असमानता को दर्शाता है बल्कि नीति-निर्धारण की उस प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है जिसमें आधी आबादी की हिस्सेदारी नगण्य है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के निम्न स्तर के कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है भारतीय समाज की गहरी पैठी हुई पितृसत्तात्मक सोच। महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित कर दिया जाता है, जिससे नेतृत्व के अवसर स्वाभाविक रूप से पुरुषों को मिलते हैं। सरपंच पति जैसी प्रथाएं इस सोच को और भी स्पष्ट करती हैं।राजनीतिक दलों के भीतर भी यह धारणा प्रचलित है कि महिलाएं चुनाव जीतने की दृष्टि से कमज़ोर प्रत्याशी होती हैं। लेकिन यह एक मिथक है, जिसे हाल के आंकड़े खारिज करते हैं। उदाहरण के लिए, 2024 लोकसभा चुनाव में महिलाएं केवल 9.6 फीसदी उम्मीदवार थीं, लेकिन उनकी सफलता दर पुरुषों से अधिक थी उन्होंने 13.6 फीसदी सीटें जीतीं।महिलाओं के सामने आर्थिक संसाधनों की कमी भी एक बड़ी बाधा है। भारत में चुनाव लड़ना अत्यंत महंगा है, और अधिकांश महिलाएंखासकर ग्रामीण व पिछड़े वर्गों सेस्वतंत्र रूप से इतने संसाधन नहीं जुटा सकतीं। इसके अलावा, राजनीति का वातावरण भी महिलाओं के लिए असुरक्षित और शत्रुतापूर्ण रहता है। उन्हें ट्रोलिंग, चरित्र हनन, और मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जिससे उनका आत्मविश्वास डगमगाता है।राजनीतिक दलों में महिलाओं के लिए मार्गदर्शन, प्रशिक्षित नेतृत्व विकास और निर्णय लेने वाली इकाइयों में शामिल करने जैसी संस्थागत व्यवस्थाएं भी अक्सर अनुपस्थित रहती हैं। महिला मोर्चा बनाकर उन्हें पार्टी के मुख्य ढांचे से अलग कर दिया जाता है, जिससे वे सत्ता के निर्णायक केंद्रों से दूर रह जाती हैं।2029 के आरक्षण को सार्थक बनाने के लिए राजनीतिक दलों को अब से ही तैयारी करनी होगी। सबसे पहला कदम हैस्वैच्छिक आंतरिक कोटा। टिकट वितरण में 33 फीसदी महिला उम्मीदवारों को प्राथमिकता देना केवल आरक्षण की तैयारी नहीं, बल्कि समावेशी लोकतंत्र की दिशा में पहल होगी। ऑस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी जैसी मिसालें बताती हैं कि आंतरिक कोटा राजनीति की संस्कृति को सकारात्मक रूप से बदल सकते हैं। दूसरा आवश्यक कदम हैवित्तीय सहायता और संरचित प्रशिक्षण। राजनीतिक दलों को महिला उम्मीदवारों के लिए अलग चुनावी फंड बनाना चाहिए ताकि वे चुनावी खर्च का बोझ उठा सकें। कनाडा का जूडी लामार्श फंड इसका अच्छा उदाहरण है। साथ ही, पंचायतों और नगरपालिकाओं में सक्रिय महिला प्रतिनिधियों को विधानसभा और संसद स्तर के लिए तैयार करने का नेतृत्व कार्यक्रम भी चलाया जाना चाहिए।महिलाओं को पार्टी की कोर कमेटियों, नीति निर्माण इकाइयों और प्रवक्ता मंडल में भी सक्रिय भूमिका देनी चाहिए। केवल महिला मोर्चा या सांस्कृतिक आयोजनों तक सीमित रखकर नेतृत्व नहीं उभरेगा। आईयूएमएल जैसी पार्टियों ने हाल ही में कोर नेतृत्व में महिलाओं को शामिल किया हैअन्य दलों को भी यही दिशा लेनी चाहिए।मेंटोरशिप भी एक सशक्त उपकरण हो सकता है। अनुभवी महिला नेता अगर नवोदित उम्मीदवारों को मार्गदर्शन दें, तो आत्मविश्वास, नीति की समझ और रणनीतिक कौशल विकसित हो सकता है। इसके साथ ही, पार्टी के भीतर महिलाओं के खिलाफ उत्पीड़न या असम्मानजनक व्यवहार को रोकने के लिए सख्त आचार संहिता और त्वरित कार्रवाई की व्यवस्था ज़रूरी है।

राजनीतिक दलों के प्रयासों के साथ-साथ मीडिया और नागरिक समाज की भी भूमिका अहम है। मीडिया को महिला नेताओं की नीतिगत भूमिका, वैचारिक दृष्टिकोण और सामाजिक योगदान पर केंद्रित करना चाहिएना कि उनके पहनावे, निजी जीवन या विवादों पर। नागरिक संगठनों को भी प्रशिक्षण, जनजागरण और महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित करने की दिशा में पहल करनी चाहिए।महिलाओं का राजनीति में प्रतिनिधित्व केवल लैंगिक समानता का सवाल नहीं, बल्कि लोकतंत्र की गुणवत्ता का भी मापदंड है। यदि प्रतिनिधित्व का आधार केवल पुरुषों की पहुंच और दबदबे तक सीमित रहेगा तो लोकतंत्र का स्वरूप अधूरा ही रहेगा। महिला आरक्षण केवल एक नीति नहीं, बल्कि नेतृत्व को समावेशी, संवेदनशील और संतुलित बनाने का औजार है।2029 का चुनाव भारत के लिए एक ऐतिहासिक अवसर लेकर आएगा। लेकिन यदि राजनीतिक दल अभी से महिला नेतृत्व को गढ़ने में निवेश नहीं करतेतो यह आरक्षण भी केवल सत्ता में वंशवाद और प्रतीकात्मकता का विस्तार बनकर रह जाएगा।अब वक्त है कि दल ‘औरतों के लिए सीट छोड़ने’ की बात नहीं करें, बल्कि ‘औरतों को नेतृत्व के लिए खड़ा करने’ की पहल करें। लोकतंत्र को मजबूत बनाने का यही असली रास्ता है।

भारतीय महिला मुक्केबाज का ऐतिहासिक स्वर्ण

निज संवाददाता : वर्ल्ड बॉक्सिंग कप में भारतीय मुक्केबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 11 पदक अपने नाम किए हैं। इनमें 3 स्वर्ण, 5 रजत और 3 कांस्य पदक शामिल हैं। तीनों स्वर्ण पदक हरियाणा की महिला बॉक्सरों ने जीते, जिन्होंने प्रतिभा और दृढ़ संकल्प से देश का मान बढ़ाया। कजाकिस्तान के अस्ताना में आयोजित वर्ल्ड बॉक्सिंग कप में भारत को पहला स्वर्ण पदक साक्षी ढांडा ने 54 किग्रा वर्ग में दिलाया। उन्होंने अपने तेज और आक्रामक मुक्कों से अमेरिका की योसलाइन पेरेज़ को सर्वसम्मति से हराया। साक्षी की जीत ने भारतीय खेमे में उत्साह भर दिया। इसके बाद 23 वर्षीय जैस्मीन लंबोरिया ने 57 किग्रा वर्ग में ब्राजील की जुसीलेन सेक्केरा रोमेउ को 4:1 से मात दी। जैस्मीन ने अपनी लंबी पहुंच का फायदा उठाते हुए करीबी मुकाबले में जीत हासिल की और आखिरी राउंड में शानदार काउंटर लगाकर अपनी जीत सुनिश्चित की।

बंगाल एसटीएफ की बड़ी कामयाबी

पाकिस्तानी आईएसआई से जुड़े दो लोगों को किया गिरफ्तार

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल के पूर्व बर्दवान जिले से दो संदिग्ध लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन पर पाकिस्तान की इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) से संबंध होने का संदेह है। राज्य विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने मंगलवार को बताया कि आरोपियों की पहचान कोलकाता के भवानीपुर निवासी राकेश कुमार गुप्ता और पानागढ़ निवासी मुकेश रजक के रूप में हुई है।

अधिकारी ने कहा, इन दोनों के पाकिस्तान की आईएसआई से संबंध हैं। दोनों पड़ोसी देश में कुछ लोगों के संपर्क में थे। एसटीएफ के मुताबिक, दोनों व्यक्ति एक एनजीओ के लिए काम करते थे और मेमारी में किराये के मकान में रह रहे थे।

यहीं से उन्हें गिरफ्तार किया गया। बताया गया कि गुप्त सूचना के आधार पर एसटीएफ कर्मियों ने शनिवार को छापेमारी की और उन्हें गिरफ्तार कर लिया। मुकेश को किराये के मकान से पकड़ा गया, जबकि राकेश को एक नर्सिंग होम से पकड़ा गया, जहां उसे इलाज के लिए भर्ती कराया गया था। अधिकारी ने बताया कि सोमवार को कोलकाता की अदालत में पेश करने के बाद दोनों को सात दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया।

Page-3_Layout 1 7/8/2025 3:41 PM Page 1

लघु उद्योग भारती पश्चिम बंगाल ने आयोजित किया उद्यमी सम्मेलन

निज संवाददाता : लघु उद्योग भारती (एलयूबी) पश्चिम बंगाल ने बीते 28 जून को नेशनल लाइब्रेरी सभागार में पूर्वी क्षेत्र के राज्यों, ओडिशा, झारखंड, बिहार, असम, उत्तर पूर्व राज्यों, सिक्किम और पूरे पश्चिम बंगाल से 800 से अधिक उद्योग जगत के लोगों और लघु उद्योग भारती के सदस्यों की उपस्थिति के साथ उद्यमी सम्मेलन आयोजित किया। कार्यक्रम में केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, एनएसआईसी के सीएमडी शुभ्रांसु शेखर आचार्य, लघु उद्योग भारती के मंत्री प्रकाश चंद्र, लघु उद्योग भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष घनश्याम ओझा, संगठन के पूर्व अध्यक्ष और पूर्व और उत्तर पूर्व क्षेत्र प्रभारी ओम प्रकाश मित्तल, अध्यक्ष एलयूबी पश्चिम बंगाल देवी प्रसाद चौधरी, लघु उद्योग भारती पश्चिम बंगाल के प्रभारी प्रवीण कुमार अग्रवाल एवं संगठन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य सहप्रभारी सरोज कुमार साहू आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम सुबह 10 बजे अभ्यास वर्ग और क्षेत्रीय सम्मेलन के साथ शुरू हुआ जिसमें संगठन के सभी सदस्य शामिल थे और उद्यमी सम्मेलन दोपहर 3 बजे शुरू हुआ। दोनों केंद्रीय मंत्रियों ने आत्मीयता से भाषण दिया। उन्होंने लघु उद्योग भारती की कई मांगों को भी पूरा किया जो प्रवीण कुमार अग्रवाल प्रभारी – पश्चिम बंगाल द्वारा मांगी गई थी। इसमें 800 से अधिक लघु, सूक्ष्म, मध्यम और बड़े उद्योग दिग्गजों ने भाग लिया।मालूम हो कि लघु उद्योग भारती ने उद्योग जगत में अपनी छाप छोड़ी है। इस मौके पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें रेलवे के अलावा कई अन्य सदस्यों ने भी भाग लिया। यह केवल पश्चिम बंगाल का ही विशाल कार्यक्रम नहीं था अपितु लघु उद्योग भारती के ईस्टर्न जोन में ऐसा कार्यक्रम नहीं हुआ।

मुफ्त उपहार और नकदी की घोषणा पर सुप्रीम कोर्ट की चिंता

कहा–ऐसी योजनाओं से लोग काम करने से चुराते हैं जी

मतदाताओं को लुभाने का मामला

निज संवाददाता : चुनाव के समय मतदाताओं को लुभाने के लिए राजनीतिक दलों द्वारा मुफ्त उपहार और नकदी की घोषणाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर चिंता जताई है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि सरकार से इस तरह के मुफ्त में राशन और नकदी मिलने से लोग काम करने के लिए तैयार नहीं हैं। पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस बीआर गवई व आगस्टीन जार्ज मसीह की पीठ ने सरकार व राजनीतिक दलों की मुफ्त योजनाओं पर सवाल उठाते हुए कहा कि क्या इस तरह से राष्ट्रीय विकास के लिए लोगों को मुख्यधारा में शामिल करने के बदले परजीवियों का एक वर्ग तैयार कर रहे हैं?न्यायाधीश गवई ने यह भी कहा कि चुनाव के समय विभिन्न राजनीतिक दल कई तरह की लोक–लुभावन योजनाओं की घोषणा करते हैं। इसके तहत लाडली बहन व अन्य योजनाएं शामिल

हैं। जस्टिस गवई ने कहा कि इस तरह की मुफ्त योजनाओं के कारण लोग काम से जी चुराने लगते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए कि उनको सरकार की तरफ से मुफ्त राशन मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम उनके (लोगों) प्रति आपकी (सरकार) की चिंता की सराहना करते हैं। साथ ही पूछना चाहते हैं कि क्या यह बेहतर नहीं होगा कि लोगों को समाज की मुख्यधारा का हिस्सा बनाकर उनको राष्ट्र विकास में योगदान करने के लिए प्रेरित किया जाए?मालूम हो कि सुप्रीम कोर्ट ने शहरी क्षेत्रों में बेघर लोगों के आश्रय के अधिकार से संबंधित एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान यह अहम टिप्पणी की।

'स्वास्थ्य साथी' उत्तर 24 परगना जिले में बना मील का पत्थर

♦पिछले वित्तीय वर्ष में 2 लाख से अधिक लोगों को मिला लाभ

निज संवाददाता : मुख्यमंत्री का ड्रीम प्रोजेक्ट स्वास्थ्य साथी उत्तर 24 परगना में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। पिछले वित्तीय वर्ष में राज्य सरकार ने इस जिले में दो लाख से अधिक लोगों के इलाज पर 251 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए। ये आंकड़े साफ बताते हैं कि स्वास्थ्य साथी कार्ड के जरिए चिकित्सा सेवा प्राप्त करने से कितने लोगों को लाभ हुआ है। सत्ता में आने के बाद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक के बाद एक परोपकारी परियोजनाएं शुरू कीं।

स्वास्थ्य साथी उस सूची में सबसे ऊपर है। यह कार्ड प्रत्येक परिवार की सबसे बड़ी महिला सदस्य के नाम पर जारी किया जाता है। इस परियोजना ने राज्य के लोगों के चिकित्सा खर्च को कम कर दिया है। चूंकि राज्य सरकार प्रति वर्ष पांच लाख रुपये तक का चिकित्सा खर्च वहन करती है, इसलिए गरीब और असहाय लोग निजी नर्सिंग होम में जाने की हिम्मत कर पाए हैं।

यदि आपके पास स्वास्थ्य साथी कार्ड है, तो आप इस कार्ड के माध्यम से जिले, राज्य और यहां तक कि देश के विभिन्न पंजीकृत अस्पतालों में पूरी तरह से मुफ्त चिकित्सा उपचार, न्यूरोलॉजी, स्त्री रोग सहित जटिल सर्जरी और कई बीमारियों के उपचार सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं। अस्पताल में भर्ती होने के एक दिन पहले से लेकर छुट्टी के 5 दिन बाद तक सभी दवाएं पैकेज में शामिल हैं। अस्पताल से छुट्टी के दौरान मरीज की कार का किराया भी सरकार देती है। इस परियोजना में चिकित्सा क्षेत्र पर होने वाले खर्च ने सबका ध्यान खींचा है, खासकर उत्तर 24 परगना जिले के ग्रामीण इलाकों में। इस जिले में स्वास्थ्य साथी लाभार्थियों की संख्या करीब 15 लाख है।

इनमें से अब तक करीब 251 करोड़ रुपए का लाभ मिल चुका है। करीब 2 लाख 3 हजार मरीजों को चिकित्सा सेवा मिल चुकी है। मार्च के बाद अप्रैल और मई में जिले में कई करोड़ रुपए से ज्यादा इलाज हुआ। उस साल करीब 18 हजार लोगों को कार्ड मिला है। उत्तर 24 परगना के जिलाधिकारी शरद कुमार द्विवेदी ने कहा– 'जिले में कई लोग राज्य सरकार के स्वास्थ्य साथी कार्ड पर इलाज करा रहे हैं। हम हर चीज पर नजर रखते हैं। इसके लिए हमारे जिले में एक विशेष टीम भी है।'

कॉलेज में दाखिल होते ही शुरू हो गई थी 'एम' की दादागिरी

कस्बा लॉ कॉलेज दुष्कर्म मामला

♦ सहपाठी की नज़र में एम ही कस्बा बलात्कार कांड का मुख्य आरोपी

निज संवाददाता : एम कस्बा कॉलेज बलात्कार कांड का मुख्य आरोपी है। सत्ताधारी पार्टी के इस प्रभावशाली छात्र नेता पर पहले भी कई आरोप लग चुके हैं। वे सभी पहले ही प्रकाश में आ चुके हैं। इस बार, उसके एक समय के मित्र, साउथ कलकत्ता लॉ कॉलेज के एक और पूर्व छात्र, तीतास मन्ना ने एम की और भी करतूतें उजागर की हैं।तीतास 2012 से 2019 तक साउथ कोलकाता के इस कॉलेज में लॉ का छात्र था। 2012 में, वह और एम एक साथ कॉलेज में दाखिल हुए थे। तीतास ने कहा कि कॉलेज में दाखिल होने के एक साल के भीतर ही उसकी दादागिरी शुरू हो गई थी। तीतास का कहना है कि 2013 में एम के खिलाफ चेतला ब्रिज पर कैटरिंग कर्मचारियों की उंगलियां काटने और उनकी पिटाई करने के आरोप में पुलिस स्टेशन में लिखित शिकायत दर्ज कराई गई थी। उस घटना के बाद एम करीब दो–तीन साल तक चुप रहा। 2016 में वह वापस कोलकाता आया। उसने साउथ कलकत्ता लॉ कॉलेज में फिर से दाखिला लेने की कोशिश की। उस समय तीतास और अन्य लोगों ने उसे कॉलेज में घुसने से भी रोका। लेकिन आरोप है कि 1 दिसंबर 2016 को एम बाहरी गिरोह के साथ आया और कॉलेज में तोड़फोड़ की। पुलिस कई महीनों तक इसकी जांच करती रही। गरियाहाट थाने ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की, लेकिन आरोप है कि उसे गिरफ्तार नहीं किया गया। आखिरकार तमाम कोशिशों के बाद 2017 में एम को फिर से उसी कॉलेज के प्रथम वर्ष में दाखिला मिल गया। तीतास के मुताबिक चूंकि एम पहले भी एक बार विश्वविद्यालय में दाखिला ले चुका था, इसलिए उसे कलकत्ता विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति से विशेष अनुमति लेकर दोबारा कॉलेज में दाखिला लेने के लिए ज्यादा भागदौड़ नहीं करनी पड़ी। उसके बाद एम की हिंसा शुरू हो गई! सहपाठी का दावा है कि 2017 से 2018 तक उसने बलात्कार, रैगिंग, रंगदारी और गुंडागर्दी से लेकर कई तरह की वारदातें की हैं। कभी यह सामने आया तो कभी इस पर पर्दा डाल दिया गया। 2018 से 2019 तक उसे फिर एक साल के लिए कॉलेज से निकाल दिया गया। इसके बावजूद एम का नाम कॉलेज के बाहर की कई घटनाओं से जुड़ता रहा है। जिसमें लड़कियों से छेड़छाड़ की घटनाएं भी शामिल हैं। 2019 और 2022 में इस एम के नाम पर छेड़छाड़ के मामले भी दर्ज हुए। लेकिन कुछ भी एम को न्याय के कठघरे में नहीं ला सका। बल्कि वह पहुंच से बाहर हो गया!2023 से कॉलेज में एम की ताकत फिर से बढ़ गई। उसने खुद को संगठन का इकाई अध्यक्ष बताकर कॉलेज में बॉस की तरह काम करना शुरू कर दिया। तीतास का कहना है कि वह हमेशा गुंडों के गिरोह के साथ घूमता था। उसके खिलाफ कम से कम 10–12 मामले दर्ज हैं। पार्टी ने उसे इस कॉलेज में कभी कोई पद नहीं दिया। बाद में उसने अशोक देव को पकड़ पर उसे वह नौकरी हासिल मिली। पीड़िता खुद टीएमसीपी की सदस्य थी। कथित तौर पर, बुधवार, 25 जून को शाम 7:30 बजे से 10:50 बजे के बीच कॉलेज परिसर में एम ने उसके साथ बलात्कार किया।

पीड़िता ने कहा कि पहले उसके साथ यूनियन रूम में मारपीट की गई। बाद में एम उसे गार्ड के कमरे में ले गया और उसके साथ बलात्कार किया। अन्य दो, जे और पी बाहर पहरा दे रहे थे। कॉलेज का मुख्य द्वार बंद था। छात्रा को बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। उसने मदद लेने की कोशिश की गार्ड से भी गुहार लगाई, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसके बाद पीड़िता ने पुलिस से संपर्क किया। छात्रा ने बताया कि आरोपी, सत्ताधारी पार्टी की छात्र परिषद का नेता होने के कारण कॉलेज में रसूख रखता है। इसलिए गार्ड भी लाचार है। कथित तौर पर, अगर उसने पुलिस को बलात्कार की सूचना दी, तो उसके प्रेमी को जान से मारने और उसके माता–पिता को गिरफ्तार करने की धमकी दी गई।

गंभीर समाचार
Classifieds/ Display/ Notice/ Others
Get Your Advertisement Noticed
Book Your Space
☎9874882045 ☎9831113679
☎09830045693 ☎09830011017
E-mail-gambheersamachar@gmail.com

Page-4_Layout 1 7/8/2025 3:41 PM Page 1

‘एमएसएमई क्षेत्र के महिला नेतृत्व में बंगाल अव्वल’

♦राज्य में 93 लाख से अधिक लोग कार्यरत

निज संवाददाता : सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) में महिला नेतृत्व में पश्चिम बंगाल पहले स्थान पर है। राज्य में इस क्षेत्र में 93 लाख से अधिक लोग कार्यरत हैं। यह बात एमएसएमई एवं कपड़ा विभाग के प्रधान सचिव राजेश पांडे ने अंतरराष्ट्रीय एमएसएमई दिवस के अवसर पर कोलकाता में फिक्की (नवाचार, ज्ञान एवं अनुसंधान पर फोकस) के एक समारोह में कही। उन्होंने राज्य में एमएसएमई के मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा-‘राज्य सरकार क्लस्टर आधारित विकास, एसआईपी परियोजनाओं और कारीगरों के सशक्तीकरण के माध्यम से एमएसएमई के विकास पर जोर दे रही है। पिछले एक दशक में राज्य में एमएसएमई क्षेत्र को ऋण वितरण 22 फीसदी की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा है। इस वर्ष ऋण वितरण 2 लाख करोड़ रुपये को पार करने की संभावना है।’

पिछले दिनों फिक्की की पश्चिम बंगाल राज्य परिषद द्वारा फिक्की सेंटर फॉर सस्टेनेबिलिटी लीडरशिप के सहयोग से ‘मजबूत भविष्य के लिए एमएसएमई को सशक्त बनाना’ शीर्षक से एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस मौके पर जर्मनी के संघीय गणराज्य (कोलकाता) की महावाणिज्य दूत बारबरा वॉस ने महिलाओं के नेतृत्व वाले एमएसएमई के बारे में बात की। उन्होंने भविष्य के लिए गतिशील एमएसएमई बनाने के लिए भारत और जर्मनी के बीच सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान का भी आह्वान किया।इस मौके पर फिक्की एमएसएमई समिति, पश्चिम बंगाल के अध्यक्ष आर. के. छाजर और फिक्की-सीएमएसएमई के अध्यक्ष गिरीश लूथरा ने एमएसएमई पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने पर अपने विचार साझा किए।

श्री जैन विद्यालय हावड़ा में ताइक्वांडो का शानदार प्रदर्शन

निज संवाददाता : अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपिक दिवस के अवसर पर बंगाल ताइक्कांडो एसोसिएशन के तत्वाधान में हावड़ा श्री जैन विद्यालय में ताइक्कांडो का शानदार प्रदर्शन किया गया। मालूम हो कि अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक में ताइक्कांडो भी एक महत्वपूर्ण खेल के रूप में आता है। अतः इस अवसर पर श्री जैन विद्यालय हावड़ा के ताइक्कांडो के छात्रों ने मार्च पास्ट के साथ कार्यक्रम को शुरू किया। उसके बाद विभिन्न प्रकार के करतब का शानदार प्रदर्शन कर छात्रों ने सबका मन मोह लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के ताइक्कांडो शिक्षक विनोद कुमार सिंह की भूमिका अहम रही। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे सुप्रसिद्ध समाजसेविका एवं शिक्षा प्रेमी शशि कांकरिया, बंगाल ताइक्कांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सिंह, बंगाल ताइक्कांडो एसोसिएशन की सेक्रेटरी शशि भार्गव, जैन विद्यालय हावड़ा बालिका विभाग के प्रधानाध्यापिका मौसमी घोषाल, जैन विद्यालय बॉयज की प्रिन्सिपल इंदू जोसफ चौधरी, सोमेन चक्रवर्ती आदि। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के शिक्षक प्रतिनिधि संतोष कुमार तिवारी ने किया।

छठे वेतन आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा

केंद्रीय दर पर डीए अनिवार्य नहीं

निज संवाददाता : महंगाई भत्ता (डीए) पर अर्थशास्त्री अभिरूप सरकार की अध्यक्षता वाले आयोग ने छठे वेतन आयोग की रिपोर्ट सौंप दी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि राज्य सरकार अपने फंड के हिसाब से डीए दे सकती है। केंद्र सरकार के वेतन आयोग के हिसाब से डीए देने की जरूरत नहीं है। मालूम हो कि राज्य में बकाया डीए को लेकर नाराजगी लंबे समय से चल रही है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य को बकाया डीए देने का आदेश दिया है। हालांकि छठे वेतन आयोग की रिपोर्ट का राज्य में बकाया डीए से कोई लेना-देना नहीं है। 2009 से 2019 तक का जो महंगाई भत्ता बकाया है, वह पांचवें वेतन आयोग के तहत है। यह रिपोर्ट छठे वेतन आयोग की है। छठे वेतन आयोग की रिपोर्ट 2015 में ही प्रकाशित हुई थी। उस समय कहा गया था कि केंद्र सरकार के वेतन आयोग के हिसाब से डीए देने की जरूरत नहीं है। लेकिन तब इस रिपोर्ट को कलकत्ता हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी। हाईकोर्ट के आदेश में कहा गया था कि छठे वेतन आयोग की रिपोर्ट सार्वजनिक कर दी जाए। उसी आदेश के अनुसार इस बार छठे वेतन आयोग की रिपोर्ट सार्वजनिक की गई है। इसमें बताया गया है कि सरकारी कर्मचारियों को उनके ग्रेड के हिसाब से कितना पैसा मिलेगा। साथ ही यह भी साफ तौर पर कहा गया है कि केंद्रीय दर पर डीए देना अनिवार्य नहीं है। राज्य अपने हिसाब से डीए दे सकते हैं। यानी अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के हिसाब से डीए देने की जरूरत नहीं है। इस संबंध में राज्य सरकारों के परिसंघ के प्रतिनिधि मलाई मुखर्जी ने कहा- ‘आयोग ने सिफारिश की है कि राज्य सरकार को समय-समय पर कर्मचारियों को डीए देना चाहिए, यानी जब उसके वित्तीय संसाधन उपलब्ध हों। केंद्रीय दर पर डीए देने की कोई जरूरत नहीं है। राज्य सरकार को अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक का पालन करने की जरूरत नहीं है। यह बात अभिरूप सरकार ने कही। वे सांख्यिकी में काम करते थे। उन्हें खुद केंद्रीय दर पर डीए मिलता था, अब उन्हें उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के हिसाब से महंगाई राहत मिल रही है। वे तीन साल से आयोग के अध्यक्ष पद पर बैठे हैं और उन्होंने एक-एक पैसा लेकर राज्य सरकार को बचाने के लिए यह बात कही है। हमारा संगठन उनकी निंदा करता है। वे एक अर्थशास्त्री होकर ऐसा कैसे कह सकते हैं? वेतन आयोग की अब तक की रिपोर्ट आ चुकी है, और उसमें कहा गया है कि राज्य और केंद्र सरकारें अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की दर से डीए देती हैं।’

न्यूटाउन के बंगाल सिलिकन वैली में टीसीएस खोलेगी नया दफ्तर

- पांच हजार लोगों के रोजगार की संभावना
- यह परियोजना 20 एकड़ जमीन पर की जाएगी विकसित

निज संवाददाता : राज्य के सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र में पश्चिम बंगाल एक और बड़ी उपलब्धि की ओर अग्रसर है। न्यूटाउन स्थित बंगाल सिलिकन वैली में देश की प्रमुख आईटी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) ने अपना नया कार्यालय बनाने की योजना आगे बढ़ाई है। न्यूटाउन कोलकाता डेवलपमेंट अथॉरिटी (एनकेडीए) ने पहले चरण के निर्माण कार्य के लिए पहले ही मंज़ूरी दे दी है। यह परियोजना 20 एकड़ ज़मीन पर विकसित की जाएगी और इसमें दो चरणों में निर्माण कार्य होगा।

पहले चरण में 11 मंज़िलों वाला एक विश्वस्तरीय ऑफिस टॉवर बनाया जाएगा, जिसकी संरचना 9 लाख वर्गफुट में फैली होगी। इससे 5,000 लोगों को प्रत्यक्ष रोज़गार मिलने की संभावना है। दूसरे चरण में 15 लाख वर्गफुट अतिरिक्त निर्माण की योजना है, जिससे और 20,000 लोगों के लिए रोज़गार के अवसर उत्पन्न होंगे। दोनों चरणों के पूरा होने पर टीसीएस कैंपस में कुल 24 लाख वर्गफुट का बुनियादी ढांचा तैयार होगा और इसमें 25,000 लोगों को स्थायी नौकरी मिल सकेगी। ऐसा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बताया। उन्होंने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा- ‘जो लोग लगातार बंगाल का अपमान करते हैं और हमारी प्रगति को नजरअंदाज़ करते हैं, उनके सामने हमने कार्यकुशलता का एक उदाहरण पेश किया है।’

मालूम हो कि पिछले कुछ वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी और आईटी आधारित सेवाओं के क्षेत्र में राज्य की प्रगति उल्लेखनीय रही है। सूत्रों के अनुसार, न्यूटाउन में अब तक 30 से अधिक आईटी और डाटा सेंटर परियोजनाएं शुरू हो चुकी हैं और 6.5 लाख वर्गमीटर से अधिक भूमि आवंटित की जा चुकी है।‘बंगाल सिलिकन वैली टेक हब’ परियोजना राज्य सरकार ने 2018 में शुरू की थी। इस पहल का उद्देश्य कोलकाता के पास एक संपूर्ण डिजिटल औद्योगिक नगर बनाना था, जिससे राज्य में आईटी क्षेत्र में निवेश बढ़े और स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर मिलें।विशेषज्ञों का मानना है कि यदि टीसीएस की यह मेगा परियोजना सफल होती है, तो राज्य में अन्य बहुराष्ट्रीय आईटी कंपनियां भी निवेश के लिए आकर्षित होंगी। इससे एक ओर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, वहीं दूसरी ओर कौशल आधारित श्रमबाज़ार और अत्याधुनिक तकनीकी ढांचा भी तैयार होगा। इस परिप्रेक्ष्य में, टीसीएस का नया दफ्तर केवल एक कॉर्पोरेट परियोजना नहीं, बल्कि राज्य के भविष्य के सूचना प्रौद्योगिकी अवसंरचना का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकता है।

बारासात में विवाहेतर संबंधों की बढ़ाती घटनाएं चिंताजनक

5 महीने में घर से भागीं 500 गृहणियां

निज संवाददाता : उत्तर 24 परगना जिले के बारासात में पिछले पांच महीनों में करीब 500 गृहणियाँ लापता हो गई हैं। प्रशासन की ओर से यह जानकारी सामने आते ही पूरे जिले में सनसनी फैल गई। जो कभी समाज की नज़र में आदर्श गृहणियाँ थीं, घर को बखूबी संभालती थीं, बच्चों की परवरिश करती थीं और हर दिन की तरह रसोई का काम करती थीं, आज वे अचानक प्यार के मोह में खो रही हैं। वे विवाहेतर संबंधों के कारण अपना घर छोड़ रही हैं, अपने पति और बच्चों को पीछे छोड़ रही हैं और एक नए सपनों के राजकुमार का हाथ थामे अनिश्चित भविष्य की ओर बढ़ रही हैं।

मोबाइल-सोशल मीडिया से जन्म ले रहा है वर्चुअल लव

विशेषज्ञों के अनुसार, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया पर मौजूदा अति-निर्भरता एक ओर साइबर अपराध को बढ़ा रही है, तो दूसरी ओर यह व्यक्तिगत संबंधों को ख़तरनाक रूप से प्रगाढ़ बना रही है। व्यस्त कामकाजी जिंदगी, शारीरिक और मानसिक दूरी और उस दूरी को पाटने के लिए सोशल मीडिया के जरिए बनने वाली वर्चुअल दोस्ती- ये सब एक अजीबोगरीब प्रेम जाल बना रहे हैं। कोई काम के लिए दूसरे राज्यों में है, कोई विदेश में है तो कोई सुबह से लेकर रात तक ऑफिस में ही फंसी रहती है- ऐसे में कई पत्नियां विदेशी नामक भावनात्मक छाया के जाल में अकेलेपन का शिकार हो रही हैं।

पुलिस की जानकारी चिंताजनक

बारासात पुलिस जिले के एक सूत्र के मुताबिक, जनवरी से मई 2025 तक इस जिले में कुल 536 युवतियां लापता हुईं। हैरानी की बात यह है कि इनमें से करीब 500 विवाहित गृहणियां हैं। इनमें से कुछ अपने पति के परिचित व्यवसायी के साथ घर छोड़कर चली गईं, तो कुछ किसी ठेकेदार या किसी स्थापित युवक के साथ। कई अपने छोटे-छोटे बच्चों को पीछे छोड़ गई हैं। कुछ गृहिणियों की शादी को ढाई साल से ज्यादा हो चुके हैं- फिर भी परिवार का आकर्षण उन्हें रोक नहीं सका।

पति सदमे में, पुलिस बेबस

कई पतियों ने अपनी पत्नियों के लापता होने के बाद थाने में शिकायत दर्ज कराई है। लेकिन यहीं पर समस्या है। लापता लोगों में से अधिकांश वयस्क हैं, इसलिए पुलिस उन्हें मजबूर नहीं कर पाती। कई मामलों में तो अपनी पत्नियों को ढूंढ़ने के बाद भी वे यह स्पष्ट कर रहे हैं। मैं वयस्क हूं, मैं अपने जीवन के बारे में खुद ही निर्णय लूंगा। इससे न केवल कानूनी जटिलताएं बढ़ती हैं, बल्कि पुलिस के हाथ भी प्रभावी रूप से बंध जाते हैं।

कई लौटीं, लेकिन कुछ लौटना नहीं चाहतीं

पुलिस का दावा है कि इन पांच महीनों में लापता हुईं 500 गृहणियों और 36 अविवाहित युवतियों में से कुल 200 लौट चुकी हैं। लेकिन जो मिल भी गई हैं, उनमें से भी कई खुद नहीं लौटी हैं। उन्हें उनके परिवारों और पुलिस के संयुक्त प्रयास से वापस लाया गया। कई ने लौटने से भी इनकार कर दिया है। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि हम लापता लोगों की सक्रियता से तलाश कर रहे हैं। हालांकि, वयस्क गृहिणियों के मामले में हमारे पास कुछ कानूनी सीमाएं हैं।

लापता नाबालिगों की संख्या भी चिंताजनक

गृहिणियों के साथ-साथ बारासात पुलिस जिले में लापता नाबालिगों की संख्या भी काफी चिंताजनक है। पुलिस के आंकड़ों के अनुसार, पिछले पांच महीनों में 33 नाबालिग और 199 नाबालिग लापता हुए हैं। इनमें से पुलिस 25 नाबालिग और करीब 170 नाबालिगों को बचा पाई है। हालांकि यहां अभी भी कई लापता हैं।

परिवार की शर्म, सामाजिक दबाव

दूसरी ओर, कई मामलों में पति अपनी पहचान गुप्त रखना चाहते हैं। वे पुलिस से अपने मामले को सार्वजनिक न करने की गुहार लगा रहे हैं। समाज में विदेशी मामलों को लेकर मचे शोर के कारण परिवारों का मानसिक तनाव दोगुना हो गया है।

समाधान ?

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, इस समस्या की जड़ें समाज में बहुत गहरी हैं। अगर हम इन चार पहलुओं -आपसी सम्मान, भावनात्मक समझ, रिश्तों में पारदर्शिता और परिवार के साथ समय बिताने को महत्व नहीं देंगे तो ऐसे परिणाम सामने आते रहेंगे। उनका यह भी मानना है कि सोशल मीडिया निगरानी और रिश्तों के बारे में जागरुकता बढ़ाना जरूरी है। बारासात में जो हो रहा है, वह सिर्फ एक जिले की समस्या नहीं है। बल्कि, यह एक गहरी सामाजिक बीमारी का प्रतिबिंब है जिसे अभी भी समय रहते पहचाने जाने की जरूरत है।

Page-5_Layout 1 7/8/2025 3:41 PM Page 1

बेलियाघाटा आईडी अस्पताल में शीतल प्याऊ का उद्घाटन

निज संवाददाता : कोलकाता की सुपरिचित सेवा संस्था श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति द्वारा कोलकाता के बेलियाघाटा स्थित आईडी हॉस्पिटल में इमरजेंसी आउट डोर के पास स्वचलित शीतल जल प्याऊ का उद्घाटन कलकत्ता पार्क स्ट्रीट राउट टेबल 34 एवं कलकत्ता पार्क स्ट्रीट लेडीज़ सर्कल 46 के नेहा अग्रवाल, अमित निर्मल, प्रेरणा चुड़ीवाल एवं अन्य अधिकारी एवं दानदाता के करकमलों एवं समिति के प्रधान सचिव बिमल दीवान, उप-सचिव पवन बंसल एवं सुभाष सवालदवाला की उपस्थिति में किया गया। समाजसेवी एवं समिति के मार्गदर्शक राजकुमार बोथरा की देखरेख में किया गया। सीपीआरटी 34 एवं सीपीएलसी 46, एमएस साहुवाला ट्रस्ट के आर्थिक सहयोग से निर्माण करवाया गया। मशीन द्वारा संचालित शीतल जल प्याऊ से अस्पताल में रोगियों एवं उनके परिजन शीतल जल का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के अध्यक्ष विवेक गुप्ता के प्रयास से अपने चिर-परिचित दानदाताओं के आर्थिक सहयोग से कोलकाता महानगर एवं इसके उपनगरीय क्षेत्रों में और भी कई जगहों पर मशीन द्वारा संचालित शीतल जल प्याऊ चल रहे हैं एवं साथ ही नए प्याऊ का निर्माण कार्य चल रहा है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के कार्यकर्त्ता सुभाष चंद्र गोयनका, महेश काबरा, उमाशंकर जोशी, दिनेश खेमका, दुलार खेमका आदि की उपस्थिति से यह कार्य सफलतापूर्ण सफल हो पाया।

कुम्हारटोली के वर्कशॉप में बढ़ी व्यस्तता

◆मिंटू पाल की 26 मूर्तियां जाएंगी विदेश

निज संवाददाता : दुर्गापूजा शुरू होने में अब कुछ ही दिन बाकी हैं। इस बीच, उत्तर कोलकाता के प्रसिद्ध कुम्हारटोली के वर्कशॉप में मूर्तिकारों की व्यस्तता बढ़ गई है। इन्हीं में से प्रमुख हैं मशहूर मूर्तिकार मिंटू पाल। बड़ी बात यह कि बिहार के बोधगया में उनकी बनाई 100 फीट की लेटी हुई बुद्ध की मूर्ति को देखने के लिए देशभर से लोग उमड़ पड़ते हैं। देश की सबसे बड़ी बुद्ध प्रतिमा बनाने वाले मूर्तिकार मिंटू पाल ने नई मिसाल कायम की है। कुम्हारटोली में उनकी बनाई 18 दुर्गा मूर्तियां अब विदेश में पूजी जाएंगी। इनमें से कुछ ऑस्ट्रेलिया-पोलैंड में, कुछ अमेरिका-कनाडा में जाएंगी। वहीं, कुछ मध्यपूर्व के दुबई में भेजी जाएंगी। इसके अलावा एशिया तो है ही। कुम्हारटोली का मानना है कि एक ही कलाकार द्वारा एक साल में बनाई गई इतनी दुर्गा मूर्तियों का विदेश जाना अभूतपूर्व है। हालांकि यह पहली बार नहीं है जब मिंटू की मूर्तियों की मांग विदेशों में बढ़ रही है।पिछली बार मिंटू की 14 मूर्तियां देश की सीमा पार कर गई थीं। चारों में काली प्रतिमा और लक्ष्मी-सरस्वती को शामिल कर लें तो संख्या 22 हुई। मिंटू पाल ने बताया कि इस बार दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती समेत कुल 26 मूर्तियां विदेश जा रही हैं। अब तक 14 मूर्तियां विमान में चढ़ चुकी हैं। दुर्गा की चार और मूर्तियां भेजे जाने का इंतजार कर रही हैं। मिंटू ने बताया कि मूर्तियां पोलैंड, थाईलैंड, सिंगापुर और स्पेन भी जाएंगी। अभी व्यस्तता का आलम यह है कि मिंटू खाना भूलकर पांच वर्कशॉप में काम कर रहे हैं। मिंटू की टीम में 18 कारीगर हैं। इनसे होने वाले लाभ की उम्मीद भी कम नहीं है। विदेश जाने वाली प्रत्येक फाइबरग्लास मूर्ति की कीमत डेढ़ लाख से तीन लाख के बीच है। मिंटू ने कहा-दरअसल मूर्तियों को ले जाने का खर्च इतना ज्यादा है कि कीमत पहुंच में रखनी पड़ती है। इस साल मिंटू की मूर्तियां कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, इटली, स्वीडन, स्पेन, फ्रांस, थाईलैंड, सिंगापुर और दुबई जा रही हैं। दुर्गा की प्रतिमाएं पहले ही कुमारतुली से अमेरिका के टेक्सास, फ्लोरिडा और न्यूजर्सी जा चुकी हैं। लेकिन इस बार मिंटू पाल काली की मूर्ति को लेकर ज्यादा उत्साहित हैं। यह पहली बार है जब मिंटू को फाटा केष्टो पूजा के लिए मूर्ति बनाने का काम सौंपा गया है। रथ दिवस के मौके पर रस्मों के अनुसार काली मूर्ति की पूजा भी की गई। इस अवसर पर तृणमूल कांग्रेस के पूर्व सांसद कुणाल घोष कुम्हारटोली की कार्यशाला में पहुंचे। मिंटू पाल ने उन्हें सब कुछ दिखाया। उन्होंने एक एल्बम में अपनी कृतियों की तस्वीरें दिखाईं। कुणाल घोष हर चीज से प्रभावित हुए। उन्होंने कहा-''सभी कृतियां अद्भुत हैं। मेरी आंखें खुशी से भर आईं।'' मिंटू ने कहा-'मैं लंबे समय से फाटा केष्टो पूजा की मूर्ति बनाने का सपना देख रहा था। आखिरकार, मेरा सपना सच हो गया।' पहले कालीपद पाल यह मूर्ति बनाते थे। बाद में यह जिम्मेदारी उनके बेटे माधव पाल को मिली। इस साल मिंटू पाल को आर्डर मिला है। सवाल है कि मिंटू की मूर्ति की खासियत क्या है? 59 वर्षीय कलाकार ने कहा-''मैं नहीं कह सकता। वैसे, मेरे 18 सहायक होने के बावजूद मैं अपने हाथों से देवी दुर्गा की मूर्ति और आंखें बनाता हूं। इसलिए एक अलग शैली का निर्माण हुआ है।'' सिर्फ शैली ही नहीं, बल्कि मिंटू की कृतियों की एक अलग मांग भी पैदा हुई है। संतोष मित्रा स्कायर से लेकर विवेकानंद पार्क, कुम्हारटोली पार्क से लेकर साल्टलेक एफडी ब्लॉक तक शहर की कई प्रसिद्ध पूजाओं की प्रतिमाएं बनाने की जिम्मेदारी अब टीम मिंटू के जिम्मे है। 511 रवींद्र सरणी स्थित उनके वर्कशॉप में दिन-रात प्रतिमा बनाने का काम चल रहा है। सृजन का आनंद अभिभूत करने वाला है। अब सिर्फ तीन महीने बचे हैं।

2 साल में 118 एमबीबीएस छात्रों ने की आत्महत्या

मानसिक बीमारी के इलाज के लिए डॉक्टर लगाएंगे मनोरोग शिविर

निज संवाददाता : वे सबके शरीर और मन पर नज़र रखते हैं। उन पर कौन नज़र रखता है? डॉक्टर डॉक्टरों के मन के दोस्त बनना चाहते हैं। मेडिकल डे पर पश्चिम बंगाल डॉक्टर्स फोरम ने फॉर द हीलर माइंड की घोषणा की। पांच अन्य पेशों की तरह, मेडिकल पेशे में भी काम का बोझ बहुत ज़्यादा है। डॉक्टर बढ़ती चिंता से पीड़ित हैं और इस वजह से आत्महत्या के मामले अक्सर सुनने को मिलते हैं। आर्काइव्स ऑफ़ मेडिसिन एंड हेल्थ एंड साइंस के रिकॉर्ड बताते हैं कि 2020 से 2022 तक सिर्फ़ दो साल में देश में 118 एमबीबीएस छात्रों ने आत्महत्या की है। उनमें से पचास प्रतिशत की उम्र 30 साल भी नहीं थी। 118 में से 12 प्रतिशत छात्र मानसिक बीमारी से पीड़ित थे। उन्होंने दवा भी ली। सिर्फ़ छात्र ही नहीं, पास हो चुके सीनियर डॉक्टरों में भी मानसिक बीमारी बढ़ रही है। 2010 से 2019 तक 9 सालों में देश में 358 डॉक्टरों ने आत्महत्या की है। पिछले साल दिसंबर में मुर्शिदाबाद में 32 वर्षीय डॉक्टर पॉलोमी बिजॉयपुरी ने आत्महत्या कर ली थी। हाल ही में प्रख्यात डॉक्टर प्रलय बसु ने बेहाला स्थित अपने घर में आत्महत्या कर ली थी। इसलिए डॉक्टरों की मानसिक समस्याओं के समाधान के लिए पश्चिम बंगाल डॉक्टर्स फोरम आगे आया है। डॉक्टर्स डे पर फॉर द हीलर माइंड की घोषणा की गई। पश्चिम बंगाल डॉक्टर्स फोरम ने जानकारी दी है कि डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों की मानसिक समस्याओं के समाधान के लिए एक शिविर लगाएगा। इस शिविर में मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक, मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ बैठेंगे। इस अभिनव पहल का नारा है, क्योंकि जो ठीक करते हैं उन्हें भी उपचार की आवश्यकता होती है।

अफ्रीकी मच्छर अब कोलकाता में!

निज संवाददाता : दक्षिण अफ्रीका और मध्य पूर्व में इस मच्छर का प्रकोप व्यापक रूप से देखा जाता है। लेकिन कोलकाता को इससे क्या! पहली नजर में थोड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन प्रयोगशाला में सावधानीपूर्वक जांच के बाद नगर निगम के कीट विज्ञानियों ने महसूस किया कि यह कोई गलती नहीं थी। यह वास्तव में दुर्लभ प्रजाति एडीज विक्टेटस मच्छर का लार्वा था। यह नगर निगम के वार्ड नंबर 14 में एक हाउसप्लांट टब में लार्वा अवस्था में पाया गया था। इस मच्छर की पहचान करीब दस दिन पहले हुई थी। बिना देरी किए टेस्ट ट्यूब में मौजूद मच्छर के लार्वा को नगर निगम के वेक्टर कंट्रोल डिपार्टमेंट की प्रयोगशाला में मच्छर कक्ष में रखा गया। वहां लार्वा प्यूपा में विकसित होते हैं और एक निश्चित समय के बाद पूर्ण विकसित मच्छर पाए जाते हैं। कीट विज्ञानियों ने पुष्टि की है कि मध्य पूर्वी और अफ्रीकी देशों के लिए खतरा बने एडीज एजिप्टी प्रजाति के मच्छर को वार्ड नंबर 14 के नियोगी रोड पर पाया गया है। नगर निगम के मुख्य कीट विज्ञानी डॉ. देवाशीष विश्वास ने कहा कि एडीज एजिप्टी की तरह ही डेंगू का वाहक यह मच्छर भी उतना ही घातक है। लेकिन सिर्फ डेंगू ही नहीं। मच्छर में मौजूद वायरस अगर इंसान के खून में प्रवेश कर जाए तो जीका, चिकनगुनिया और यहां तक कि पीत ज्वर का कारण बन सकता है। हालांकि, पश्चिम बंगाल में अब तक जीका और पीत ज्वर नहीं पाया गया है। इसलिए खुद को सुरक्षित रखें।

इसी मकान में हुआ था देश का पहला विधवा पुनर्विवाह

निज संवाददाता : महानगर कोलकाता के 48ए कैलाश बोस स्ट्रीट पते वाले घर के लिए हेरिटेज टैग की मांग की गई है। इसके लिए कोलकाता नगर निगम में आवेदन हो चुका है। इस पर कार्रवाई शुरू हो गई है। अचानक इस घर के हेरिटेज टैग की मांग पर यह मकान चर्चा में आ गया है। दरअसल यह वही घर है, जहां देश का पहला विधवा पुनर्विवाह हुआ था।कोलकाता नगर निगम (केएमसी) इस घर को बचाने के लिए काम कर रहा है। वे चाहते हैं कि लोग इस घर को याद रखें। यह घर ईश्वर चंद्र विद्यासागर के सामाजिक सुधार आंदोलन की निशानी है। यह आंदोलन 160 साल पहले इसी घर में हुआ था।गौरतलब है कि विद्यासागर के प्रयासों से ब्रिटिश सरकार ने 16 जुलाई 1856 को हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया था। यह घर राजकृष्ण बनर्जी का था। राजकृष्ण, विद्यासागर के अच्छे दोस्त थे। विद्यासागर अक्सर उनके घर दोपहर का भोजन करने जाते थे। 7 दिसंबर 1856 को इस दो मंजिला घर में एक युवा विधवा का पुनर्विवाह हुआ। इस तरह यह घर कानूनी रूप से विधवा पुनर्विवाह का पहला गवाह बना। विद्यासागर ने खुद इस समारोह का आयोजन किया था। भारत की जिस पहले विधवा का पुनर्विवाह हुआ था, उस दुल्हन का नाम कालीमती देवी था। वह ब्रह्मानंद मुखर्जी और लछमनी देवी की बेटी थीं। वह पूर्व बर्दवान के पलाशडांगा गांव से थीं। दूल्हे का नाम श्रीशचंद्र विद्यारत्न था। वे संस्कृत कॉलेज में सहायक प्रोफेसर थे। उनके पिता का नाम पंडित रामधन तर्कबागीश था। कालीमती की पहली शादी चार साल की उम्र में हुई थी। छह साल की उम्र में वह विधवा हो गई थीं। मेयर-इन-काउंसिल (एमएमआईसी) के सदस्य स्वपन समद्दार ने कहा कि हमने लगभग एक महीने पहले

जल्द ही मिलेगा हैरिटेज का दर्जा

हेरिटेज कंजर्वेशन कमेटी से घर को हेरिटेज टैग देने की अपील की है। अगर ऐसा होता है तो यह बहुत खुशी और गर्व की बात होगी। यह घर ऐतिहासिक महत्व और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है। दुख की बात है कि यह इतने सालों से अनदेखा रहा। आज यह पुराना घर ज्यादातर खाली और शांत रहता है। इसके चारों ओर जंगली पौधे उग रहे हैं और भूतल पर धातु के शटर लगे हुए हैं। लकड़ी की खिड़कियों और टिन की छत वाला यह बंगाली शैली का भवन जर्जर दिखता है। इसकी पीली दीवारों से पेंट निकल गया है। लोहे की रेलिंग जंग खा रही हैं।इस मकान में कोई नहीं रहता। सिर्फ एक नौकरानी, एक पुजारी और एक सुरक्षा गार्ड इसकी देखभाल करते हैं। घर के मालिक कोलकाता से बाहर रहते हैं और साल में एक या दो बार आते हैं। घर को तीन अलग-अलग हिस्सों में बांटा गया है। 1983 से, पीछे का हिस्सा सर्व भारतीय संगीत-ओ-संस्कृति परिषद के स्वामित्व में है। इसका प्रवेश द्वार जादवनाथ सेन लेन पर है। सामने दो भाग हैं, दाहिना भाग (48ए) राज कृष्ण बनर्जी के वंशजों के स्वामित्व में है, जबकि बायां भाग (48बी) पिछले एक दशक में नए मालिकों के पास चला गया है।

MOHTA Publishing House
Mohta Publishing House
28/5, Convent Road, Moulali,
Kolkata-700014
Phone : 98300-45693
E-Mail : gambheersamachar@gmail.com

Page-6_Layout 1 7/8/2025 3:40 PM Page 1

संपादकीय

अंतरराष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में दलाई लामा

आजकल दलाई लामा अंतरराष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में हैं। पिछले सप्ताह दलाई लामा ने घोषणा की कि उनके उत्तराधिकारी का चयन उनकी मृत्यु के बाद किया जाएगा, जिससे उस संस्था का भविष्य स्पष्ट हो गया है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं और धर्म तथा परंपरा में लिपटे एक जटिल, भू-राजनीतिक संघर्ष के लिए मंच तैयार हो गया है। अपने 90वें जन्मदिन के जश्न के बीच उनकी टिप्पणियों ने तुरंत चीन और फिर भारत से प्रतिक्रियाएं शुरू कर दीं और निस्संदेह संयुक्त राज्य अमेरिका भी इस पर करीबी नज़र रख रहा है। बीते छह जुलाई को जन्मतिथि से तीन दिन पहले धर्मशाला में अपनी दीर्घायु के लिए आयोजित प्रार्थना सभा में दलाई लामा ने घोषणा की कि दलाई लामा के पुनर्जन्म की तिब्बती परंपरा उनके बाद भी कायम रहेगी और उनके नए अवतारी बालक को खोजने का एकमात्र अधिकार और जिम्मेदारी तिब्बती धर्म संस्था 'गंदेन-फोड्रांग' के पास रहेगी। उन्होंने चीनी दावों को चुनौती देते हुए कहा कि किसी गैर तिब्बती और बाहरी शक्ति को इस प्रक्रिया में हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं है। दलाई लामा के इस बयान से बौखलाए चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि इस खोज और नियुक्ति का अधिकार दलाई लामा का नहीं, बल्कि केवल चीन सरकार का है और अगले दलाई लामा की खोज एक स्वर्ण कलश में डाले गए नामों में से लाटरी के आधार पर होगी।वर्तमान दलाई लामा को 1959 में तब भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी, जब चीनी कब्जे के खिलाफ तिब्बती जनता के जन उभार को चीनी कम्युनिस्ट शासन ने बेरहमी से कुचल डाला। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों के अनुसार इस अभियान में चीनी सेना ने एक पखवाड़े में ही 80 हजार से ज्यादा तिब्बती नागरिकों की हत्या कर डाली थी। 1959 के बाद से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, चीनी सेना और चीन सरकार तिब्बती जनता को अपने वश में करने और दलाई लामा के प्रभाव को खत्म करने के लिए वहां हर तरह के हथकंडे अपना चुकी है। इस बीच, दलाई लामा की इस घोषणा ने भी चिनफिंग के लिए नई चुनौती खड़ी कर दी है कि वह 130 साल की उम्र तक जिएंगे। अमेरिका के लिए, चीन द्वारा अपनी तिब्बती आबादी के साथ किया गया व्यवहार लंबे समय से बीजिंग के मानवाधिकार रिकॉर्ड को निशाना बनाने के लिए एक उपयोगी हथियार के रूप में काम करता रहा है। लेकिन भारत के लिए, दांव बहुत अधिक हैं: यह देश दुनिया की सबसे बड़ी विस्थापित तिब्बती आबादी का घर है, जिसमें दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती सरकार शामिल हैं। उनकी उपस्थिति आधुनिक भारत और चीन के बीच एक बुनियादी अंतर की याद दिलाती है: एक राष्ट्र विविधता को महत्व देता है, जबकि दूसरा जातीय मतभेदों को एक खतरे के रूप में देखता है। भले ही भारत ने हाल के वर्षों में शरणार्थियों के प्रति अपना दृष्टिकोण कठोर कर लिया है, लेकिन उसे चीनी दबाव के बावजूद दलाई लामा के उत्तराधिकारी को चुनने के तिब्बती नेतृत्व के अधिकार की रक्षा करनी चाहिए। लेकिन उसे खुद को सामने और केंद्र में रखे बिना चुपचाप ऐसा करना चाहिए। इस संदर्भ में विदेश मंत्रालय का यह बयान कि नई दिल्ली दलाई लामा के उत्तराधिकार के मुद्दे पर कोई रुख नहीं अपनाती है, जबकि यह रेखांकित करता है कि भारत सभी के लिए अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता को कायम रखता है और रखता रहेगा, सूक्ष्म और स्वागत योग्य दोनों है। फिर भी, यह नई दिल्ली के लिए आईने में देखने का क्षण भी है। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी सम्मेलन पर हस्ताक्षर करने या नागरिकता के लिए स्पष्ट रास्ता देने से इनकार करने का मतलब है कि तिब्बती शरणार्थी लंबे समय से भारतीय नागरिकों के लिए उपलब्ध अधिकारों के बिना रह रहे हैं, जबकि उनमें से कई देश में पैदा हुए हैं। नतीजतन, 2011 के बाद से भारत में उनकी आबादी लगभग आधी हो गई है, और कई पश्चिम की ओर चले गए हैं। नई दिल्ली को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अगले दलाई लामा के साथ-साथ इस देश में रहने का विकल्प चुनने वाले तिब्बती शरणार्थियों के पास हमेशा भारत में एक घर हो।

जहां नई लेखिका की कलम से ज्यादा बिकती है उसकी 'उपस्थिति'

साहित्यिक क्षेत्र का स्याह सच

प्रियंका सौरभ

नई लेखिका जैसे ही साहित्य के आंगन में प्रवेश करती है, एक उत्सव-सा माहौल बनता है। वह कलम लेकर आई हैशब्दों को जीवन देने, अनुभवों को साझा करने और संवेदनाओं को स्वर देने के लिए। पर क्या केवल शब्दों की शक्ति ही काफी है इस जगत में टिके रहने के लिए?नहीं। इस मंडी में उसकी लेखनी से पहले उसका चेहरा देखा जाता है। किताब से पहले उसकी उम्र पूछी जाती है। विचारों से पहले उसकी वाणी और मुस्कान पर चर्चा होती है। और दुर्भाग्यवश, यही वह बिंदु है जहां साहित्यिक क्षेत्र का स्याह सच उभरता है।आज भी देश के तमाम साहित्यिक मंचों, गोष्ठियों और पत्रिकाओं में एक नारी लेखिका को रचनाकार कम और सौंदर्य अधिक समझा जाता है। वरिष्ठों की प्रशंसा के शब्दों में सराहना से अधिक संकेत होते हैं। मंच पर बुलावा केवल कविता पाठ के लिए नहीं होता, बल्कि उस 'नवयौवना' ऊर्जा को भुनाने की एक शातिर कोशिश होती है।''आप बहुत अच्छा लिखती हैं'' कहने वाले बहुत होते हैं। लेकिन उनमें से कई की नज़रों में लफ़्ज़ नहीं, लार होती है। गोष्ठी के बाद की पार्टियों में कविता का नहीं, शरीर का मूल्यांकन होता है। और जो लेखिका इन सबके लिए 'ना' कहती है, उसे 'घमंडी', 'असहयोगी', और बदतमीज़ कहा जाता है।साहित्य की यह मंडी उस बौद्धिक आज़ादी की क़ब्रगाह बन चुकी है, जिसका स्वप्न लेकर कई स्त्रियां अपनी कलम उठाती हैं। नई लेखिका को मंच नहीं, मौन मिलते हैं। समर्थन नहीं, संशय मिलते हैं। उसके हर शब्द के पीछे मंशा तलाशने की कोशिश होती है''किसके लिए लिखा?'', 'किसके कहने पर?', 'किस इरादे से?' यह वही समाज है जो एक ओर मी टू आंदोलनों पर अख़बारों में कॉलम लिखता है और दूसरी ओर साहित्यिक सम्मेलनों में युवा लेखिकाओं को एकांत में बुलाकर ''व्यक्तिगत मार्गदर्शन'' देने को तैयार हो जाता है।इस

> **नई लेखिकाओं के उभार के साथ-साथ जिस तरह साहित्यिक मंडियों में उनकी रचनात्मकता की बजाय उनकी देह, उम्र और मुस्कान का सौदा होता है यह एक गहरी और शर्मनाक सच्चाई है। मंच, आलोचना, भूमिका, सम्मान, सब कुछ एक जाल बन जाता है। यह लेख स्त्री लेखन के नाम पर चल रही पाखंडी व्यवस्था को आईना दिखाता है, जहां लेखिका की कलम से ज़्यादा उसकी उपस्थिति बिकती है। अब समय आ गया है कि साहित्य की दुनिया इस अंदरूनी शोषण को पहचाने और बदलने का साहस करे।**

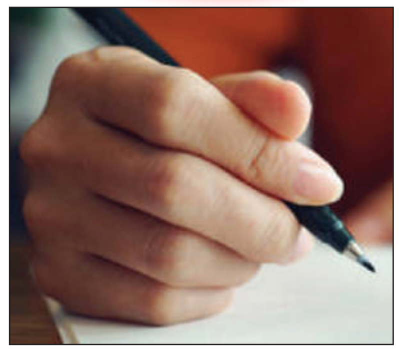

मानसिकता ने न केवल नई प्रतिभाओं को कुचला है, बल्कि साहित्य के प्रति महिलाओं के विश्वास को भी तोड़ा है। लेखन की दुनिया को जिनका घर बनना था, वहां दरवाज़े बंद मिलते हैंअगर वे समझौता नहीं करतीं। इतिहास गवाह हैअमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, मृणाल पांडे, वंदना राग जैसी लेखिकाओं ने न केवल कलम चलाई, बल्कि उस पितृसत्ता के खिलाफ भी लिखीं जो साहित्य की गली में भी घर बनाए बैठी थी। उन्होंने यह रास्ता संघर्षों से सींचा, और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक चेतना छोड़ी।लेकिन फिर भी सवाल खड़ा होता हैक्यों आज भी नई लेखिका को अपनी गरिमा की रक्षा के लिए चुप रहना पड़ता है या लड़ना पड़ता है? क्यों अब भी वरिष्ठ पुरुष लेखकों के लिए 'नारी-लेखन' एक 'आसान निशाना' बना हुआ है?कई बार तो लेखिका की लेखनी को ही पुरुष संरचना में ढालने की कोशिश की जाती है। ''थोड़ा कम उग्र लिखो, ज्यादा संवेदनशील बनो, रोमांटिक कविताएं ज्यादा सराही जाती हैं''ये सब नए नामों को सिखाने वाले 'गुरुजन' के परामर्श होते हैं। लेकिन सच तो ये है कि यह अनुरूपता नहीं, बल्कि अनुनय की मांग होती है।एक अन्य पक्ष यह भी है कि जब कोई लेखिका सफल हो जाती हैतो उसकी सफलता का श्रेय उसके किसी पुरुष मार्गदर्शक को दे दिया जाता है। जैसे उसकी प्रतिभा खुद उसकी नहीं थी, बल्कि किसी के संपर्क और संरक्षण से मिली हुई थी।और जब वह इन चीज़ों से इनकार करती हैतो उसकी कविताओं की समीक्षा नहीं होती, बल्कि उसके चरित्र की। यही दोहरा मापदंड इस मंडी की रीढ़ बन गया है।अब ज़रूरत हैइस व्यवस्था को सवालों के कटघरे में खड़ा करने की। अब ज़रूरत है कि हर नई लेखिका अपनी कविता में यह लिखे कि ''मैं कोई गुलाब नहीं, जो सिर्फ़ सजने के लिए खिला हूं मैं वो कांटा हूं जो तुम्हारे इरादों को चीर देगा।''लेखिकाओं को एक-दूसरे की आवाज़ बनना होगा। उन्हें मंच साझा करने से अधिक, स्पेस साझा करना होगा जहां वे एक-दूसरे को सुनें, समर्थन दें और किसी को भी अकेले न छोड़ें।प्रकाशक, संपादक, आयोजकअब तुम्हारे लिए भी चेतावनी है। अगर तुम अपनी नीतियों को साफ़ नहीं करोगे, तो ये कलमें तुम्हारे नाम को स्याही से नहीं, आग से लिखेंगी। यह मंडी, जो कभी विचारों की थी, आज बाजार बन गई है जहां 'स्त्री उपस्थिति' बिकती है, 'लेखनी' नहीं। पर यह बाज़ार भी एक दिन ढहेगा जब हर लेखिका अपने भीतर के डर को मिटाकर मंच पर सिर्फ़ कविता नहीं, हक़ मांगेगी।

'मेरे शब्द मेरे होंठों से नहीं, मेरी आत्मा से निकले हैं और तुमने मेरी आत्मा को रौंदा है, तो अब यह कलम चुप नहीं बैठेगी।'

जल की बूंद-बूंद पर संकट : नीतियों के बावजूद क्यों प्यासी है भारत की धरती?

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत की धरती पर जल का संकट एक ऐसी विडंबना बन चुका है, जिसे देखकर हैरानी होती है कि इतनी योजनाओं, घोषणाओं और नीतियों के बावजूद यह देश बूंद-बूंद के लिए क्यों तरस रहा है। जब कोई देश दुनिया की 18 फीसदी जनसंख्या को समेटे हुए हो और उसके पास केवल 4 फीसदी ताजे जल संसाधन हों, तो संकट की आशंका तो बनती है, पर यदि यही देश दशकों से जल संरक्षण और जल प्रबंधन की योजनाओं का ढोल पीटता हो और फिर भी सूखा, प्यास, और जलजनित बीमारियां उसके हिस्से में आएंतो यह केवल प्राकृतिक संकट नहीं यह नीति, प्रशासन और नागरिक चेतना की सामूहिक असफलता है।भारत में पानी की स्थिति को अगर आंकड़ों की भाषा में समझें, तो भयावहता साफ़ दिखाई देती है। नीति आयोग की रिपोर्ट कहती है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा भूजल उपभोक्ता है लगभग 25 फीसदी भूजल अकेले भारत निकालता है। 11 फीसदी से अधिक भूजल खंड अत्यधिक दोहित की स्थिति में हैं। दिल्ली, बेंगलुरू, हैदराबाद जैसे 21 प्रमुख शहरों के 2030 तक भूजल समाप्त होने की चेतावनी दी जा चुकी है। वहीं दूसरी ओर, 70 फीसदी जल स्रोत प्रदूषित हैं। फ्लोराइड, आर्सेनिक, नाइट्रेट और भारी धातुओं से दूषित यह जल 23 करोड़ से अधिक लोगों को प्रभावित कर रहा है। हर साल लगभग 2 लाख मौतें सिर्फ जलजनित बीमारियों से होती हैंयह सिर्फ आंकड़ा नहीं यह हमारी संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है। पानी का यह संकट केवल ग्रामीण इलाकों या गरीबों तक सीमित नहीं है। 2019 में जब चेन्नई जैसे आधुनिक शहर को 'डे जीरा' का सामना करना पड़ा और जल ट्रेनें चलानी पड़ीं, तब यह साफ हो गया कि यह समस्या अब दरवाज़े पर नहीं, घर के भीतर आ चुकी है। और फिर भी हम इसे मौसमी समस्या मानकर हर बार भूल जाते हैं।सवाल यह है कि नीतियां तो

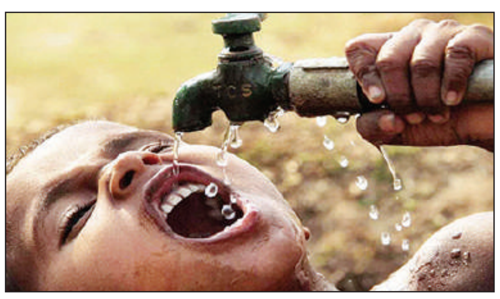

बनीं राष्ट्रीय जल नीति (2012), जल जीवन मिशन, अटल भूजल योजना, नमामि गंगे, जल शक्ति अभियानपर फिर भी पानी का स्तर क्यों गिरता जा रहा है? जवाब सरल है। हमारी नीतियां ज़मीन पर नहीं उतरतीं, और हमारे व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आता।आज भी देश के अधिकांश किसान पानी की फिजूलखर्ची करने वाली फसलों की खेती करते हैं। पंजाब और हरियाणा जैसे जल-संकटग्रस्त राज्य में धान और गन्ने की खेती केवल इसलिए होती है क्योंकि सरकार एमएसपी और मुफ्त बिजली देती है। नतीजा, भूजल का तेज़ी से दोहन, खेतों का क्षरण और जल स्रोतों का खत्म हो जाना। दूसरी ओर, ड्रिप सिंचाई या स्प्रिंकलर जैसे आधुनिक जल संरक्षण उपायों की पहुंच केवल 9 फीसदी खेतों तक ही सीमित है। किसान जानते हैं, पर अपनाते नहीं क्योंकि नीति और व्यवहार में दूरी है। शहरों की बात करें तो पाइपलाइन से लेकर टंकी तक हर जगह लीकेज और बर्बादी का आलम है। स्मार्ट मीटरिंग अभी भी अधिकांश नगरपालिकाओं के लिए नया शब्द है। पुनः उपयोग (रिसाइक्लिंग) और वर्षा जल संचयन (रेनवाटर हार्वेस्टिंग) जैसे उपाय कहीं-कहीं दिखते हैं, लेकिन सामूहिक रूप से अपनाए नहीं जाते। सबसे चिंताजनक बात यह है कि जल संकट को अब भी केवल प्राकृतिक समस्या समझा जाता है। जबकि यह एक स्पष्ट रूप से 'नीतिगत और नैतिक'

> **सरकारी योजनाओं और नीतियों के बावजूद कार्यान्वयन और जनभागीदारी की कमी से हालात बिगड़ते जा रहे हैं।**

संकट है। जब तक यह दृष्टिकोण नहीं बदलेगा, तब तक कोई भी योजना सफल नहीं होगी। अब समय आ गया है कि भारत पानी को 'मुफ्त संसाधन' मानना बंद करे और उसे 'जीवन मूल्य' की तरह देखे। इसके लिए कुछ गहन और ठोस सुधारों की आवश्यकता है। सबसे पहले, पानी की कीमत तय होनी चाहिए। चाहे वह पीने का हो, या सिंचाई का। मुफ्त पानी की संस्कृति ने उपभोग को बर्बादी में बदल दिया है। जल का मूल्य निर्धारण सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय विवेक के बीच संतुलन साध सकता है। दूसरा, सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को केवल योजना पत्रों से निकालकर ज़मीनी हकीकत बनाना होगा। इसके लिए तकनीकी प्रशिक्षण, सस्ती उपलब्धता और स्थानीय स्तर पर सहायता तंत्र बनाना होगा। तीसरा, भूजल का प्रबंधन केवल सरकार का नहीं, ग्राम पंचायतों और स्थानीय समुदायों का भी कर्तव्य होना चाहिए। अटल भूजल योजना को इस दिशा में सफल मॉडल के रूप में बढ़ाया जा सकता है। चौथा, किसानों को केवल फसल बीमा या सब्सिडी नहीं जल आधारित फसल मार्गदर्शन की ज़रूरत है। यह तभी होगा जब एमएसपी का ढांचा जल संरक्षण के अनुकूल फसलों को बढ़ावा देगा। देश को ऐसे नीतिगत हस्तक्षेपों की ज़रूरत है जो किसान की आय भी बढ़ाएं और पानी की बचत भी करें। पांचवां, शहरों में जल पुनर्चक्रण अनिवार्य किया जाए। जो नगर पालिकाएं अपशिष्ट को रिसाइकिल नहीं करतीं, उन्हें दंड और प्रोत्साहन दोनों के माध्यम से बदला जाए। बड़े भवनों में वर्षा जल संचयन अनिवार्य हो और इसके अनुपालन की निगरानी की जाए। छठा, बच्चों के स्कूली पाठ्यक्रम में जल संरक्षण को केवल पर्यावरण अध्याय के रूप में न पढ़ाया जाए, बल्कि व्यवहार परिवर्तन के रूप में सिखाया जाए। यदि अगली पीढ़ी जल को कीमती माने, तो आज की प्यास भविष्य की सूखी धरती को बचा सकती है।

सातवां, जल संरक्षण को जन आंदोलन बनाना हो-गाजैसा प्रधानमंत्री ने आह्वान किया था। लेकिन यह आह्वान केवल भाषणों में नहीं, बजट और प्रशासनिक प्रतिबद्धता में दिखना चाहिए। जल शक्ति मंत्रालय को केवल नल जोड़ने वाला मंत्रालय नहीं, जल नीति, जल शिक्षा और जल चेतना का नेतृत्व करना होगा। साथ ही, निजी क्षेत्र की भूमिका को भी समझना और बढ़ाना होगा। जल एटीएम, पाइपलाइन प्रबंधन, स्मार्ट मीटरिंग और जल पुनर्चक्रण जैसी सेवाओं में पीपीपी मॉडल को बढ़ावा देकर न केवल निवेश लाया जा सकता है, बल्कि तकनीकी नवाचार भी हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के इस युग में जब बारिश की मात्रा अनिश्चित हो गई है और हिमालयी ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैंहमें जल को 'अनंत' नहीं, बल्कि 'सीमित और नाजुक' संसाधन मानना होगा। भारत की सांस्कृतिक परंपरा में जल को देवता का दर्जा मिला हैलेकिन विडंबना यह है कि आज वही जल नदियों में मल-मूत्र के रूप में बह रहा है, या गंदे नालों से होकर भूजल में जहर घोल रहा है।इसलिए आज का भारत केवल 'जल संकट' नहीं झेल रहा, बल्कि वह अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। जल संकट में डूबा भारत, विकास के हर मोर्चे पर कमजोर पड़ता जाएगा चाहे वह स्वास्थ्य हो, कृषि, उद्योग या सामाजिक समरसता।

Page-7_Layout 1 7/8/2025 3:40 PM Page 1

सियालदह-राजधानी एक्सप्रेस ने पूरी की सिल्वर जुबली

निज संवाददाता : प्रसिद्ध सियालदह-राजधानी एक्सप्रेस ने बीते 1 जुलाई को अपनी सिल्वर जुबली मनाई। यानी इस ट्रेन ने सुहाने सफर के 25 साल पूरे किए। निस्संदेह, यह भारतीय रेल इतिहास का एक विशेष अध्याय है। इस प्रतिष्ठित ट्रेन की यात्रा ठीक 25 साल पहले, 1 जुलाई 2000 को शुरू हुई थी। उस समय की भारत की रेल मंत्री ममता बनर्जी ने इसका उद्घाटन किया था। मालूम हो कि शुरुआत से ही इस ट्रेन ने एक प्रीमियम सेवा के रूप में अपनी पहचान बनाई। यह भारतीय रेल के गौरवशाली रत्नों में से एक है। अपनी समयबद्धता और आरामदायक यात्रा के लिए जानी जाने वाली यह ट्रेन हर बार अपनी प्रतिबद्धता निभाती है। दोपहर में कोलकाता से रवाना होकर अगली सुबह दिल्ली पहुंचने वाली यह राजधानी, दोनों महानगरों के बीच की दूरी को जैसे पंख लगाकर पार करती है। इसने मानो पुरानी कहावत 'दिल्ली दूर है!' को पीछे छोड़ दिया है। सिल्वर जुबली पूरी होने के मौके पर इस ऐतिहासिक दिन को और भी खास बनाने के लिए, ट्रेन की पहली यात्रा में शामिल रहे मूल लोको पायलट और गार्ड भी इस दिन विशेष सफर में शामिल हुए। यह क्षण गौरव और इतिहास से सराबोर था। इस उपलब्धि को चिह्नित करने के लिए ट्रेन को एक विशेष रूप से सजाया गया था।जश्न में स्वाद का तड़का भी लगाया गया। इस दिन की यात्रा में परोसे जाने वाले व्यंजनों को खासतौर पर तैयार किया गया। बंगाल की मशहूर 'वेटकी फ्राई' को मेन्यू की शान बनाया गया था। ट्रेन के कोचों को भव्य रूप में सजाया गया। ऐसा प्रतीत होता था जैसे नॉस्टैल्जिया और प्रगति साथ-साथ चल रहे हों। जैसे अतीत और वर्तमान एक-दूसरे से हाथ मिला रहे हों, और ट्रेन गर्व के साथ आगे बढ़ रही हो।सियालदह-राजधानी एक्सप्रेस की यह यात्रा केवल गंतव्य तक पहुंचने का माध्यम नहीं, बल्कि इतिहास, भावना और गौरव का एक उत्सव बन गई है।

मारवाड़ी संस्कृति मंच की नई कार्यकारिणी की घोषणा

♦ सुप्रसिद्ध उद्योगपति अशोक तोदी बने अध्यक्ष

निज संवाददाता : राजस्थान, हरियाणा और बंगाल की पारंपरिक संस्कृति को संरक्षित - संवर्धित करने तथा मारवाड़ियों की परंपराओं और रिवाजों को शाश्वत रखने के लिए प्रयासरत मारवाड़ी संस्कृति मंच की नई कार्यकारिणी में सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी अशोक तोदी अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। निवर्तमान अध्यक्ष ललित बेरीवाला चेयरमैन तथा निरंजन अग्रवाल (एन.के) मुख्य सलाहकार बनाए गए हैं। संस्थापक अध्यक्ष ललित प्रहलादका ने इसकी सूचना देते हुए बताया कि बाकी कार्यकारिणी अपरिवर्तित है जिसमें सचिव विकास पोद्दार, उपाध्यक्ष आदित्य मूंधड़ा, दीपक कुमार संघई, दिनेश संचेती, रमेश कुमार बागला, संजय अग्रवाल, संयुक्त सचिव अंकित प्रहलादका, अनुज जालान, रोहित मोर, मुख्य संयोजक अरुण कुमार भुवालका, कोषाध्यक्ष महावीर बंका और स्वागत समिति के चेयरमैन अंजनी धानुका निर्वाचित हुए हैं। सदस्यों में कौशल अग्रवाल, परीक्षित गुप्ता (पप्पू) और विजय चांदगोठिया प्रमुख हैं।

बंगाल भाजपा में बड़े फेरबदल के लिए शमिक ने बनाया प्लान

निज संवाददाता : जुलाई में प्रदेश भाजपा की नई कमेटी बनने जा रही है। 5 महासचिवों में से दो बदले जा सकते हैं। मोर्चा अध्यक्ष पद में भी बदलाव हो सकता है। प्रदेश अध्यक्ष शमिक भट्टाचार्य ने नई प्रदेश कमेटी बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। सूत्रों के अनुसार, 20 जुलाई के बाद फेरबदल होगा। अध्यक्ष पद संभालने के बाद शमिक भट्टाचार्य ने साफ कर दिया है कि पार्टी में पुराने कार्यकर्ताओं की अहमियत रहेगी। माना जा रहा है कि इस नवगठित समिति में भाजपा के आदि व उपेक्षित कार्यकर्ताओं का महत्व बढ़ने वाला है। बंगाल भाजपा की कमान बदलते ही कई नई संभावनाओं को लेकर चर्चा और अफवाह शुरू हो गई है। शमिक भट्टाचार्य के नए प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने एक जनसभा में अपने भाषण में बताया कि संगठन में बड़े पैमाने पर फेरबदल होने वाला है। भाजपा भी कट्टर हिंदुत्व की लाइन से हट रही है। बल्कि शमिक ने सबका साथ का संदेश दिया। यह भी अफवाह उड़ी कि शमिक को जिम्मेदारी सौंपे जाने से दिलीप घोष गुट इस बार सक्रिय हो सकता है। शमिक भट्टाचार्य ने भी इस बारे में अपनी बात रखी है।

श्रावणी मेले के अवसर पर हावड़ा तारकेश्वर मार्ग पर शुरू हुई विशेष ट्रेन

निज संवाददाता : सालाना श्रावणी मेला जल्द ही शुरू होने वाला है। तारकेश्वर में श्रावणी मेले के अवसर पर आसपास के रेलवे स्टेशनों पर भीड़ होती है। इसमें से एक परिचित दृश्य है शेवड़ाफुली और तारकेश्वर स्टेशनों पर असंख्य भक्तों की भीड़। इस बार भी, पूर्व रेलवे ने श्रावणी मेले के अवसर पर विशेष ट्रेनें शुरू की है। पूर्व रेलवे सूत्रों के मुताबिक हावड़ा से तारकेश्वर तक चार जोड़ी हावड़ा-तारकेश्वर लोकल ट्रेनें और शेवड़ाफुली और तारकेश्वर के बीच पांच जोड़ी ट्रेनें शुरू हुई है। पूर्व रेलवे ने कहा है कि तारकेश्वर में श्रावणी मेले के दौरान यानी 10, 13, 14, 20, 21, 27, 28 और 29 जुलाई और 3, 4, 9, 10, 11, 15, 16, 17, 18 अगस्त को ट्रेनें चलेंगी। रेलवे ने कहा है कि ये विशेष ट्रेनें मार्ग के सभी स्टेशनों पर रुकेंगी। भगवान महादेव के विसर्जन समारोह के लिए हावड़ा से चार विशेष ट्रेनें चलाई जाएंगी। हावड़ा-तारकेश्वर ईएमयू स्पेशल ट्रेनें हावड़ा से रात 12:30 बजे और 2:40 बजे रवाना होंगी। एक ट्रेन सुबह 4:15 बजे रवाना होगी। एक अन्य ट्रेन हावड़ा स्टेशन से दोपहर 1:20 बजे रवाना होगी। तारकेश्वर से स्पेशल ट्रेनें कब रवाना होंगी, इसका शेड्यूल भी जारी कर दिया गया है। दो ट्रेनें रात 9:17 बजे और 2:30 बजे रवाना होंगी इसके अलावा, श्रद्धालु गंगाजल लेने के लिए शेवड़ाफुली आते हैं। उस स्टेशन पर भी भारी भीड़ होती है। इसे ध्यान में रखते हुए रेलवे शेवड़ाफुली से तारकेश्वर के लिए विशेष ट्रेनें चला रही है।

रेलवे ने घोषणा की है कि शेवड़ाफुली और तारकेश्वर के बीच पांच जोड़ी ईएमयू स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी। शेवड़ाफुली-तारकेश्वर ईएमयू स्पेशल शेवड़ाफुली से 06.55, 09.20, 11.05, 14.15 और 16.35 बजे रवाना हो रही है। विपरीत दिशा में, तारकेश्वर-शेवड़ाफुली ईएमयू स्पेशल तारकेश्वर से 05.55, 08.20, 10.05 और 16.46 बजे और 17.35 बजे रवाना हो रही है।

दपूरे की दो नई परियोजनाओं को स्वीकृति

निज संवाददाता : रेल मंत्रालय ने दक्षिण पूर्व रेलवे की दो नई रेलवे परियोजनाओं के कार्य को स्वीकृति प्रदान की है। **नीमपुरा रिसेप्शन यार्ड और खड़गपुर जंक्शन के बीच तीसरी रेल लाइन :** यह तीसरी रेल लाइन परियोजना 6.41 किलोमीटर लंबी होगी और इसे 157.86 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया जाएगा।

खड़गपुर-नीमपुरा रिसेप्शन यार्ड हावड़ा-मुंबई एवं हावड़ा-चेन्नई उच्च घनत्व नेटवर्क मार्ग पर स्थित है। नीमपुरा रिसेप्शन यार्ड और खड़गपुर जंक्शन के बीच तीसरी लाइन के पूरा होने पर आदित्यपुर-खड़गपुर तीसरी लाइन परियोजना पूरी हो जाएगी। इससे गोकुलपुर और आद्रा से आने वाली मालगाड़ियों की देरी कम होगी और माल यातायात की गति बढ़ेगी। **कलाईकुंडा-नीमपुरा वेस्ट आउटर-गोकुलपुर कनेक्टिविटी:** यह नई रेल लाइन परियोजना 12.33 किलोमीटर लंबी होगी और इसे 224.44 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया जाएगा। प्रस्तावित परियोजना खड़गपुर स्टेशन के निकट है, जो कि हावड़ा-मुंबई एवं हावड़ा-चेन्नई उच्च घनत्व नेटवर्क मार्ग पर स्थित एक महत्वपूर्ण स्टेशन है। कलाईकुंडा-नीमपुरा वेस्ट आउटर-गोकुलपुर के बीच यह नई कनेक्टिविटी बनने से इस खंड की वर्तमान क्षमता में वृद्धि होगी और इससे ट्रेनों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित हो सकेगी।

लॉयन एपी सिंह बने लॉयंस क्लब इंटरनेशनल के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष

निज संवाददाता : लॉयन एपी सिंह लॉयंस क्लब इंटरनेशनल के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं। उनको इस पद पर वर्ष 2025-26 के लिए चुना गया है। लॉयंस क्लब आफ कलकत्ता-322बी2 के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर कनक दुग्गड़ ने एपी सिंह को यह पद मिलने पर बधाई दी है। उन्होंने कहा-लॉयंस डिस्ट्रिक्ट-322 बी 2 और समग्र मल्टीपल डिस्ट्रिक्ट-322 के लिए यह एक गर्व का क्षण है। हम लॉयन एपी सिंह के लिए कामना करते हैं, ताकि वे अपने विजन, समर्पण और प्रेरणाप्रद सेवा भाव से ग्लोबल लायनेस्टिक मूवमेंट को सफतला की नई ऊंचाइयों पर ले जाएं।

समर्पण चिकित्सा सेवा सम्मान 2025 से सम्मानित हुए डॉक्टर

पड़ोसी मुल्कों की चिकित्सा निर्भरता पर चर्चा

निज संवाददाता : मानवता के प्रति समर्पण और संवेदना के प्रतीक, चिकित्सा क्षेत्र के मूक कर्मयोगियों को सम्मानित करने का एक भावपूर्ण आयोजन, समर्पण चिकित्सा सेवा सम्मान 2025 सह सेमिनार, कोलकाता के पार्क व्यू सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के सेमिनार हॉल में समर्पण ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉक्टर्स डे के प्रेरक व्यक्तित्व, डॉ. विधानचंद्र राय को श्रद्धांजलि अर्पित की गई और चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले डॉक्टरों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि, कोलकाता के प्रख्यात सीए और कोलकाता थंडरबोल्ट्स के पवन पाटोडिया ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि हमारा पड़ोसी मुल्क चिकित्सा के लिए कोलकाता पर निर्भर है। भारत के शहरी क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाएं संतोषजनक हैं, किंतु ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति आज भी चिंताजनक है। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश में डॉक्टरों की संख्या लगभग 15 लाख है, जो सैन्य बल (12 लाख) से अधिक है, फिर भी डॉक्टरों को वह सम्मान नहीं मिलता, जिसका वे वास्तव में हकदार हैं। उनके शब्दों ने उपस्थित लोगों में चिकित्सकों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान की भावना को और गहरा किया। विशिष्ट अतिथि बिमल बेंगानी और राजेश सोंथलिया ने भी अपने विचारों से आयोजन को समृद्ध किया। श्री बेंगानी ने जहाँ डॉक्टर और रोगी के बीच विश्वास और आंतरिक संबंधों की विशिष्टता पर बल दिया वहीं श्री सोंथलिया ने चिकित्सीय उपलब्धियों की गरिमामयी परंपरा को याद किया। समारोह में चिकित्सा क्षेत्र की विभिन्न विशेषज्ञताओं से जुड़े डॉ. राहुल जैन, डॉ. अरिंदम मुखर्जी, डॉ. तरुण जिंदल, डॉ. पल्लवी प्रिया, डॉ. आर.के. जैन तथा डॉ. शिल्पा भरतिया को उनकी असाधारण चिकित्सकीय कुशलता के लिए 'समर्पण चिकित्सा सेवा सम्मान 2025' से नवाजा गया। समर्पण ट्रस्ट के अध्यक्ष दिनेश बजाज और ट्रस्टी एन.के. अग्रवाल सहित अन्य पदाधिकारियों ने सम्मान स्वरूप अंग वस्त्र और स्मृति चिह्न भेंट कर डॉक्टरों का अभिनंदन किया। आयोजन के अंतर्गत बदलते समाज में डॉक्टर और रोगी के बीच विश्वास की नई परिभाषा विषय पर विचारोत्तेजक सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात बेरियाट्रिक सर्जन डॉ. वी. के. भरतिया ने की। सेमिनार में डाक्टरों ने चिकित्सा क्षेत्र के व्यावसायीकरण पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे डाक्टर और रोगी के बीच अविश्वास की खाई बढ़ रही है। डिजिटल युग में रोगियों के पास चिकित्सा संबंधी जानकारी का खजाना तो है, परंतु आधी-अधूरी जानकारी कई बार नुकसानदायक सिद्ध होती है। संवादहीनता की स्थिति को सबसे बड़ी चुनौती बताते हुए डॉक्टरों ने रोगी और चिकित्सक के बीच पारदर्शी संवाद की आवश्यकता पर बल दिया। समर्पण ट्रस्ट के ट्रस्टी प्रदीप ढेडिया ने कहा कि यह वार्षिक आयोजन उन चिकित्सा योद्धाओं को सम्मानित करने का एक सार्थक प्रयास है, जो न केवल रोगों का उपचार करते हैं, बल्कि अपनी संवेदनाओं से मानव जीवन को स्पर्श करते हैं। उन्होंने बताया कि समर्पण ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य, अध्यात्म और भाषाई उत्थान के क्षेत्र में निरंतर कार्यरत है और डाक्टरों को वे इस धरती पर ईश्वर का स्वरूप मानते हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन कोलकाता के प्रसिद्ध पत्रकार प्रकाश चंडालिया ने किया, जबकि वरिष्ठ पत्रकार डॉ. जयप्रकाश मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में अशोक ढेडिया, पंकज भालोटिया, मनीष बजाज, रजीत भूतोड़िया, अमन ढेडिया, आनंद ढेडिया, संजय रूंगटा, प्रदीप अग्रवाल, विशाल अग्रवाल, भगवती प्रसाद सराफ, अभिषेक गुप्ता, यशपाल भवसिंहका तथा अपोलो अस्पताल के मार्केटिंग मैनेजर विशाल अग्रवाल आदि का विशेष योगदान रहा।

Page-8_Layout 1 7/8/2025 3:39 PM Page 1

प्रधानमंत्री संग्रहालय ने मांगे नेहरू के दस्तावेज

कांग्रेस की चुप्पी पर विवाद

◆ 51 डिब्बों में बंद हैं पहले प्रधानमंत्री के निजी पत्र, दस्तावेज और अभिलेख

निज संवाददाता : देश की राजनीति एक बार फिर पंडित नेहरू की विरासत को लेकर गर्म है, लेकिन इस बार मामला भावनाओं का नहीं, दस्तावेज़ों का है। प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय सोसाइटी (पीएमएमएल) ने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को पत्र लिखकर वह 51 डिब्बे वापस मांगे हैं जिनमें देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के निजी पत्र, दस्तावेज और अभिलेख हैं। ये वही दस्तावेज़ हैं जिन्हें इंदिरा गांधी ने 1971 में सार्वजनिक संग्रहालय को सौंपा था, लेकिन 2008 में यूपीए सरकार के दौर में सोनिया गांधी के पास भेज दिया गया। अब सवाल यह है कि क्या गांधी परिवार इतिहास को रोककर रखना चाहता है? और अगर ये दस्तावेज़ सार्वजनिक महत्व के हैं, तो क्या इन पर सिर्फ परिवार का अधिकार हो सकता है? पीएमएमएल की हालिया बैठक में इस मुद्दे पर गंभीर चर्चा हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान जैसे वरिष्ठ सदस्य भी मौजूद रहे। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में तय किया गया कि अगर गांधी परिवार दस्तावेज नहीं लौटाता तो संस्था कानूनी रास्ता अख्तियार करेगी। इससे पहले भी फरवरी 2024 में इसी विषय पर विचार हुआ था और अब इसे लेकर स्पष्ट कानूनी राय मांगी जा चुकी है।

यह भी खुलासा हुआ है कि इन दस्तावेज़ों में पंडित नेहरू द्वारा एडविना माउंटबेटन, अल्बर्ट आइंस्टीन, जयप्रकाश नारायण, पद्मजा नायडू, विजया लक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली और बाबू जगजीवन राम जैसे नेताओं को लिखे गए पत्र शामिल हैं। इन पत्रों में उस समय की राजनीति, कूटनीति और निजी संवादों की झलक मिलती है, जो भारतीय इतिहास को समझने के लिए अत्यंत मूल्यवान माने जा रहे हैं। दिल्ली के तीन मूर्ति मार्ग स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय के 15,600 वर्ग मीटर परिसर में अब देश के सभी प्रधानमंत्रियों से जुड़ा दस्तावेजी खजाना संरक्षित किया जा रहा है। लेकिन नेहरू के इन पत्रों की अनुपस्थिति न केवल ऐतिहासिक शोध के लिहाज से एक बड़ी कमी है, बल्कि इसे लेकर राजनीतिक विवाद भी गहराता जा रहा है।यहां एक बड़ा सवाल खड़ा होता है आखिर गांधी परिवार इन दस्तावेजों को क्यों नहीं लौटाना चाहता? एक संभावना यह भी जताई जा रही है कि नेहरू द्वारा एडविना माउंटबेटन को लिखे पत्रों में कुछ ऐसे व्यक्तिगत प्रसंग हो सकते हैं जो सार्वजनिक होने पर राजनीतिक विवाद खड़ा कर सकते हैं। मौजूदा दौर में जब हर चीज़ सोशल मीडिया पर मिनटों में वायरल हो जाती है, तब कांग्रेस को डर हो सकता है कि इन पत्रों की गलत व्याख्या कर नेहरू की छवि को नुकसान पहुंचाया जा सकता है। बीजेपी नेताओं ने इस मुद्दे पर कांग्रेस को घेरना शुरू कर दिया है। पार्टी प्रवक्ता संबित पात्रा ने पूछा है, नेहरू के पत्रों में ऐसा क्या है जो गांधी परिवार छुपा रहा है? वहीं, बीजेपी आईटी सेल प्रमुख अमित मालवीय ने सोशल मीडिया पर लिखा कि अगर पत्रों में कुछ नहीं है तो कांग्रेस उन्हें वापस क्यों नहीं कर रही?अब यह पूरा मामला राजनीति से निकलकर न्यायिक दायरे में प्रवेश कर चुका है। पीएमएमएल का कहना है कि दान की गई सामग्री सार्वजनिक संपत्ति होती है और उसे वापस लेना कानूनन संभव नहीं है। यदि गांधी परिवार इन दस्तावेजों को व्यक्तिगत संपत्ति बताकर रख रहा है, तो यह सार्वजनिक अधिकार का हनन है। इसलिए अब संस्था ने अदालत की शरण लेने का मन बना लिया है। यह पहली बार नहीं है जब कांग्रेस पर ऐतिहासिक दस्तावेजों को निजी संपत्ति की तरह इस्तेमाल करने का आरोप लगा हो। नेहरू गांधी परिवार लंबे समय से देश की राजनीति और इतिहास दोनों पर प्रभाव रखता आया है, लेकिन बदलते वक्त में पारदर्शिता की मांग भी उतनी ही तेज हो गई है। अब जनता यह जानना चाहती है कि देश के पहले प्रधानमंत्री की निजी चिट्ठियां, जो इतिहास के दस्तावेज हैं, वे सिर्फ एक परिवार की अलमारी में क्यों बंद हैं?यहां एक और बिंदु विचारणीय है। अगर ये दस्तावेज़ निजी थे, तो 1971 में इंदिरा गांधी ने उन्हें सार्वजनिक संस्थान को क्यों सौंपा? और अगर वो निर्णय सही था, तो 2008 में यूपीए सरकार के समय उन्हें चुपचाप वापस क्यों ले जाया गया? क्या यह सिर्फ भावनात्मक फैसला था या कोई रणनीतिक कदम? पीएमएमएल अब यह भी तय कर चुकी है कि भविष्य में किसी भी दस्तावेज को संग्रहालय में शामिल करने के लिए गोपनीयता की कोई शर्त मान्य नहीं होगी। संस्था का तर्क है कि इतिहास को छुपाकर नहीं, पारदर्शिता से ही संरक्षित किया जा सकता है।फिलहाल कांग्रेस की ओर से इस मुद्दे पर कोई बयान नहीं आया है। सोनिया गांधी और राहुल गांधी दोनों ही चुप्पी साधे हुए हैं। लेकिन अगर अदालत में मामला पहुंचता है और दस्तावेज़ सार्वजनिक करने का आदेश आता है तो यह कांग्रेस के लिए एक नैतिक और राजनीतिक संकट खड़ा कर सकता है।

दूसरी ओर, अगर अदालत गांधी परिवार के हक में फैसला देती है तो यह सरकार की पारदर्शिता की नीति पर सवाल खड़े करेगा। इस पूरे विवाद ने नेहरू की विरासत को एक बार फिर राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र बना दिया है। लेकिन यह केवल विरासत की लड़ाई नहीं है, यह उस विश्वास की लड़ाई भी है जो जनता अपने इतिहास, अपने दस्तावेजों और अपने लोकतंत्र से करती है। अब फैसला अदालत को करना है कि देश का इतिहास बंद पेटियों में रहेगा या देश के हर नागरिक की नज़र के सामने खुलेगा।

चिली में कम्युनिस्ट पार्टी की प्रार्थी जीनेट ज़ारा ने जीता प्राइमरी चुनाव

निज संवाददाता : चिली में पहली बार कम्युनिस्ट पार्टी की कोई उम्मीदवार राष्ट्रपति चुनाव के अंतिम दौर में भाग लेगी। उनका नाम जीनेट ज़ारा है। वे वर्तमान सरकार में श्रम मंत्री थीं। इससे पहले कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार पाब्लो नेरुदा ने 1969 में अलेंदे की जीत सुनिश्चित करने के लिए चुनाव के अंतिम दौर से अपना नाम वापस ले लिया था। हालांकि उस चुनाव में कम्युनिस्ट पार्टी को अलेंदे की सोशलिस्ट पार्टी (12.8 प्रतिशत) से ज़्यादा वोट (16.6 प्रतिशत) मिले थे। तब कोई प्राइमरी नहीं थी। वामपंथियों में कम्युनिस्ट पार्टी ही सबसे मज़बूत थी। तब से कम्युनिस्ट पार्टी से कोई भी व्यक्ति अंतिम दौर में प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाया। जीनेट पहली हैं। 16 नवंबर को उनका सामना दक्षिणपंथी एवलिन मैथ्यू और संभवतः दूर-दराज़ के जोस एंटोनियो कास्ट से होगा। ज़ारा ने रविवार 29 जून को प्राइमरी चुनाव में भारी मतों से जीत हासिल की। उन्हें चार दावेदारों में सबसे ज़्यादा समर्थन मिला। उनको 60.31 प्रतिशत वोट मिला।

चीन ने किया हाइपरसोनिक मिसाइलों का परीक्षण

बीजिंग : चीन ने हाइपरसोनिक मिसाइलों की दुनिया में अमेरिका को बहुत पीछे छोड़ दिया है। चीन ने फ़ीतियन-2 हाइपरसोनिक वाहन का कामयाब परीक्षण कर पूरी दुनिया को चौंका दिया है। यह फ्लाइट टेस्ट ना सिर्फ तकनीकी रूप से अत्यंत मुश्किल रॉकेट बेस्ड कंबाइंड साइकिल (आरबीसीसी) इंजन पर आधारित है, बल्कि इसने हाइपरसोनिक उड़ानों के भविष्य के लिए नई संभावनाओं के दरवाजे भी खोल दिए हैं। आरबीसीसी टेक्नोलॉजी पर महारत हासिल करने की कोशिश पिछले कई सालों से कई देश करते आ रहे थे, लेकिन फिलहाल चीन मैदान मारता दिख रहा है। यह फ्लाइट टेस्ट नॉर्थवेस्टर्न पॉलिटेक्निकल यूनिवर्सिटी (एनपीयू) की तरफ से उत्तरपश्चिमी चीन में एक साइट पर किया गया है। एनपीयू की रिसर्च टीम ने कहा है कि यह परीक्षण केरोसिन-हाइड्रोजन पेरोक्साइड प्रपल्सस का इस्तेमाल करके आरबीसीसी इंजन के लिए वास्तविक-उड़ान डेटा के पहले सफल अधिग्रहण का प्रतिनिधित्व करता है।आरबीसीसी इंजन, पारंपरिक रॉकेट इंजन और एयर-ब्रीदिंग रैमजेट का जबरदस्त संयोजन होता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह वातावरण में मौजूद ऑक्सीजन का इस्तेमाल करता है, जिससे ऑनबोर्ड ऑक्सीडाइजर की जरूरत घट जाती है। इससे वाहन का वजन कम हो जाता है और ईंधन खर्च होना भी कम हो जाता है। यानि इससे मिसाइल की कम ईंधन का इस्तेमाल करते हुए ज्यादा दूरी तक पहुंचने की क्षमता बढ़ जाती है। फ़ीतियन-2 में इस्तेमाल किया गया केरोसीन-हाइड्रोजन पेरॉक्साइड प्रणोदक सिस्टम एक नया प्रयोग है जो इसे लिक्विड ऑक्सीजन जैसी जटिल क्रायोजेनिक सिस्टम से आजाद करता है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि इस टेक्नोलॉजी को पूरी तरह से आजमाने के बाद इसका इस्तेमाल नागरिक और सैन्य, दोनों जरूरतों के लिए किया जा सकता है।

धरती के देवदूत थे डॉ. विधानचंद्र राय

प्रदीप ढेडिया
(ट्रस्टी, समर्पण ट्रस्ट)

डॉ. राय न केवल एक कुशल चिकित्सक थे, बल्कि स्वतंत्र भारत के निर्माण में एक सशक्त राजनेता, विचारक और समाजसेवी के रूप में भी उन्होंने अतुलनीय योगदान दिया। पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने जिस तरह चिकित्सा, शिक्षा और सामाजिक विकास के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे को मजबूत किया, वह आज भी प्रेरणास्रोत है।

हर बार जब कोई नवजीवन की डोर थामता है, जब कोई माँ अपने शिशु को पहली बार देख मुस्कुराती है, जब किसी परिवार को यह सूचना मिलती है कि उनका प्रियजन अब ख़तरे से बाहर है उस क्षण एक नाम अदृश्य रूप से गूंजता है: डॉक्टर। ये वही लोग हैं जो निःस्वार्थ भाव से न केवल जीवन बचाते हैं, बल्कि उसे अर्थ और आशा भी देते हैं। हमारा सौभाग्य है कि भारतभूमि ने अनेक महान चिकित्सकों को जन्म दिया है, जिन्होंने चिकित्सा को सिर्फ़ पेशा नहीं, एक तप, एक साधना बना दिया। उनमें से एक नाम है- डॉ. विधानचंद्र राय। जिसकी गूंज इतिहास और वर्तमान दोनों में बराबर है। एक जुलाई, जो डॉक्टरों के सम्मान में नेशनल डॉक्टर्स डे के रूप में मनाई जाती है, वह डॉ. राय की जयंती और पुण्यतिथि दोनों का दिन है। यह एक दुर्लभ संयोग है, जो उनके जीवन के गूढ़ और विलक्षण अर्थ को और भी गहरा करता है।

डॉ. राय न केवल एक कुशल चिकित्सक थे, बल्कि स्वतंत्र भारत के निर्माण में एक सशक्त राजनेता, विचारक और समाजसेवी के रूप में भी उन्होंने अतुलनीय योगदान दिया। पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने जिस तरह चिकित्सा, शिक्षा और सामाजिक विकास के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे को मजबूत किया, वह आज भी प्रेरणास्रोत है। वे मानते थे कि डॉक्टर केवल शरीर नहीं, समाज की भी चिकित्सा करते हैं। और यही विचार उन्हें 'धरती का ईश्वर' कहे जाने वाले डॉक्टरों का आदर्श बना देता है। समर्पण ट्रस्ट, जो शिक्षा, धर्म, भाषा, अध्यात्म और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में निष्ठा से कार्य कर रही संस्था है, डॉ. राय के विचारों और आदर्शों को आत्मसात करते हुए प्रत्येक वर्ष नेशनल डॉक्टर्स डे के अवसर पर डॉक्टरों को सम्मानित करती है। यह सम्मान केवल एक समारोह नहीं, बल्कि एक भावनात्मक ऋण की सार्वजनिक स्वीकृति है, जो हम समाज के उन 'रियल हीरों' को अर्पित करते हैं, जिनके प्रयासों से अनगिनत परिवारों में जीवन की लौ जलती रहती है।

सोचिए, जब कोई डॉक्टर ऑपरेशन थियेटर में घंटों तक बिना थके किसी अनजान रोगी को जीवनदान देता है, जब वह अपनी नींद, अपने त्योहार, अपने अपनों को छोड़ कर दूसरों के लिए तैयार खड़ा रहता है, तो क्या वह केवल पेशेवर कर्तव्य निभा रहा होता है? नहीं, वह मानवता की सबसे ऊँची मिसाल पेश कर रहा होता है। यही वह क्षण होता है जब डॉक्टरी एक सेवा नहीं, एक संवेदना बन जाती है। समर्पण ट्रस्ट का यह प्रयास- डॉक्टर्स डे पर डॉक्टरों को सम्मानित करना- एक सामाजिक कृतज्ञता का प्रतीक है। यह हमें यह याद दिलाता है कि जिन हाथों में स्टेथोस्कोप है, वे केवल नब्ज नहीं, जीवन की धड़कन पहचानते हैं। वे हाथ कभी डाँटते नहीं, डरते नहीं, थकते नहीं- वे बस समर्पण करते हैं।

आज जब चिकित्सा व्यवसाय को कई बार आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ता है, तब यह और भी जरूरी हो जाता है कि हम सच्चे चिकित्सकों की पहचान करें, उन्हें नमन करें, और यह कहें- आपके बिना यह जीवन अधूरा है। डॉक्टर हमारे जीवन के वे स्तंभ हैं, जो न केवल हमें गिरने से बचाते हैं, बल्कि हर बार, हर चुनौती के बाद हमें खड़ा भी करते हैं। डॉ. राय जैसे महान व्यक्तित्व की स्मृति में जब एक पूरा देश, और विदेशों में बसे भारतवासी भी, 1 जुलाई को डॉक्टर्स डे मनाते हैं, तो वह केवल एक व्यक्ति की जयंती नहीं होती वह एक विचार, एक परंपरा, एक जीवन दर्शन की पूजा होती है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि सेवा, संवेदना और समर्पण ही वे मूल्य हैं जो किसी डॉक्टर को महामानव बनाते हैं। आज जब हम कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के अनुभव से गुजर चुके हैं और जब लाखों डॉक्टरों ने अपनी जान जोखिम में डालकर मानवता की सेवा की, तब यह दिन और भी ज्यादा अर्थपूर्ण हो गया है। हर मास्क के पीछे एक चेहरा है, जो थकता है, पर हारता नहीं।

हर सफेद कोट के भीतर एक दिल है, जो धड़कता है केवल दूसरों के लिए। समर्पण ट्रस्ट का यह मानवीय प्रयास उन अनाम डॉक्टरों को भी उजागर करता है जो छोटे कस्बों, दूरदराज़ के गांवों या सरकारी अस्पतालों में चुपचाप अपनी ड्यूटी निभाते हैं। जो बड़ी तस्वीर का हिस्सा नहीं बनते, पर जिनके छोटे-छोटे प्रयास मिलकर लाखों जिंदगियों को रोशन करते हैं। नेशनल डॉक्टर्स डे, डॉ. राय की जयंती और पुण्यतिथि पर, एक सामूहिक प्रणाम है उन सभी को, जो निःस्वार्थ सेवा की प्रतिमूर्ति हैं। आइए, इस दिन हम केवल सम्मान न करें, बल्कि एक वादा भी करें कि हम डॉक्टरों की मेहनत को समझेंगे, उन्हें सहयोग देंगे, और हर उस व्यक्ति को धन्यवाद देंगे, जिसने किसी दिन हमारी साँसों को फिर से गिनती देना सिखाया। क्योंकि डॉक्टर सिर्फ़ इलाज नहीं करते वे उम्मीद बाँधते हैं। वे जीवन को स्पर्श करते हैं। और यही उन्हें इस धरती का ईश्वर बना देता है।

Page-9_Layout 1 7/8/2025 3:39 PM Page 1

आंखों में लगातार दर्द की न करें अनदेखी

हो सकता है गंभीर समस्या का संकेत

निज संवाददाता : कहावत है जान है तो जहान है। लेकिन यह जान बिना आंखों के कुछ भी नहीं है। लिहाजा आंखें हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग होती हैं। आंखों की मदद से हम इस दुनिया की खूबसूरती को देख पाते हैं। लेकिन समय के साथ आंखों में कई तरह की दिक्कतें बढ़ती जा रही हैं। आंखों के संक्रमण, बीमारियों या फिर चोट की वजह से दर्द की समस्या हो सकती है। आमतौर पर आंखों में दर्द के अलावा जैसे लालिमा, सूजन और खुजली की समस्या भी हो सकती है। ऐसे में इस समस्या को नजरअंदाज करने की गलती नहीं करनी चाहिए और इस पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए।

कई बार आंखों की सही देखभाल न कर पाने या फिर बार-बार दर्द होना किसी गंभीर स्वास्थ्य समस्या की ओर संकेत हो सकता है। हालांकि कई बार आंखों में हल्का-फुल्का दर्द होता है, लेकिन जब यह दर्द बार-बार या लगातार बना रहे, तो यह किसी समस्या का विषय हो सकता है। ऐसे में अगर आपकी आंखों में भी दर्द रहता है, तो यह सुनिश्चित करें कि समय रहते इसका इलाज कराएं।

आंखों में दर्द और अन्य समस्याएं

विशेषकर युवा आबादी में आंखों में दर्द बढ़ती इस समस्या के लिए डिजिटल आई स्ट्रेन को एक मुख्य कारण माना जा रहा है। यह समस्या उन लोगों में अधिक पाई जाती है, जो रोजाना कई घंटे स्क्रीन के सामने बिताते हैं।

आंखों में दर्द का कारण

आंखों में दर्द होते रहने के कई कारण हो सकते हैं जिनमें से कुछ सामान्य और कुछ गंभीर मामले भी शामिल हैं। 1. दिनभर की मेहनत और थकान के कारण भी आंखों में दर्द की समस्या हो सकती है। 2. धूप में या फिर अंधकार में अधिक समय बिताने के कारण भी आंखों में दर्द व सूजन की समस्या बढ़ सकती है। 3. रूखापन, धूल या एलर्जी की वजह से भी आंखों में सूजन हो सकती है। जिसके कारण कई तरह की समस्या और दर्द का जोखिम बढ़ जाता है। 4. लंबे समय तक मोबाइल या कंप्यूटर आदि का इस्तेमाल करने के कारण भी आंखों में दर्द की समस्या हो सकती है।

तुरंत इलाज जरूरी

जब आप आंखों को हाथों से रगड़ते हैं, तो आंखों में बैक्टीरिया और वायरस प्रवेश करते हैं और संक्रमण पैदा कर सकते हैं। आंखों में संक्रमण की समस्या होने पर आंखों में लालिमा, हल्के दर्द और खुजली के साथ शुरू होती है। वहीं संक्रमण बढ़ने के साथ आंखों की मांसपेशियों को नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए जरूरी है कि आंखों के संक्रमण हो हल्के में नहीं लेना चाहिए और समय रहते ही इलाज शुरू करना चाहिए।

शरीर के लिए कवच का काम करता है अनानास

बीमारियों से बचाकर इम्यूनिटी को करता है मजबूत

निज संवाददाता : वैसे तो सभी तरह के फल हमारे शरीर के लिए फायदेमंद हैं। लेकिन इनमें से कुछ ज्यादा ही लाभकारी होते हैं। इन्हीं में से एक अनानास फल है। यह बेहद स्वादिष्ट और रसीला फल है। इसका खट्टा-मीठा स्वाद सभी को दीवाना बना देता है। कई लोग सुबह ब्रेकफास्ट में अनानास का जूस पीना पसंद करते हैं। अनानास स्वाद के साथ सेहत का खजाना होता है। इसमें पोषक तत्वों का बड़ा भंडार होता है। अनानास गर्मियों और बरसात के मौसम में खूब मिलता है। आयुर्वेद में इस फल को औषधीय गुणों से भरपूर माना गया है। दुनियाभर में इस फल को खूब पसंद किया जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक यह खट्टा-मीठा फल पेट की सेहत के लिए कमाल होता है। अनानास में ब्रोमेलिन नामक एक एंजाइम पाया जाता है, जो प्रोटीन को तोड़ने और पचाने में मदद करता है। यह पाचन तंत्र को सक्रिय करता है और कब्ज, गैस अपच जैसी समस्याओं से राहत दिलाता है। खाने के बाद थोड़ी मात्रा में अनानास का सेवन करने से पेट हल्का महसूस होता है और खाना जल्दी पचता है। अनानास में विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जो शरीर की इम्यूनिटी को मजबूत करता है। यह फ्री रेडिकल्स से लड़ने में मदद करता है और सर्दी, खांसी, जुकाम जैसे संक्रमणों से बचाता है। नियमित रूप से अनानास का सेवन करने से वायरल और मौसमी बीमारियों का खतरा कम होता है।अनानास में पाया जाने वाला ब्रोमेलिन सिर्फ पाचन के लिए ही नहीं, बल्कि यह सूजन को कम करने वाले गुणों के लिए भी जाना जाता है। गठिया, मांसपेशियों में दर्द या चोट लगने के बाद सूजन में अनानास बहुत फायदेमंद होता है। यह शरीर के टिशूज को जल्दी ठीक करने में सहायक है, इसलिए इसे रिकवरी डाइट में भी शामिल किया जाता है। अनानास का जूस भी बेहद फायदेमंद होता है। अनानास में एंटीऑक्सीडेंट्स, फाइबर और पोटैशियम होता है, जो दिल के लिए लाभकारी है। यह ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद करता है और बैड कोलेस्ट्रॉल को घटाता है। इससे हार्ट डिजीज का खतरा कम होता है और ब्लड फ्लो सुधरता है। अनानास में मौजूद विटामिन-सी और एंटीऑक्सीडेंट्स त्वचा की चमक बढ़ाने और झुर्रियों को कम करने में मदद करते हैं। यह कोलेजन निर्माण को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे त्वचा यंग और सॉफ्ट दिखती है। अनानास खाना बालों के लिए भी लाभकारी है, क्योंकि यह बालों की जड़ों को मजबूती प्रदान करता है। अगर आप वजन कम करने की सोच रहे हैं तो अनानास आपके डाइट प्लान का हिस्सा जरूर होना चाहिए।

शिक्षा/रोजगार

इंडियन एयरफोर्स में अग्निवीर वायु भर्ती

- 11 जुलाई से शुरू होगा आवेदन
- 2500 उम्मीदवारों की होगी भर्ती

निज संवाददाता : भारतीय वायुसेना में अग्निवीर वायु भर्ती के लिए नोटिफिकेशन जारी किया गया है। इस भर्ती के लिए आवेदन की शुरुआत 11 जुलाई से होगी। उम्मीदवार ऑफिशियल वेबसाइट agnipathvayu.cdac.in पर जाकर आवेदन कर सकेंगे। इस भर्ती के लिए परीक्षा की तारीख 25 सितंबर 2025 तय की गई है। अग्निवीर वायु का कार्यकाल 4 साल है। इस भर्ती में सेवा निधि योजना के अनुसार लगभग 10.08 लाख मिलेंगे। यह भर्ती अविवाहित महिला और पुरुषों के लिए होगी।

शैक्षणिक योग्यता : इंटरमीडिएट (12वीं) गणित, भौतिकी और अंग्रेजी में मिनिमम 50% नंबरों के साथ या मिनिमम 50% अंकों के साथ मैकेनिकल/ इलेक्ट्रिकल/ इलेक्ट्रॉनिक्स/ऑटोमोबाइल/कंप्यूटर साइंस/ इंस्ट्रूमेंटेशन टेक्नोलॉजी/आईटी में इंजीनियरिंग का 3 वर्षीय डिप्लोमा या किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से भौतिकी और गणित के साथ 2 साल का वोकेशनल कोर्स जिसमें कुल 50% अंक और अंग्रेजी में 50% अंक हों।

उम्र सीमा : जन्म 1 जनवरी 2005 से 1 जनवरी 2008 के बीच होना चाहिए। आयु में छूट इंडियन एयरफोर्स अग्निवीर वायु इंटेक 1/2026 के नियमानुसार दी जाएगी।

सिलेक्शन प्रोसेस : लिखित परीक्षा पीएसटी/पीईटी दस्तावेज सत्यापन चिकित्सा परीक्षण मेरिट सूची

सैलरी : पहले साल : 30,000, दूसरे साल : 33,000, तीसरे साल : 36,500, चौथे साल : 40, 000

ऐसे करें आवेदन : ऑफिशियल वेबसाइट agnipathvayu.cdac.in पर जाएं। न्यू रजिस्ट्रेशन लिंक पर क्लिक करें। नाम, पासवर्ड के साथ लॉग इन करें। फॉर्म में पासपोर्ट साइज फोटो, सिग्नेचर और अन्य डॉक्यूमेंट्स अटैच करें। फीस का भुगतान करके फॉर्म प्रिव्यू और सबमिट करें।

फ्री ऑनलाइन कोर्स से बच्चों को बनाएं क्रिएटिव

घर बैठे सीखने योग्य 5 जरूरी पाठ्यक्रम

निज संवाददाता : आज के दौड़-भाग के युग में बच्चों का घर पर बोर होना आम बात है। ऐसे में माता-पिता अक्सर उन्हें मोबाइल फोन पकड़ा देते हैं, ताकि बच्चा व्यस्त रहे और किसी को तंग न करे। क्योंकि आज ज्यादातर माता-पिता वर्किंग होते हैं। पहले तो लगता है चलो अपना बच्चा बिजी हो गया, लेकिन इसका सबसे बड़ा नुकसान यह है कि बच्चे को मोबाइल फोन की लत लग जाती है।ऐसे में कितना ही कुछ कर लो फिर बहुत मुश्किल हो जाता है, उन्हें समझाना। अगर आप भी इसी बात से परेशान है और यह सोचते हैं कि बच्चों को कैसे बिजी रखा जाए, ताकि उनका समय मजेदार और फायदेमंद तरीके से गुजरे। तो आजकल कई ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध हैं, जिनसे घर बैठे बच्चों की स्किल्स बढ़ाई जा सकती है और वो भी बिना किसी भारी खर्च के।

सीखने में बीतेगा बचपन का खाली वक्त

इन ऑनलाइन कोर्सों से जुड़कर बच्चे बोर भी नहीं होंगे और नई चीजें भी सीख सकते हैं। पेरेंट्स इन कोर्सेस के जरिए बच्चों का समय सही दिशा में लगा सकते हैं और उनके अंदर नई इंट्रेस्ट डेवलप कर सकते हैं।

कोडिंग में है दिलचस्पी तो सिखाएं स्क्रैच प्रोग्रामिंग

अगर आपका बच्चा 8 साल या उससे ऊपर है, तो उसे प्रोग्रामिंग की शुरुआती जानकारी देना एक स्मार्ट कदम हो सकता है। एमआईटी द्वारा विकसित स्क्रैच एक फ्री प्लेटफॉर्म है, जो बच्चों को ड्रैग-एंड-ड्रॉप ब्लॉक्स की मदद से स्टोरीज़, गेम्स और एनिमेशन बनाना सिखाता है। इसमें लूप्स, वेरिएबल्स और कंडीशंस जैसे जरूरी कोडिंग कॉन्सेप्ट्स को आसान तरीके से समझाया जाता है।

ड्राइंग और पेंटिंग क्लासेस

इसके अलावा आप बच्चे को घर बैठे आर्ट में सिखा सकते हैं। आप उसे उडेमी पर मौजूद ऑनलाइन ड्राइंग कोर्स द कंप्लीट ड्राइंग कोर्स फार किड्स में इनरोल कर सकते हैं। 5 साल की उम्र से ऊपर के बच्चों के लिए यह बहुत उपयोगी है। यह कोर्स स्केचिंग, पेंटिंग, वॉटरकलर और पेस्टल जैसे बेसिक से लेकर एडवांस आर्ट स्किल्स सिखाता है। इसमें बच्चों का इंट्रेस्ट और अपने आर्ट में आत्मविश्वास बढ़ता है।

विदेशी भाषा सीखने का आसान तरीका

नई भाषा सीखना बच्चों के दिमागी विकास में काफी मददगार होता है। इससे उनकी मेमोरी, सुनने और समझने की क्षमता बढ़ती है। डुवोलिंगो एबीसी एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जो बच्चों को इंटरऐक्टिव गेम्स और एक्टिविटी के ज़रिए नई भाषाएं सिखाता है। इसमें छोटे-छोटे लेसन होते हैं, जिससे बच्चे जल्दी बोर नहीं होते। अच्छी बात यह है कि बिना वाई-फाई के भी यह ऐप काम करता है।

फिटनेस और फोकस के लिए योगा कोर्स

बच्चों को मेंटली और फिजिकली फिट रखने के लिए योगा बहुत अच्छा विकल्प है। कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म बच्चों के लिए स्पेशल योगा क्लासेस ऑफर करते हैं, जिसमें ब्रीदिंग एक्सरसाइज, हुला हूप, माइंडफुलनेस और मेडिटेशन शामिल हैं।बच्चों के लिए शतरंज से सीखने का मौका बढ़ती उम्र के बच्चों के लिए शतरंज एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। उडेमी का फ्री चेस ट्यूटोरियल उनके लिए फ्री में उपलब्ध है, जिसमें एनिमेटेड वीडियो के जरिए पीस मूवमेंट, चेकमेट पैटर्न और खास चालों की जानकारी दी जाती है। इससे बच्चे न केवल शतरंज केलने में माहिर बनेंगे, बल्कि दुनिया भर के बच्चों के साथ ऑनलाइन कॉम्पिटिश भी कर सकते हैं।

Page-10_Layout 1 7/8/2025 3:38 PM Page 1

शादीशुदा लड़कियों में क्यों बढ़ रही है हिंसक प्रवृत्ति?

निज संवाददाता : तेजी से बदलते समाज में लाइफस्टाइल भी मॉडर्न होती जा रही है। इसी के साथ हमारे सोच-विचार भी बदल रहे हैं। लेकिन इन सब के बीच अगर कुछ बदलाव समाज को खटक कर रहा है तो वो है, युवाओं में आक्रमकता का बढ़ना, खासतौर पर लड़कियों में। ऐसा इसलिए कि हाल के दिनों में अखबारों में कई ऐसी आपराधिक खबरें सुर्खियों में हैं जिसमें या तो किसी नई नवेली दुल्हन ने चाकू से अपने शौहर पर वार कर दिया या अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या कर दी। ऐसी खबरें लोगों के लिए चिंता का विषय बन गईं हैं। कई परिवार यह महसूस कर रहा है कि शादी के बाद उनकी लड़कियों का व्यवहार असामान्य और कभी-कभी हिंसक हो गया है। ऐसा क्यों हो रहा है? क्या इसमें परवरिश की कोई भूमिका है या यह समाज में बदलते मूल्यों और दबावों का परिणाम है?

क्यों बदल रहा बेटियों का स्वभाव?

शादी के बाद किसी भी महिला की जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। नए परिवार में ढलना, रिश्तों को संभालना और खुद के लिए समय निकालना एक बड़ा संघर्ष हो सकता है। अगर परवरिश के दौरान बेटियों को मानसिक और भावनात्मक संतुलन बनाने की शिक्षा नहीं दी गई, तो यह स्थिति और जटिल हो जाती है। कुछ अन्य शोध बताते हैं कि जब परिवार में विवाह संबंधों में हिंसा होती है तो इसका असर सिर्फ बच्चे पर ही नहीं बल्कि मां के मानसिक संतुलन और उनके माता-पिता के व्यवहार पर भी पड़ता है। ऐसे माहौल में बड़ी हुई लड़कियों में भविष्य में आक्रामक प्रवृत्ति विकसित हो सकती है।

परवरिश में हो रही ये बड़ी गलतियां

कई माता-पिता अपनी बेटियों को स्वतंत्र निर्णय लेने का मौका नहीं देते। इससे उनका आत्मविश्वास कमजोर हो जाता है और शादी के बाद जब उन्हें अचानक नई जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ता है, तो वे तनावग्रस्त हो जाती हैं। भावनात्मक संतुलन की शिक्षा देना पेरेंटिंग का जरूरी हिस्सा है। लेकिन अगर बेटियों को बचपन से ही भावनाओं को संभालना नहीं सिखाया गया तो यह शादी के बाद कुछ गलत निर्णय ले सकती हैं। कुछ माता-पिता अपनी बेटियों को हर समस्या से बचाने की कोशिश करते हैं। यह आदत बेटियों को जीवन के संघर्षों के प्रति कमजोर बना देती है और शादी के बाद छोटी-छोटी बातों पर भी वे कठोर प्रतिक्रिया देने लगती हैं। बदलते जमाने के साथ समाज में भी मूल्यों का परिवर्तन हो रहा है।

क्या है समाधान?

बातचीत खुली रखें- माता-पिता को अपनी बेटियों से खुलकर बात करनी चाहिए। उन्हें शादी के बाद आने वाली जिम्मेदारियों और जीवन की चुनौतियों के लिए मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए।

रिश्तों को महत्व देना सिखाएं

बदलते समाज में रिश्तों की अहमियत को समझाना बहुत जरूरी है। बेटियों को सिखाएं कि हर रिश्ते में समझौता और धैर्य की जरूरत होती है। याद रखें कि बेटियों की परवरिश केवल अच्छी शिक्षा और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना देना नहीं है, उन्हें यह भी सिखाना जरूरी है कि मानसिक और भावनात्मक रूप से मजबूत किस तरह बनना है और यह क्यों जरूरी है। अगर पेरेंटिंग में इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखा जाए।

वक्त के साथ कपल्स के बीच बढ़ती दूरियों की होती हैं कई वजह

निज संवाददाता : जाने-माने चिकित्सक रूथ एसुमेह का कहना है कि जोड़े (कपल्स) अचानक अलग नहीं हो जाते, बल्कि यह धीरे-धीरे होता है, जिसमें आपसी संबंधों में सूक्ष्म बदलाव आते हैं। रूथ की इस पोस्ट ने रिश्तों में धीरे-धीरे आने वाली दरार के बारे में महत्वपूर्ण बातें साझा की हैं। कई बार रिश्तों की शुरुआत में बहुत प्यार और अपनापन होता है, लेकिन वक्त के साथ कुछ जोड़ियां एक-दूसरे से दूर होने लगती हैं। दोनों के बीच पहले जो बातें रोमांचक लगती थीं अब वही बोरिंग लगने लगती हैं। इसमें कोई बड़ी गलती नहीं होती, बस जीवन की भागदौड़, स्ट्रेस और कम बातचीत की वजह से भावनात्मक जुड़ाव धीरे-धीरे कम हो जाता है।

रिश्तों में दरार के कारण

रूथ एसुमेह उन कारणों का खुलासा किया जो जोड़ों के रिश्ते में दरार पैदा कर सकते हैं। उनके अनुसार जोड़े अचानक अलग नहीं हो जाते, बल्कि यह धीरे-धीरे होता है, जिसमें आपसी संबंधों में सूक्ष्म बदलाव आते हैं। रूथ की इस पोस्ट ने रिश्तों में धीरे-धीरे आने वाली दरार के बारे में महत्वपूर्ण बातें साझा की हैं।

रिश्तों में आत्मसंतुष्टता

समय के साथ, जोड़े अक्सर एक-दूसरे को हल्के में लेने लगते हैं। वे एक-दूसरे पर ध्यान देना बंद कर देते हैं और पहले जैसा उत्साह नहीं रहता। यह बदलाव धीरे-धीरे होता है, लेकिन इससे दोनों के बीच दूरी बढ़ सकती है और वे अपने प्यार पर सवाल उठाने लगते हैं।

रिश्तों में प्रयास की कमी

जब जोड़े डेटिंग कर रहे होते हैं, तो वे एक-दूसरे को प्रभावित करने की पूरी कोशिश करते हैं। लेकिन रिश्ता पक्का होने के बाद, वे अक्सर एक-दूसरे को प्रभावित करने की कोशिश करना बंद कर देते हैं। जबकि रिश्ते में सहजता जरूरी है, एक-दूसरे को प्रभावित करने का प्रयास जारी रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

रिश्तों में बच्चों पर अधिक ध्यान

विवाहित जोड़ों की एक आम गलती यह है कि जब वे अपने रिश्ते में समस्याओं का सामना करते हैं, तो वे अपना सारा ध्यान और प्यार अपने बच्चों पर केंद्रित कर देते हैं। वे अपने बच्चों का इस्तेमाल अपने रिश्ते में प्यार और अंतरंगता की कमी को पूरा करने के लिए करने लगते हैं।

रिश्तों में बातचीत और हंसी की कमी

जोड़े अक्सर एक-दूसरे से दिलचस्प बातें करना और हंसना बंद कर देते हैं। हंसी और मजाक रिश्तों में प्यार और नजदीकी बनाए रखने में मदद करते हैं।

फैशन

पोल्का डॉट साड़ी से अपने लुक में लगाएं चार चांद

निज संवाददाता : आजकल पोल्का डॉट साड़ी काफी चलन में हैं। ऐसे में ज्यादातर महिलाओं के पास यह साड़ी देखने को मिल जाएगी। हालांकि दो-तीन बार एक साड़ी को पहनने के बाद ज्यादातर महिलाएं इन्हें किसी और को दे देती हैं या फिर उस साड़ी को फेंक देती हैं। ऐसे में आपके पास भी इस तरह की पोल्का डॉट साड़ी हैं और अब इन साड़ियों को आप नहीं पहनती हैं। तो आप इन साड़ियों के इस्तेमाल से डिजाइनर ड्रेस तैयार कर सकती हैं। ऐसे में आप इन ड्रेसेज को पहनकर काफी खूबसूरत लगेंगी। अगर आपके पास ब्लैक एंड व्हाइट कलर की पोल्का डॉट साड़ी है तो इसका इस्तेमाल करके पोल्का डॉट वन शोल्डर मिडी ड्रेस तैयार कर सकती हैं। इस ड्रेस के साथ मेकअप, एक्सेसरीज और हील्स भी शामिल कर सकती हैं। इस ड्रेस को पहनकर आपका लुक गॉर्जियस लगेगा। आप किसी भी पोल्का डॉट साड़ी के इस्तेमाल से प्रिंटेड फिट एंड फ्लायर ड्रेस बना सकती हैं। इस ड्रेस को आप किसी भी फंक्शन में भी जा सकती हैं। आप टेलर की मदद से या खुद से इसको अपनी साइज के हिसाब से बनवा सकती हैं। वहीं मेकअप और हेयर स्टाइल से अपने लुक की खूबसूरती को बढ़ा सकती हैं।

नेवी ब्लू पोल्का डॉट प्रिंटेड ड्रेस

अगर आप भी भीड़ से हटकर नजर आना चाहती हैं तो आप पोल्का डॉट साड़ी का इस्तेमाल कर नेवी ब्लू पोल्का डॉट प्रिंटेड ड्रेस तैयार करवा सकती हैं।

यह आपके लुक में चार चांद लगाने का काम करेगा। वहीं आप चाहें तो इस ड्रेस को घर पर भी तैयार कर सकती हैं। आप इस ड्रेस को पहनकर क्लासी और मॉर्डन लुक क्रिएट कर सकती हैं।

पोल्का डॉट लेयर्ड मिडी ड्रेस

आप चाहें तो अपनी किसी भी पोल्का डॉट साड़ी का इस्तेमाल कर पोल्का डॉट लेयर्ड मिडी ड्रेस को बना सकती हैं। इसको पहनकर आप किसी खूबसूरत हसीना से कम नहीं लगेंगी। यह रेट्रो लुक की तरह है, जिसको आप रीक्रिएट कर 90 की अभिनेत्री की तरह दिख सकती हैं। आपके इस लुक को देखकर घर में मौजूद सभी लोग आपकी तारीफ करने पर मजबूर हो जाएंगे।

पार्टी वीयर साड़ियों की पहचान बना सर्वोत्तम

निज संवाददाता: आज की नारी को आरामदायक फेब्रिक्स ज्यादा रास आ रहा है। चाहे वह युवा पीढ़ी हो या फिर अधेड़। आरामदायक परिधानों की बात करें तो सबसे आरामदायक कपड़ों में कॉटन के अलावा मूंगा और तशर भी शामिल है। अगर आप कॉटन, मूंगा और तशर में निर्मित डिजाइन की साड़ी ढूंढ़ रहे हैं तो पार्क स्ट्रीट स्थित सर्वोत्तम आपका गंतव्य स्थल हो सकता है। विगत 33 वर्षों से खुद की निर्मित शत-प्रतिशत कॉटन, तशर और मूंगा पर डिजाइनिंग साड़ियों का भंडार यहां उपलब्ध है। लगभग 3 हजार वर्गफीट में फैले इस शोरूम में अमूमन थोक का व्यापार होता है। जिस कारण ग्राहकों की यहां कतारें लगी रहती हैं, परन्तु रिटेल ग्राहक के पहुंचने पर वह भी वहां से निराश नहीं लौटता। सर्वोत्तम के प्रमुख चैतन्य खेमका ने बताया कि हमारे शो रूम में कॉटन, तशर और मूंगा पर एक से बढ़कर एक डिजाइनिंग साड़ियां उपलब्ध हैं। यहां पार्टी वीयर, फैंसी साड़ियों का भंडार मौजूद है। जिसकी रेंज 1100 से लेकर 10-12 हजार रुपये तक के बीच है। इसके साथ ही कॉटन साड़ियों की हर रेंज हमारे शो रूम में उपलब्ध है। सर्वोत्तम की डिजाइन की गई साड़ियां कुछ अलग ही किस्सा बयां करती हैं। डिजाइन भी इतना आकर्षक कि देखते ही आंखें ठहर जाती हैं। ग्राहकों की बात करें तो सर्वोत्तम की डिजाइनिंग साड़ियां देश के कई शहरों की पसंदीदा डिजाइन बन गयी हैं।

शत प्रतिशत कॉटन, मूंगा और तशर का भंडार

Page-11_Layout 1 7/8/2025 3:38 PM Page 1

जादुई टोकरी की कहानी

बहुत पहले समय की बात है। रमेश नाम का एक कम उम्र का बालक अपने परिवार और दादा-दादी के साथ एक छोटी सी पहाड़ी से सटे एक छोटे से गांव में रहता था। गांव का नाम नौबतपुर बाजार था। रमेश बचपन से ही काफी शरारती स्वभाव का एक लड़का था और वह तरह तरह के बच्चों वाली नादान हरकतें किया करता था। उसके हरकतों से हमेशा कोई न कोई छोटी बड़ी आफत आ जाया करतीं थी ।नौबतपुर गांव से कुछ दुरी पर एक जंगल था। एक दिन की बात है, रमेश उस जंगल में घूमने के लिए गया हुआ था। वह उस जंगल में इधर उधर बस यूँ ही घूम रहा था , तभी एक जगह रास्ते में जमीन पर गिरा हुआ बांस की बनी हुई एक साधारण सी टोकड़ी को उसने देखा । वास्तव में बांस की वह टोकड़ी एक साधारण टोकड़ी न होकर एक जादुई टोकड़ी थी। उस टोकड़ी को वह अपने दोनों पांव से ठोकर मार- मार कर गेंद की तरह खेलने लग गया था । वह टोकड़ी काफी अलग तरह की भी लग रही थी। रमेश को भी वह टोकड़ी कुछ अजीब तरह की ही लगी थी। अब उस टोकड़ी के बारे में जानने के लिए रमेश थोड़ा थोड़ा उत्साहित भी होने लगा था।अब उसने उस टोकड़ी पर अपना पैर रखकर उस टोकड़ी पर चढ़ने का सोचा , परन्तु जैसे ही वह उस टोकड़ी पर अपना पैर रखकर चढ़ा तो वह टोकड़ी रमेश को लेकर काफी ऊपर ऊँचे आसमान में उड़ गई और उड़ते उड़ते बहुत दूर बादलों के एकदम पार लेकर चली गयी , फिर घंटे भर बाद एक विशाल महल के अंदर ले जाकर रमेश को उस टोकड़ी से नीचे उतार दिया। रमेश उस बड़े और रहस्मय महल में पहुंचकर आश्चर्चकित होकर रह गया। अब वह महल में इधर-उधर घूमकर जायजा लेने लग गया था। । घूमते- घूमते रमेश का सामना एक काफी लंबे-चौड़े व्यक्ति से हुआ जो उस समय महल में पड़े हुए बेशकीमती सामान जैसे सोना ,चांदी , सिक्का ,हीरा , जवाहरात के खजाने के पास खड़ा होकर उस खजाने की रक्षा कर रहा था।उस विशाल व्यक्ति भी अचानक रमेश को देखकर चौंक गया। उसने रमेश से पूछा कि -‘ तुम यहां तक कैसे पहुंचे ? रमेश ने उस व्यक्ति को अपनी सारी बीती बातें बता दी । वह विशाल व्यक्ति काफी दयालु भी था। उसने रमेश को कुछ खजाना देने

की पेशकश भी की , परंतु एक शर्त यह भी रखा कि रमेश बिना पूछे कोई भी चीज इस खजाने में से हाथ नहीं लगाएगा।रमेश अब काफी खुश हो गया था । उसने उस विशाल व्यक्ति की यह शर्त मान ली थी । लेकिन कुछ दिनों के बाद ही रमेश पर लालच पूरी तरह से हावी हो गया था, उसने बिना पूछे खजाने में से कुछ सोना और जवाहरात चुपचाप चुरा भी लिया था। कुछ दिनों बाद महल के रखवाले को यह अहसास भी हो गया कि खजाने से कुछ सामान गायब है। जब खजाने के रखवाले को रमेश की इस हरकत का पता चला तो वह काफी गुस्सा हो गया था।

उसने रमेश को महल में खोजा। खोजबीन करने के दौरान वह जादुई टोकरी उस विशाल व्यक्ति के पैरों के नीचे दबकर टूट-फुट गया। उस टोकरी के टूट जाने के कारण अब रमेश का अपने घर वापस जाना संभव नहीं हो सकेगा। उस टोकरी के टूट जाने के कारण रमेश धरती पर वापस कभी नहीं जा सकता था ।

जब रमेश को यह एहसास हुआ कि उसने काफी बड़ी गलती कर दी हैं तो वह उस विशाल व्यक्ति के सामने अपने आप को दोषी ठहराते हुए उससे माफी मांगा और जो भी कीमती सामान उसने चोरी किए थे ,वह सभी सामान खजाने के रखवाले को वापस कर दिया था। उसने यह वादा भी किया कि अब वह कभी भी बिना पूछे कोई सामान नहीं उठाएगा और चोरी कभी नहीं करेगा।

उस घटना के बाद रमेश अब एक बदला हुआ इंसान बन गया था। अब वह अपनी ईमानदारी और सत्य निष्ठा के साथ उस महल में रह रहा था, और खजाने की देखभाल भी कर रहा था। रमेश ने यह सीखा की लालच कभी नहीं करना चाहिए , लालच इंसान को कहीं का नहीं छोड़ता है। रमेश के चाल- चलन एवं बदले हुए स्वभाव को देखकर खजाने के रक्षक उस विशाल व्यक्ति को रमेश नामक उस लड़के पर दया आ गई। उसने फिर से उसी तरह की एक जादुई टोकरी बनाई जिस पर सवार होकर रमेश अब अपने गांव जा सकता था।

एक दिन रमेश उस टोकरी पर सवार होकर फिर से अपने गांव की ओर उड़ गया । खजाने के रक्षक ने रमेश को कुछ खजाना भी दिया था । रमेश अपने गांव आकर उस खजाने में से कुछ हीरे जवाहरात अपने गांव वालों के बीच भी बाँट दिए थे।इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि ईमानदारी और सत्य निष्ठा का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। लालच हमें क्षणिक रूप से सुख दे सकता है ,परंतु अंततः यह हमें विनाश की ओर ही ले जाता है।

पप्पू की अनोखी होशियारी

एक गाँव में पप्पू नाम का एक आदमी रहता था। पप्पू को लगता था कि वो दुनिया का सबसे होशियार आदमी है और हर काम में उसका कोई जवाब नहीं। एक दिन उसने सोचा कि गाँव वालों को अपनी होशियारी दिखानी चाहिए। उसने गाँव में घोषणा कर दी कि वो एक गधे को गाय की तरह दूध देने के लिए तैयार कर सकता है!

गाँव वाले सुनकर हैरान थे और उसे पागल समझ रहे थे, लेकिन पप्पू की शरारतें देखने का मजा ही कुछ और था, सो सब लोग इकट्ठा हो गए। पप्पू ने एक बड़े से बर्तन में पानी भर दिया और उसमें सफेद चूना मिला दिया ताकि वो दूध जैसा दिखे। फिर उसने गधे के पास जाकर उसे प्यार से थपथपाते हुए कहा, ‘‘चलो मेरे दोस्त, अब अपने दूध की शक्ति दिखाओ।’’गधा तो गधा ही था, उसने उल्टे लात मारकर पप्पू को गिरा दिया और उसके ऊपर पूरी बाल्टी का ‘‘दूध’’ गिर गया। पप्पू के चेहरे से लेकर कपड़ों तक सब सफेद हो गया, और वो पूरी तरह भीग चुका था। गाँव वाले ठहाके लगाकर हँसने लगे। पप्पू ने सोचा कि उसे कोई चालाकी करनी चाहिए और बोला, ‘‘देखो, इस गधे ने तो मुझे खुद अपने दूध का हिस्सा दे दिया। ये प्यार का प्रतीक है!’’लेकिन पप्पू का यह बयान सुनकर गाँव वाले और भी जोर से हँसने लगे और बोले, ‘‘अरे पप्पू, प्यार से तो सही, पर ये गधा तेरे प्यार को ज़रा अजीब तरीके से समझता है!’’ गाँव के लोग पप्पू के इस कारनामे को लेकर हँसी-ठिठोली करते रहे, और पप्पू खुद अपनी बेवकूफी पर हँसता-झुंझलाता घर लौट गया। उस दिन के बाद गाँव में कोई पप्पू के कारनामे भूल नहीं पाया, और हर बार पप्पू कुछ नया करता, लोग उसकी इस ‘‘दूध वाली होशियारी’’ को याद करके पेट पकड़कर हँसने लगते।

बिल्ली की जिज्ञासा

कौन कहता है कि जानवर नहीं सोचते? मेरी प्यारी बिल्ली, मिऊं, ने एक दिन ऐसा कारनामा कर दिखाया कि मैं दांतों से जीभ दबाए रह गया।

एक रात, मैं अपनी खिड़की के पास बैठा था, चाँद की रोशनी में किताब पढ़ रहा था। तभी मेरी नज़र मिऊं पर गई। वो खिड़की पर चढ़ गई थी और चाँद को घूर रही थी। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हो गई थीं, जैसे वो चाँद को छूना चाहती हो।

मैंने सोचा, ‘‘शायद उसे चाँद पनीर लग रहा है!’’

अगले ही पल, मिऊं ने छलांग लगाई। हाँ, आपने सही सुना, छलांग! उसने खिड़की से छलांग लगा दी। मैं तो सन्न रह गया।

खैर, वो चाँद तक तो नहीं पहुंच पाई, लेकिन खिड़की के नीचे रखे गमले में जा गिरी। वो इतनी जोर से गिरी कि गमला ही टूट गया।

मैं दौड़कर उसके पास गया और उसे उठाया। वो थोड़ी सी घबराई हुई थी, लेकिन जल्दी ही सामान्य हो गई।

उस दिन के बाद से, मैं जब भी चाँद देखता हूँ, तो मिऊं की वो छलांग याद आ जाती है। और हां, अब मैं जानता हूँ कि बिल्लियाँ कितनी जिज्ञासु होती हैं!

माथापच्ची-8

			5	8	1	4	3	
	5		2	4				6
	1	2						
9		8			4			
			8	1	6			
			9			7		5
						6	2	
7				9	2		1	
	9	1	4	6	5			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 7 का हल

6	7	2	9	4	8	5	3	1
8	1	9	5	6	3	2	4	7
4	3	5	2	1	7	9	6	8
9	4	7	8	2	5	6	1	3
3	2	6	4	7	1	8	9	5
5	8	1	6	3	9	7	2	4
1	9	8	3	5	6	4	7	2
7	6	4	1	8	2	3	5	9
2	5	3	7	9	4	1	8	6

एक चतुर टोपी-विक्रेता

एक बार एक टोपी विक्रेता था। वह गाँव-गाँव अपनी टोपियां बेचने जाता था। एक बार जब वह एक गाँव पहुंचा तो बहुत थक गया। उसने अपनी टोकरी नीचे रखी और पेड़ के नीचे सो गया। वृक्ष पर कुछ बंदर थे। बंदर नीचे आये और उसकी टोपियां ले गये। थोड़ी देर के पश्चात् टोपी विक्रेता जाग गया, लेकिन उसे अपनी टोपियाँ नहीं मिलीं। उसने जब ऊपर देखा तो उसकी टोपियां बंदरों के पास थी। उसने एक योजना सोची। उसने अपनी टोपी पहनी। बंदरों ने भी ऐसा ही किया। उसने अपनी टोपी जमीन पर फेंकी। बंदरों ने भी ऐसा ही किया। उसने टोपियाँ एकत्र की। वह चला गया। वह बहुत प्रसन्न था।

शिक्षा : कभी हिम्मत मत हारो।

बूझो तो जानें

इन पहेलियों को हल करके आप अपनी मनोशक्ति को मजबूत कर सकते हैं और अपने दोस्तों को भी चुनौती दे सकते हैं। तो आइए, इन मनोरंजक हिंदी पहेलियों का आनंद लें और अपनी बुद्धि को चुनौती दें!

1. पहेली: वह क्या है जो बिना जल के भी जलता है?
2. पहेली: ऐसी कौन सी चीज है जो जितनी ज्यादा होती है उतनी ही कम दिखाई देती है?
3. ऐसी कौन सी चीज है जो गरजती भी है और बरसती भी, पर उसके पास न तो बादल है और न ही पानी?
4. ऐसी कौन सी चीज है जो हमेशा आती है, पर कभी पहुंचती नहीं?
5. एक ऐसा कमरा, जिसमें न दरवाजा है न खिड़की?
6. ऐसी कौन सी चीज है जो जितना ज्यादा बढ़ती है, उतनी ही कम दिखाई देती है?

उत्तर- 1. दीपक, 2. अंधेरा, 3. ढोलक, 4. कल, 5 मशरूम 6. अंधेरा

अभिभावकों के विशेष अनुरोध और बच्चों के शिक्षाप्रद मनोरंजन के लिए हम यह विशेष पन्ना दे रहे हैं। उम्मीद है इससे पाठकों का भरपूर मनोरंजन होगा।

हंसी के फव्वारे

1.एक शराबी दारू पी पी कर मर गया लेकिन उसकी दारू के प्रति श्रद्धा तो देखो वो मर के भी यह कह गया
शराब तो ठीक थी! पर मेरा लिवर ही कमज़ोर निकला।

♦♦♦♦♦♦♦

2.एक शराबी साधू से टकरा गया तो साधू बोला: अरे मूर्ख, मैं तुझे श्राप देता हूं
शराबी: बाबाजी रुको, मुझे गिलास ले आने दो।

♦♦♦♦♦♦♦

3.उपदेशक: अगर गधे को शराब और पानी दोनों पीने को दिये जाये तो गधा क्या पियेगा
शराबी: जाहिर है पानी पियेगा
उपदेशक: क्यों?
शराबी: क्योंकि वो गधा है।

♦♦♦♦♦♦♦

4.शराबी को शुद्ध दारू पीता देख अमेरिकन बोला- पानी तो मिला लो।
शराबी- हम इंडियन हैं इतना पानी तो दारू देख के ही मुंह में आ जाता है।

♦♦♦♦♦♦♦

5.पुलिस (शराबी से)- रात के 1 बजे तुम कहां जा रहे हो?
शराबी (पुलिस से)- मैं शराब पीने के दुष्परिणाम पर भाषण सुनने जा रहा हूं।
पुलिस (शराबी से)-इतनी रात मैं तुम्हे कौन भाषण देगा?
शराबी- मेरी बीवी।

♦♦♦♦♦♦♦

6.एक शराबी एयरपोर्ट के बाहर खड़ा था। एक वर्दीधारी युवक उधर से गुजरा। शराबी ने उससे कहा एक टैक्सी ले आओ।
युवक - मैं पायलट हूं, टैक्सी ड्राइवर नही।
शराबी- नाराज क्यों होते हो भाई? तो एक हवाई जहाज ले आओ।

♦♦♦♦♦♦♦

7.शराबी: गरम क्या है?
वेटर: चाउमीन.
शराबी: और गरम?
वेटर: सूप.
शराबी: और गरम?
वेटर: उबलता पानी.
शराबी: और गरम
वेटर: आग का गोला है साले.
शराबी: लेकर आओ, बीड़ी जलानी है.

♦♦♦♦♦♦♦

8.पंजाबी शादी की पार्टी में डीजे ने पूछा- कब तक बजाना है?
मेजबान- 8-10 पैग तक बजा लो, उसके बाद तो ये सब जनरेटर की आवाज पर भी नाच लेंगें।

Page-12_Layout 1 7/8/2025 3:37 PM Page 1

राजनीतिक थ्रिलर कर्पूर में वामपंथी नेता के लुक में नजर आएंगे कुणाल घोष

● कलकत्ता विश्वविद्यालय की पूर्व सहायक परीक्षा नियंत्रक मनीषा मुखर्जी के लापता होने की पृष्ठभूमि पर आधारित है फिल्म

निज संवाददाता : कुणाल घोष ने फिल्मी दुनिया में कदम रखते ही हलचल मचा दी है। तृणमूल प्रवक्ता घोष फिल्मकार अरिंदम शील की राजनीतिक थ्रिलर फिल्म कर्पूर में वामपंथी नेता की भूमिका में नजर आएंगे। यह खबर आने के बाद से ही दर्शकों में उत्सुकता है।

पूछा जा रहा है कि तृणमूल के राज्य महासचिवों में से एक कुणाल घोष विशिष्ट वामपंथी नेता अनिल विश्वास की भूमिका में आखिर कैसे दिखेंगे? हजारों जिज्ञासाओं का अंत बीते 1 जुलाई मंगलवार को हुआ। फिल्म कर्पूर के लोगो लॉन्च के मौके पर कुणाल का अनिल विश्वास लुक सबके सामने आया। उनके साथ-साथ अन्य किरदारों के लुक भी सामने आए।इस नए सफ़र के बारे में बात करते हुए कुणाल घोष ने कहा-''हर किरदार की अपनी अलग विशेषताएं होती हैं। मैं इसके लिए बिल्कुल नया हूं। मैं एक नया कलाकार हूं। नतीजतन, मेरे निर्देशक मुझे अपनी पीठ पर लेकर चल रहे हैं। और मेरे दोस्त ब्रात्य बसु भी मुझे बहुत महत्वपूर्ण सलाह दे रहे हैं। मैं उसी के अनुसार अभ्यास कर रहा हूं। मैं बार-बार स्क्रिप्ट को ध्यान से पढ़ रहा हूं। मैंने फिल्म की स्क्रिप्ट को पीडीएफ फॉर्मेट में भी रखा है। कभी-कभी मैं कार में यात्रा करते हुए भी स्क्रिप्ट पढ़ता हूं। मैं इसी तरह कोशिश कर रहा हूं।'घोष ने यह भी कहा कि भले ही वे फ़िल्मी दुनिया में आ गए हैं, लेकिन कोई भी उनका मुकाबला नहीं कर सकता।गौरतलब है कि यह फिल्म कर्पूर नब्बे के दशक के अंत में मनीषा मुखर्जी के लापता होने की पृष्ठभूमि पर बनाई जा रही है। कलकत्ता विश्वविद्यालय की पूर्व सहायक परीक्षा नियंत्रक मुखर्जी 1997 में अचानक रहस्यमय तरीके से गायब हो गईं। उनकी घर वापसी आज तक नहीं हो पाई है। जिसके कई सैद्धांतिक-राजनीतिक संबंध हैं। उस समय राज्य में वामपंथी शासन था। इस घटना ने राज्य की राजनीति में हलचल मचा दी थी। पटकथा वर्ष 1997 और 2019 के आधार पर सेट की जाएगी। नब्बे के दशक की एक घटना से प्रेरित, अरिंदम की यह नई फिल्म कर्पूर लेखिका दीपन्विता रॉय की कहानी अंतरधानेर नेपथ्ये पर आधारित है। इस फिल्म में कुणाल घोष के अलावा रितुपर्णा सेनगुप्ता, ब्रात्य बसु, अनन्या बनर्जी आदि विभिन्न महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रहे हैं।

सन ऑफ सरदार 2 के जरिए अजय देवगन एक बार फिर से मचाएंगे धमाल

25 जुलाई को रिलीज होगी फिल्म

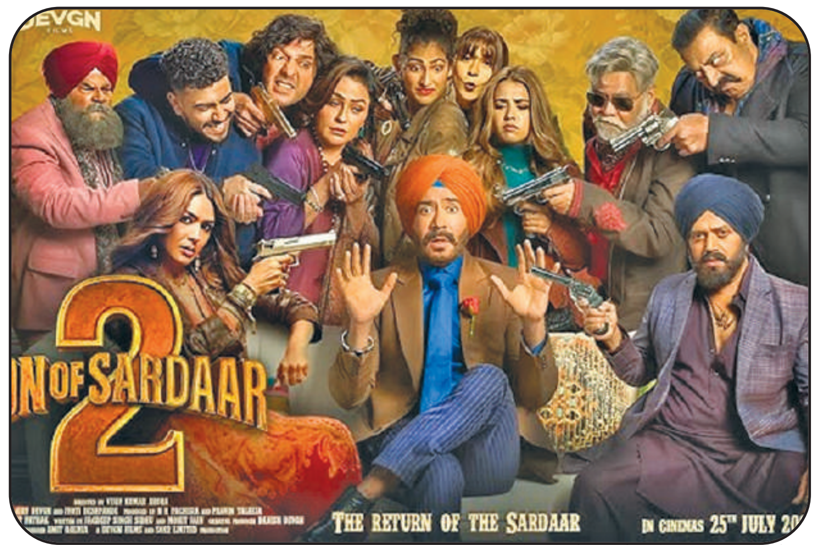

निज संवाददाता : सन ऑफ सरदार 2 के जरिए अजय देवगन एक बार फिर से धमाल मचाने आ रहे हैं। अभिनेता की बहु प्रतीक्षित फिल्म सन ऑफ सरदार 2 का टीजर वीडियो रिलीज कर दिया गया है, जो सुर्खियां बटोर रहा है। टीजर के साथ ही मेकर्स ने फिल्म की रिलीज डेट का भी ऐलान कर दिया है। अजय देवगन एक बार फिर जस्सी के रोल में फैंस का दिल लूटने के लिए आ चुके हैं। सन ऑफ सरदार में जस्सी यानी अजय देवगन पंजाब में तो सर्वाइव कर गए, पर क्या स्कॉटलैंड में टिक पाएंगे?सन ऑफ सरदार 2 के टीजर में कॉमेडी से लेकर एक्शन की शानदार झलक दिखाई गई है। टीजर में दिखाया गया है कि जस्सी यानी अजय देवगन एक विदेशी शादी के चक्कर में फंस जाते हैं और वहीं से सारे स्यापे शुरू हो जाते हैं। टीजर में एक्टर मुकुल देव की झलक भी दिखी, जिनका हाल ही निधन हो गया था। उन्हें देख फैंस भावुक हो गए।सन ऑफ सरदार 2 के पंच पर हंसे यूजर्सटीजर में एक डायलॉग है 13 साल पहले ले गई। और इस पंच पर यूजर्स की हंसी छूट गई। अजय देवगन का डायलॉग पाजी कदी हंस भी लिया करो भी पसंद आया है। सन ऑफ सरदार में जस्सी (अजय देवगन) पंजाब में धमाल मचाता नजर आया था, पर अब उसका जलवा स्कॉटलैंड में दिखेगा।25 जुलाई को रिलीज होगी सन ऑफ सरदार 2अजय देवगन ने सन ऑफ सरदार 2 का अनाउंसमेंट वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया। साथ में बताया कि फिल्म 25 जुलाई को थिएटर्स में रिलीज होगी। इसे विजय कुमार अरोड़ा ने डायरेक्ट किया है। सन ऑफ सरदार 2 साल 2012 में आई इसी नाम की फिल्म का सीक्वल है। अब 13 साल बाद अजय फिर से इस एक्शन-कॉमेडी के साथ धमाल मचाने को तैयार हैं। लेकिन देखना होगा कि यह सन ऑफ सरदार जैसी हिट रह पाती है या नहीं।सन ऑफ सरदार 2 की कास्टफिल्म में स्टार्स की फौज है। इसमें संजय दत्त, संजय मिश्रा, मृणाल ठाकुर, साहिल मेहता, मुकुल देव, रवि किशन, दीपक डोबरियाल, चंकी पांडे, कुब्रा सैत, नीरू बाजवा, शरत सक्सेना, विंदू दारा सिंह और अश्विनी कालेसकर नजर आएंगी।

खबरें

विद्यासागर कॉलेज फार वीमेन को मिला नैक का ग्रेड 'ए' सम्मान

यह मान्यता हमारे लिए एक मील का पत्थर : डॉ. सुतापा राय

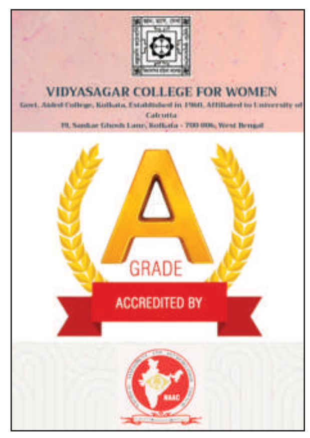

निज संवाददाता : कोलकाता के विद्यासागर कालेज फार वीमेन को राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा आयोजित तीसरे चक्र के मूल्यांकन में 'ए' ग्रेड से सम्मानित किया गया है। यह कालेज पूर्वी भारत में महिला शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र है।

नैक द्वारा आयोजित तीसरे चक्र के मूल्यांकन में ए ग्रेड (7-बिंदु पैमाने पर सीजीपीए 3.05) से यह कालेज सम्मानित हुआ है। यह उपलब्धि इस संस्थान की अकादमिक उत्कृष्टता, समावेशी विकास, डिजिटल नवाचार, सामाजिक सेवा और मूल्य धारित शिक्षा के प्रति सतत प्रतिबद्धता का प्रमाण है। संस्थान को यह सम्मान मिलने पर विद्यासागर कालेज फार वीमेन की प्राचार्या डा. सुतापा राय ने कहा कि 'ए' ग्रेड की प्राप्ति न सिर्फ एक मान्यता है, बल्कि यह एक प्रेरणा है। यह प्रत्यायन हमारे लिए एक मील का पत्थर है और एक मिशन भी। एक ऐसा मिशन जो विरासत में निहित है। यह मिशन समावेशिता में रचा-बसा और नवाचार से सशक्त है। उन्होंने कहा कि इस कालेज के लिए एक विशेष गौरव का क्षण है। हम यह सम्मान पाकर गौरवान्वित महसूस करते हैं।

इस मूल्यांकन को प्राप्त करने में कालेज के सभी शिक्षकों, शिक्षाविदों, छात्रों व पूर्व छात्रों की प्रमुख भूमिका रही है। नैक यानी राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद शिक्षण संस्थानों को ग्रेडिंग देता है।

इसके आधार पर ही कालेजों की गुणवत्ता तय होती है। शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता के आधार पर उन्हें नेशनल असेसमेंट एंड एक्रीडेशन काउंसिल की ओर से यह ग्रेड दिया जाता है।

एमपी के 50 फीसद ग्रामों को दुग्ध नेटवर्क से जोड़ने की सशक्त पहल

♦श्वेत क्रांति की राह पर राज्य

अजय कुमार मोहता
(संपादक, गंभीर समाचार)

भोपाल : मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों को आर्थिक रूप से समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएं लागू की जा रही हैं। इन योजनाओं में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देना एक प्रमुख प्राथमिकता है, क्योंकि यह न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करता है, बल्कि लाखों पशुपालकों और किसानों की आय में स्थायी वृद्धि का माध्यम भी बनता है। इसी उद्देश्य को केंद्र में रखते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राज्य के 50 फीसद गांवों को दुग्ध नेटवर्क से जोड़ने की घोषणा की है, जो प्रदेश में दुग्ध क्रांति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दुग्ध सहकारी समितियों का विस्तार

राज्य सरकार की इस पहल के अंतर्गत अब तक नई 381 दुग्ध सहकारी समितियों का गठन किया जा चुका है, जिससे 9500 से अधिक दुग्ध उत्पादकों को सहकारी डेयरी प्रणाली से जोड़ा गया है। यह कदम न केवल दुग्ध उत्पादकों को संगठित रूप में काम करने का अवसर देता है, बल्कि उन्हें बाजार से बेहतर दाम दिलाने और उत्पादन प्रक्रिया को व्यवस्थित करने में भी सहायक सिद्ध हो रहा है। सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को एक सशक्त मंच प्राप्त होता है, जहां वे अपने उत्पाद का उचित मूल्य पा सकते हैं और तकनीकी सहयोग भी ले सकते हैं। दुग्ध विकास को गति देने के लिए केंद्र सरकार का भी विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने मध्यप्रदेश में डेयरी विकास योजना को अधिक लाभकारी बनाने के लिए आवश्यक संशोधन करने के निर्देश दिए हैं। इससे राज्य में लागू योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ेगी और दुग्ध क्षेत्र में और अधिक निवेश आकर्षित किया जा सकेगा।

दुग्ध उत्पादन और विपणन की संभावनाएं

राज्य सरकार अब दुग्ध उत्पादन की 72 फीसद संभावित क्षमता को उपयोग में लाने और दुग्ध उत्पादों की बाजार पहुंच को 15 फीसद तक बढ़ाने की दिशा में कार्य कर रही है। इसका सीधा लाभ यह होगा कि दुग्ध उत्पादक किसानों को अधिक बाजार मिलेगा, जिससे उनका उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंच सकेगा और बिचौलियों की भूमिका घटेगी। इससे उनकी आय में भी स्पष्ट वृद्धि होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दुधारू पशुओं की नस्ल सुधार पर भी विशेष बल दिया है। इसके लिए राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के सहयोग से देशी नस्ल के पशुओं के लिए मॉडल फार्म विकसित किए जा रहे हैं। यह पहल न केवल दुग्ध उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होगी, बल्कि देशी नस्लों के संरक्षण और संवर्धन में भी अहम भूमिका निभाएगी। साथ ही, भोपाल दुग्ध संघ के अंतर्गत हीफर रियरिंग सेंटर की स्थापना से पशु प्रबंधन के क्षेत्र में एक नया अध्याय शुरू होगा।

मुख्यमंत्री द्वारा यह भी सुनिश्चित किया गया है कि दुग्ध उत्पादक किसानों को खरीदे गए दूध की कीमत का समय पर भुगतान किया जाए। इसके लिए डिजिटाइजेशन को तेजी से लागू किया जा रहा है। इससे भुगतान प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी और किसानों का विश्वास बढ़ेगा। डिजिटल रिकॉर्ड रखने से न केवल लेन-देन पारदर्शी होगा, बल्कि अनियमितताओं पर भी अंकुश लगेगा।

सांची ब्रांड को वैश्विक पहचान

राज्य सरकार 'सांची' ब्रांड की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए भी कई पहल कर रही है। यह ब्रांड मध्यप्रदेश की पहचान बन चुका है और अब इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचाने की रणनीति पर कार्य किया जा रहा है। उच्च गुणवत्ता और भरोसे के कारण सांची ब्रांड को उपभोक्ताओं का विशेष समर्थन प्राप्त है, जिसे और भी व्यापक स्तर पर फैलाने की योजना है।

दुग्ध संघों में संग्रहण और मूल्य वृद्धि

प्रदेश के विभिन्न दुग्ध संघों ने दुग्ध संग्रहण में उल्लेखनीय वृद्धि की है। जबलपुर और ग्वालियर दुग्ध संघों में संग्रहण की मात्रा में विशेष रूप से वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, इन दोनों संघों को दो-दो करोड़ रुपए की कार्यशील पूंजी भी उपलब्ध कराई गई है ताकि किसानों को समय पर भुगतान सुनिश्चित किया जा सके। राज्य के अन्य दुग्ध संघों में भी दूध की कीमत में ढाई से छह रुपए प्रति लीटर तक की वृद्धि की गई है, जो किसानों के हितों की रक्षा और उनकी आय में वृद्धि की दिशा में सराहनीय कदम है। दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देना न केवल पशुपालकों और किसानों की आमदनी बढ़ाता है, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के नए अवसर भी सृजित करता है। दूध एक ऐसा उत्पाद है जिसकी मांग स्थायी रूप से बनी रहती है और इसके माध्यम से ग्रामीण युवाओं को स्थायी रोजगार दिया जा सकता है। यही कारण है कि मध्यप्रदेश सरकार दुग्ध नेटवर्क को गाँव-गाँव तक फैलाने के लिए रणनीतिक रूप से कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार का दुग्ध नेटवर्क का विस्तार और डेयरी क्षेत्र में सुधारात्मक कदम एक 'दुग्ध क्रांति' की ओर संकेत करते हैं। राज्य में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने से न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, बल्कि प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नया जीवन मिलेगा। सरकार द्वारा की जा रही इन पहलों का सकारात्मक प्रभाव आने वाले वर्षों में और अधिक स्पष्ट रूप से दिखेगा, जब मध्यप्रदेश देश के अग्रणी दुग्ध उत्पादक राज्यों में शामिल होगा। इस समग्र रणनीति और दूरदर्शिता से यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश दुग्ध क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ रहा है।

बसपा की हुंकार ने नीतीश, लालू और बीजेपी खेमे में बढ़ाई बेचैनी

रामाशीष

बिहार की सियासत में चुनावी बिसात बिछ चुकी है। हर दल अपनी-अपनी गोटियां चला रहा है और समीकरणों की जोड़-घटाव में दिन-रात जुटा है। लेकिन इस बार जो सबसे चौंकाने वाली और साहसी एंट्री हुई है, वह बहुजन समाज पार्टी की है। मायावती की पार्टी ने अब तक बिहार में बड़ी भूमिका नहीं निभाई, लेकिन अब पार्टी के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर आकाश आनंद की एंट्री ने कई सियासी समीकरणों को झकझोर कर रख दिया है। पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में छत्रपति शाहूजी महाराज की जयंती पर हुए सम्मेलन में आकाश आनंद ने साफ कर दिया कि बसपा अब बिहार में दलितों के साथ-साथ कुर्मी और कोइरी जातियों को साधने के लक्ष्य के साथ मैदान में उतरेगी। उन्होंने बसपा के 2025 विधानसभा चुनाव में सभी 243 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा भी कर दी। लेकिन अब सवाल यह है कि क्या बसपा सचमुच बिहार की सियासत को प्रभावित कर सकती है? या फिर यह भी एक चुनावी शिगूफा बनकर रह जाएगी?

सवाल बड़ा है और जवाब उससे भी ज्यादा पेचीदा।बिहार की राजनीति में 'लव-कुश समीकरण' शब्द पहली बार नीतीश कुमार के राजनीतिक अभियान में प्रमुखता से सामने आया था। लव यानी कुशवाहा (कोइरी) और कुश यानी कुर्मी जाति का गठबंधन। नीतीश खुद कुर्मी जाति से आते हैं और उन्होंने कुशवाहा समाज के नेताओं के साथ मिलकर एक मजबूत सामाजिक समीकरण खड़ा किया, जिसने उन्हें 2005 में लालू यादव की सत्ता से बेदखल करने में मदद दी। यह समीकरण दो दशकों से नीतीश की राजनीति की बुनियाद बना हुआ है। लेकिन अब समय बदल रहा है। बीजेपी ने सम्राट चौधरी जैसे कुशवाहा नेता को बिहार प्रदेश अध्यक्ष बनाकर इस समीकरण में सेंध लगाने की कोशिश की है। वहीं उपेंद्र कुशवाहा भी एक बार फिर राजनीति में सक्रिय हैं और खुद को लव-कुश के नए प्रतीक के तौर पर पेश कर रहे हैं। ऐसे में बसपा ने इस दरार का फायदा उठाने की रणनीति बनाई है। आकाश आनंद ने ठीक उसी बिंदु पर निशाना साधा है, जिससे नीतीश कुमार को सबसे ज्यादा चोट लग सकती है।आकाश आनंद ने अपने पूरे भाषण में छत्रपति शाहूजी महाराज को सामाजिक न्याय का प्रतीक बनाकर पेश किया।

नीतीश के जातीय गढ़ में मायावती की पार्टी की घुसपैठ से क्या बन पाएगा कुर्मी-कोइरी समीकरण?

उन्होंने बताया कि कैसे शाहूजी महाराज ने अपने शासन में 50 फीसदी आरक्षण लागू किया और समाज के दलित व पिछड़े तबकों को सम्मान दिलाया। यह सिर्फ इतिहास का संदर्भ नहीं था। यह एक गहरी रणनीति थी। शाहूजी महाराज खुद कुर्मी जाति से आते थे और बसपा ने उन्हें आगे कर कुर्मी समाज को भावनात्मक रूप से जोड़ने की कोशिश की है। यही नहीं, बसपा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष अनिल कुमार भी कुर्मी जाति से हैं। यानी एक जातीय पहचान के जरिए पूरे समुदाय को जोड़ा जा रहा है और दलितों के साथ कुर्मी वोटबैंक को जोड़ने की जमीन तैयार की जा रही है। यह वही सामाजिक इंजीनियरिंग है जो मायावती ने उत्तर प्रदेश में की थी। वहां उन्होंने दलितों के साथ कुर्मी, कोइरी और अति पिछड़ी जातियों को जोड़कर एक व्यापक बहुजन गठबंधन खड़ा किया था और 2007 में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई थी।

बिहार की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जातियों की आबादी करीब 16 फीसदी है। कुर्मी समाज लगभग 2.5 फीसदी और कोइरी यानी कुशवाहा जाति लगभग 5 फीसदी मानी जाती है। यानी कुल मिलाकर करीब 23-24 फीसदी वोटर ऐसे हैं, जो इस बसपा के सामाजिक समीकरण का हिस्सा बन सकते हैं। अगर बसपा इस वोट बैंक का आधा भी अपने पक्ष में करने में सफल रही, तो वह चुनावी नतीजों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है। हालांकि, यह भी सच है कि बिहार में बसपा की जमीनी पकड़ बेहद कमजोर है। पार्टी अब तक कोई बड़ा जनाधार नहीं बना सकी है। लेकिन यही वजह है कि अब संगठन को मजबूत करने की कवायद शुरू हो चुकी है। आकाश आनंद के नेतृत्व में पार्टी ने हर जिले में सम्मेलन, समीक्षाएं और बूथ स्तर की बैठकों का सिलसिला शुरू कर दिया है।बसपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि क्या वह खुद को सिर्फ उत्तर प्रदेश तक सीमित रहने वाली पार्टी के बजाय एक राष्ट्रीय ताकत के तौर पर स्थापित कर पाएगी? बिहार में चुनाव लड़ना और जीतना दो अलग चीजें हैं। खासकर तब, जब वहां पहले से ही आरजेडी, जेडीयू और बीजेपी जैसी मजबूत पार्टियां मौजूद हों। दूसरी चुनौती यह है कि बसपा के जितने भी विधायक अब तक बिहार में जीतकर आए उन्होंने बाद में दूसरी पार्टियों का दामन थाम लिया। संगठनात्मक स्तर पर बसपा की स्थिति कमजोर रही है तीसरी चुनौती यह है कि बिहार की राजनीति में स्थानीय चेहरे बेहद मायने रखते हैं। लोगों को जमीन से जुड़े नेता चाहिए, जो उनके मुद्दों को उठाएं। आकाश आनंद अभी एक बाहरी चेहरे के रूप में देखे जा रहे हैं। उन्हें खुद को बिहार की मिट्टी का नेता साबित करना होगा।हालांकि, मायावती के पास अनुभव है और आकाश आनंद के पास ऊर्जा। अगर इन दोनों का संतुलन बना, तो बसपा न सिर्फ जातीय समीकरणों में सेंध लगा सकती है बल्कि खुद को एक नए विकल्प के रूप में भी स्थापित कर सकती है। नीतीश कुमार के लिए यह सबसे गंभीर खतरा है। अगर बसपा ने कुर्मी और कोइरी वोट बैंक में सेंध लगा दी, तो उनके लिए सत्ता बचा पाना मुश्किल हो जाएगा। बीजेपी पहले ही इस वोट बैंक में घुसपैठ कर रही है और अब बसपा की एंट्री से मुकाबला त्रिकोणीय हो जाएगा।

आरजेडी को भी चिंता है कि कहीं पिछड़े वोटों का एक हिस्सा बसपा की ओर न खिसक जाए। दलित वोटरों में भी बदलाव की संभावना है, खासकर उन इलाकों में जहां मायावती की नीतियों का असर रहा है।बसपा की इस बार की रणनीति साफ है जातियों को जोड़ो, सामाजिक न्याय की बात करो और खुद को एक वैकल्पिक ताकत के रूप में स्थापित करो। यह प्रयोग नया नहीं है, लेकिन बिहार की राजनीति में इस बार अगर मायावती की बसपा लव-कुश समीकरण को तोड़ने में सफल हुई तो यह 2025 के चुनाव नतीजों को पूरी तरह बदल सकता है अब देखना यही है कि क्या आकाश आनंद बिहार की सियासत में नई लकीर खींच पाएंगे या फिर यह भी एक असफल प्रयोग बनकर रह जाएगा। लेकिन इतना तय है कि बसपा की हुंकार ने नीतीश, लालू और बीजेपी के खेमे में बेचैनी जरूर बढ़ा दी है।

कैसे आया ट्रैक पर पानी? मेट्रो ने बनाई जांच कमेटी

निज संवाददाता : मेट्रो टनल की छत से पानी फव्वारे की गति से बह रहा था। लाइन पानी में डूबी हुई थी।यह नजारा गत सोमवार सुबह सेंट्रल और चांदनी चौक स्टेशनों के बीच की है। इस घटना ने स्वाभाविक रूप से मेट्रो अधिकारियों के कान खड़े कर दिए। अधिकारी गत मंगलवार रात तक इस बारे में कुछ नहीं कह पाए कि सड़क पर जमा पानी टनल की छत में रिसाव की वजह से लाइन पर आया या कुछ और। सोमवार रात को यात्री सेवाएं बंद होने के बाद मेट्रो इंजीनियरों ने इलाके का निरीक्षण किया। वे एक-दो दिन में अपनी रिपोर्ट देंगे।हालांकि, मेट्रो अधिकारियों का खुद कहना है कि छत से जिस धारा की गति से पानी टनल में घुसा है, उससे इस टनल की सुरक्षा पर सवाल खड़े हो गए हैं। साथ ही, अगर मानसून की शुरुआत में ही इस तरह से बारिश का पानी टनल में घुसा तो भारी बारिश होने पर क्या होगा, यह अधिकारी सोच रहे हैं। मेट्रो इंजीनियरों का कहना है कि कोलकाता में मेट्रो करीब 40 साल से चल रही है। हालांकि, शुरुआत में यह एस्प्लेनेड से भवानीपुर (अब नेताजी भवन) तक चलती थी। फिर धीरे-धीरे इसका दायरा बढ़ता गया। यहां तक कि सुरंग का वह हिस्सा भी जिससे पानी बहकर आया है, वह बहुत पुराना नहीं है। नतीजतन, यह कहा जा सकता है कि वहां गंभीर समस्या है। इंजीनियरों का कहना है कि वे जांच कर रहे हैं कि सुरंग की छत पर ड्रेनेज पाइपलाइन है या नहीं और उसमें रिसाव तो नहीं हुआ है। गौरतलब है कि पिछले शनिवार के बाद सोमवार को भी सुरंग में पानी घुसने के कारण आंशिक मेट्रो सेवाएं रोकनी पड़ी थीं। सुरंग में पानी कैसे घुस रहा है, इसकी जांच के लिए एक विशेष टीम भी बनाई गई है। मेट्रो इस बात की भी विशेष निगरानी कर रही है कि सड़क पर जमा पानी नगर निगम की ड्रेनेज नाले के जरिए सुरंग में तो नहीं घुस रहा है। अधिकारियों के एक वर्ग का दावा है कि अगर सही तरीके से रखरखाव किया गया होता तो पानी ड्रेनेज नाले के जरिए निकल जाता। दीवारों में दरारें आसानी से देखी जा सकती थीं। और इस मामले में कर्मचारियों की कमी एक बड़ी वजह है। तो स्वाभाविक रूप से कोलकाता मेट्रो सुरंग की सुरक्षा को लेकर सवाल उठने लगे हैं।

अंडा उत्पादन प्रोत्साहन योजना के तहत 20 हजार लोगों को मिला है रोजगार : देवनाथ

निज संवाददाता : मर्चेंट चैंबर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री (एमसीसीआई) ने 'ग्रामीण आजीविका से वैश्विक बाजार तक : पश्चिम बंगाल के पशुधन और जलीय कृषि क्षमता का विस्तार' विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया।इस मौके पर राज्य के पशु संसाधन विकास मंत्री स्वपन देबनाथ ने पशुपालन और मत्स्यपालन पर सम्मेलन आयोजित करने के लिए एमसीसीआई को बधाई दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का भी मानना है कि इस क्षेत्र में संगठित उद्योग बनने की अपार संभावनाएं हैं। देबनाथ ने बताया कि पश्चिम बंगाल सरकार ने मुर्गीपालन के लिए अंडा उत्पादन प्रोत्साहन योजना 2017 को 31 अगस्त 2025 तक बढ़ा दिया है। इस योजना के तहत अब तक अंडे का कुल उत्पादन बढ़कर 33.90 करोड़ रुपये हो गया है और 20,000 लोगों को रोजगार मिला है।मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पश्चिम बंगाल में अंडे की कुल मांग 1528 करोड़ है, जबकि राज्य ने 1690 करोड़ अंडे का उत्पादन किया है। इसलिए, पश्चिम बंगाल अंडे के उत्पादन में आत्मनिर्भर है। देबनाथ ने बताया कि विभाग ने जलपाईगुड़ी में पोल्ट्री ब्रीडिंग फर्म की स्थापना की है। पश्चिम बंगाल सरकार ने फुटबॉल विश्व कप 2022 के लिए कतर को मांस निर्यात किया।इस मौके पर राज्य के पंचायत व ग्रामीण विकास मंत्री प्रदीप मजूमदार ने कहा कि "अनंदधारा" के तहत पश्चिम बंगाल सरकार ने 12 लाख 10 हजार स्वयं सहायता समूहों का गठन किया है, जहां आईआईएम के तहत गुणवत्तापूर्ण स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षित किया जाता है। उन्होंने पश्चिम बंगाल में मछली की लोचदार मांग का उल्लेख किया। पश्चिम बंगाल ने 2024 तक 76.5 लाख मीट्रिक टन का उत्पादन किया और कॉर्पोरेट पश्चिम बंगाल में डेयरी व्यवसाय में प्रवेश कर सकते हैं।मत्स्य पालन, जलीय कृषि, जलीय संसाधन और मछली पकड़ने के बंदरगाह राज्य मंत्री (आईसी) बिप्लब रॉय चौधरी ने कहा कि पश्चिम बंगाल भारत में मछली का सबसे बड़ा उत्पादक है। अब राज्य ने बिहार, ओडिशा, झारखंड को मछली निर्यात करना शुरू कर दिया है। मंत्री ने कहा कि अभय पुकुर योजना के तहत राज्य सरकार ने 33 दुर्लभ प्रजातियों की मछलियां खरीदी हैं। विभाग ने इस खरीद योजना के लिए पहले ही 20 तालाबों की पहचान कर ली है। राज्य अब बड़ी मछलियों के शिकार पर ध्यान केंद्रित कर रहा है और हिल्सा मछली पकड़ने पर भी विशेष जोर दे रहा है। इस मौके पर विशेष सचिव, पशु संसाधन विकास विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार डॉ. अभिजीत शेवाले (आईएएस) ने कहा कि पुरुलिया के एक सुदूर ब्लॉक में किसान मुर्गे और बकरे का वजन नहीं करवा रहे थे। डॉ. शेवाले ने बताया कि एफपीसी ने बकरी का चारा पेश किया है जो प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है। कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल पशुधन विकास निगम लिमिटेड (डब्ल्यूबी एलडीसीएल) के प्रबंध निदेशक डॉ. उत्पल कुमार कर्मकार ने बताया कि पिछले साल पश्चिम बंगाल पशुधन विकास निगम लिमिटेड (डब्ल्यूबीएलडीसीएल) ने कुल 1600 करोड़ रुपये का कारोबार किया। डॉ. कर्मकार ने बताया कि ब्रॉयलर इंटीग्रेटेड प्रोजेक्ट के तहत 2800 किसानों को चिकन फीड मिल रही है। एमसीसीआई के अध्यक्ष अमित सरावगी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि पशुपालन और मत्स्य पालन क्षेत्र पारंपरिक प्रथाओं से आधुनिक, प्रौद्योगिकी-संचालित उद्योगों में विकसित हुए हैं, जो भारत की आर्थिक वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो खाद्य सुरक्षा, रोजगार और हमारे देश के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, खासकर पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में। अंतर्देशीय मछली उत्पादन में राज्य पहले स्थान पर है, जो भारत के कुल मत्स्य उत्पादन में 18.5 फीसदी का योगदान देता है, और झींगा और सजावटी मछली उत्पादन में अग्रणी है। पशुधन में, पश्चिम बंगाल भारत के मांस उत्पादन में 12.62 फीसदी हिस्सेदारी रखता है, जिसमें मुर्गी और बकरी का मांस प्रमुख योगदानकर्ता हैं।एमसीसीआई के पशुपालन और मत्स्य पालन परिषद के अध्यक्ष पार्थ सूर ने अपने थीम एड्रेस में कहा कि पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्र पश्चिम बंगाल के ग्रामीण समुदायों के लिए महत्वपूर्ण हैं। सत्र का समापन एमसीसीआई के सचिव और कृषि बागवानी व खाद्य प्रसंस्करण परिषद के अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

Page-14_Layout 1 7/8/2025 3:36 PM Page 1

जानें अपना राशिफल

मेष

फायदेमंद समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी विदेश में काम करने पर विचार हो सकता है, अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है।

वृषभ

तरक्की करने वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से समय खराब हो सकता है, सावधान रहें।

मिथुन

प्रभावशाली समय हो सकता है, कोई रुका हुआ सरकारी काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें। कोई मांगलिक कार्य में जाना पड़ सकता है जो फायदेमंद होगा, मन प्रसन्न रहेगा।

कर्क

आशा भरा समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है, प्रयास करें। किसी नये व्यक्ति से काम करने पर फायदा भी हो सकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखें।

सिंह

खाने-पीने का पूरा ध्यान रखने की आवश्यकता है नहीं तो बीमार भी हो सकते हैं। कोई शारिरिक चोट लग सकती है, सावधान रहें। मन वश में रखें। सफलता मिलेगी।

कन्या

काम-धन्धे वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है। कोई बहुत बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

तुला

परिपूर्ण समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, कोई रुका हुआ धन वापस मिल सकता है प्रयास करें।

वृश्चिक

भ्रमण करने वाला समय हो सकता है, किसी नये व्यक्ति से काम करने पर विचार हो सकता है जो सफल होगा, पूरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है, मन में उत्साह रहेगा।

धनु

कुशलता वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं, फायदा अवश्य होगा, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है, प्रयास करें, परिवार को प्रसन्न रखें।

मकर

सहायता मिलने वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी बाहरी आदमी से लाभ भी हो सकता है, मन में उत्साह रहेगा।

कुंभ

हिम्मत वाला समय हो सकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी नये व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है। पूरी नैतिकता से काम करना जरूरी है, आपसी सहमति बनाये रखें।

मीन

कठिनाई वाला समय हो सकता है इसलिए शान्ति से सिर्फ काम करने की आवश्यकता है। किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखें।

घर का वास्तु दोष दूर करने में शुभकारी होता है स्वास्तिक

निज संवाददाता : भारतीय संस्कृति और धर्म में स्वास्तिक को बेहद शुभ और पवित्र चिन्ह माना जाता है। स्वास्तिक न सिर्फ धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त होता है, बल्कि वास्तु और ज्योतिष शास्त्र में भी इसका विशेष महत्व होता है। स्वास्तिक घर में पॉजिटिव एनर्जी को आकर्षित करता है और निगेटिव एनर्जी दूर करने में सहायक होता है। माना जाता है कि यदि किसी के घर में वास्तु दोष होता है, तो उनको दूर करने के लिए घर पर स्वास्तिक चिह्न जरूर बनाना चाहिए। मंगलवार और शनिवार के दिन घर के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक बनती है, तो इससे भविष्य में शुभता मिलने के योग बढ़ते हैं। घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने के साथ घर के सदस्यों को मानसिक शांति और सफलता प्रदान करता है। घर में बड़े से बड़ा वास्तु दोष क्यों न हो, आप स्वास्तिक उपाय से इसको दूर कर सकते हैं।

इन दो दिन बनाएं स्वास्तिक चिह्न

घर के किसी भी स्थान के वास्तु दोष को दूर करने के लिए सप्ताह के दो दिनों में स्वास्तिक जरूर बनाना चाहिए। मंगलवार-शनिवार को स्वास्तिक बनाने का विशेष महत्व माना जाता है। इन दोनों दिन स्वास्तिक बनाने का विशेष कारण यह होता है कि इन दोनों दिनों का संबंध मंगल और शनि ग्रह से होता है। मंगल ग्रह ऊर्जा, साहस और शक्ति का प्रतीक होता है, तो वहीं शनि ग्रह कर्म और न्याय का प्रतीक होता है। अगर किसी व्यक्ति के जीवन में वास्तु दोष के कारण परेशानियां आती हैं, तो यह उपाय काफी प्रभावी साबित हो सकता है।

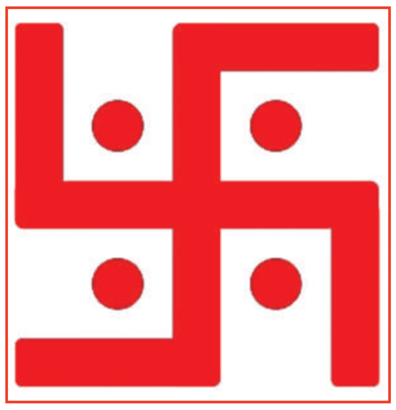

ऐसे बनाएं स्वास्तिक

स्वास्तिक बनाने से पहले घर के मुख्य द्वार को अच्छे से साफ कर लें। फिर मुख्य द्वार पर हल्दी, कुमकुम, रोली या चंदन का स्वास्तिक बनाएं। इससे घर की पवित्रता और सकारात्मकता बढ़ती है। इस चिन्ह को बनाते समय ऊँ नम: शिवाय और ऊँ श्री गणेशाय नम: मंत्र का जाप करें। इससे शुभता और आध्यात्मिकता बढ़ती है। स्वास्तिक के चारों ओर शुभ-लाभ लिखना काफी शुभ माना जाता है। यह सुख-समृद्धि को आकर्षित करता है। वहीं इसके चारों कोनों पर चावल और फूल अर्पित करने से वातावरण में पॉजिटिविटी बनी रहती है। हर मंगलवार और शनिवार को नियमित रूप से स्वास्तिक बनाना शुभ है। इससे घर में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है।

स्वास्तिक बनाने से मिलने वाले लाभ

अगर घर में किसी तरह की निगेटिव एनर्जी प्रभावी होती हैं, तो स्वास्तिक उसकी एनर्जी को खत्म कर देता है और पॉजिटिव एनर्जी का संचार करता है। घर में स्वास्तिक का चिन्ह बनाने से धन का प्रवाह अच्छा बना रहता है और जातक अपने व्यापार और नौकरी में भी उन्नति करता है। यह उपाय धन हानि को रोकने में भी सहायक है। इस उपाय को करने से मानसिक तनाव दूर होता है और घर के सदस्यों में प्रेम और सौहार्द बना रहता है।

हाथों की लकीरें देती हैं करोड़पति बनने के संकेत

निज संवाददाता : हर इंसान की ख्वाहिश होती है कि वह जीवन में खूब तरक्की करे, धन-संपत्ति से भरपूर हो और किसी चीज की कमी न रहे। कुछ लोगों की किस्मत में धन-दौलत की कमी नहीं होती। हालांकि, हमारे हाथों की रेखाएं भी हमारी किस्मत के बारे में बहुत कुछ बताती हैं। हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार हमारे हाथों की लकीरों में भविष्य से जुड़ी कई बातें छुपी होती हैं, चाहे वह धन प्राप्ति हो, विवाह का योग या फिर उम्र का अनुमान। ऐसे में आज हम जानेंगे धन त्रिकोण के बारे में जो करोड़पति बनने के संकेत देता है।

हथेली में करोड़पति बनने का संकेत

यदि किसी व्यक्ति के हाथ में सूर्य पर्वत (अनामिका उंगली के नीचे का क्षेत्र) उभरा और स्पष्ट दिखाई देता है, तो इसे शुभ संकेत माना जाता है। ऐसे लोग आमतौर पर भाग्यशाली होते हैं और उन्हें जीवन में आर्थिक रूप से बहुत सफलता मिलती है। विशेष रूप से, यदि हृदय रेखा से कुछ रेखाएं निकलकर सूर्य पर्वत की ओर जाती हैं और इन पर त्रिकोण या छोटे-छोटे वर्ग बने हों, तो ये रेखाएं दर्शाती हैं कि व्यक्ति के करोड़पति बनने के प्रबल योग हैं। हस्तरेखा शास्त्र में यदि हाथ में वलय आकार का कोई चिन्ह दिखाई दे, तो इसे अत्यंत शुभ माना गया है। यह चिन्ह संकेत देता है कि व्यक्ति न केवल धनी बल्कि अत्यधिक सम्पन्न यानी अरबपति बन सकता है। इस प्रकार का निशान धन, ऐश्वर्य और सफलता की ओर इशारा करता है।

हाथ में कहां बनता है धन त्रिकोण

धन त्रिकोण को मनी ट्राएंगल भी कहा जाता है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में यह मनी ट्राएंगल मौदूद होता है, तो उसे जीवन में कभी भी बड़े आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ता है। इन लोगों के पास भरपूर धन-दौलत होता है। ये लोग अपने जीवन में अच्छी खासी प्रॉपर्टी बनाते हैं। हथेली पर मनी ट्राएंगल तब बनता है जब मस्तिक रेखा से धन रेखा और एक बुध रेखा मिलती है। इन तीन रेखाओं के मिलने से धन त्रिकोण बनता है। इसमें धन रेखा शनि पर्वत की ओर जाती है।

जरूरी पूजा सामग्री व नियम के साथ ही करें कांवड़ यात्रा

11 जुलाई से शुरू होगा बोलबम का नारा

निज संवाददाता : सावन माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से शुरू होकर कृष्ण चतुर्थी तक कांवड़ यात्रा होती है। सड़क पर लाखों कांवड़ यात्री बोल बम के नारे के साथ में पवित्र नदियों से जल भरकर शिवालयों में जाएंगे। इसके बाद उस जल से अपने आराध्य का अभिषेक करेंगे। पहले के समय में सिर्फ साधु संधि कांवड़ यात्रा निकाल करते थे। मगर, जैसे समय बदला वैसे-वैसे देश के हर वर्ग, हर जाति, समुदाय के लोग इसमें शामिल होते चले गए। पहले युवा ही कांवड़ लेकर निकलते थे क्योंकि रास्ते दुर्गम होते थे और सुरक्षा की चुनौतियां भी होती थीं। मगर, धीरे-धीरे इसमें किशोर, वयस्क और बुजुर्ग भी जुड़ने लगे। इस साल 11 जुलाई 2025 से कांवड़ यात्रा की शुरुआत होने जा रही है। कांवड़ यात्रा शिव भक्तों के लिए बहुत खास होती है। यह बेहद पुण्यदायी यात्रा है, जिसमें भक्त विभिन्न पवित्र स्थानों जैसे हरिद्वार, गोमुख, सुल्तानगंज आदि से गंगाजल भरकर पैदल यात्रा करते हुए शिव मंदिरों तक पहुंचते हैं और उस जल से भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं। ऐसे अगर आप पहली बार कांवड़ यात्रा पर जाने की सोच रहे हैं, तो इससे जुड़ी प्रमुख बातों को जानना जरूरी है।

कांवड़ यात्रा पूजा सामग्री

- ✻ गंगाजल ले जाने के लिए पात्र
- ✻ यह पीतल, तांबे या प्लास्टिक का पात्र हो सकता है, जिसे सावधानी से ले जाया जाता है।
- ✻ भगवान शिव की छोटी प्रतिमा या तस्वीर
- ✻ इसे कांवड़ के साथ रखा जा सकता है।
- ✻ धूप-बत्ती और माचिस
- ✻ रास्ते में या पड़ाव पर शिवजी की पूजा के लिए।
- ✻ कपूर - आरती के लिए।
- ✻ रुद्राक्ष की माला - जप के लिए।
- ✻ चंदन, भस्म या गोपी चंदन
- ✻शिवजी को लगाने के लिए।
- ✻ एक छोटा घंटा
- ✻ आरती या पूजा के समय बजाने के लिए।
- ✻ फूल - सफेद रंग के फूल।
- ✻ पूजा की थाली
- ✻ इन सभी सामग्री को रखने के लिए।
- ✻ साफ वस्त्र
- ✻ सफाई के लिए।

कांवड़ यात्रा के नियम

- ✻ कांवड़ यात्रा के दौरान पूर्ण सात्विकता का पालन करना चाहिए।
- ✻ यात्रा के दौरान ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
- ✻ जब तक आप शिव मंदिर नहीं पहुंच जाते और जलाभिषेक नहीं कर देते, तब तक कांवड़ को सीधे जमीन पर नहीं रखना चाहिए। अगर आराम करना है, तो उसे किसी पेड़ पर या किसी साफ स्थान पर टांग दें।
- ✻ यात्रा के दौरान जोर से बोलना, अपशब्दों का प्रयोग करने से बचें।
- ✻ पूरी यात्रा के समय शिव भजन और मंत्रों का जप करें।
- ✻ रास्ते में अन्य कांवड़ यात्रियों की मदद करें और सेवा का भाव रखें।
- ✻ सफाई का पूरा दें।
- ✻ यात्रा शुरू करने से पहले भगवान शिव के प्रति अपनी श्रद्धा और यात्रा को सफल बनाने का संकल्प लें।

शिव दर्शन में समाहित है लोककल्याण

निज संवाददाता : शिव की महिमा अपरंपार है। क्योंकि एक ही तत्व की तीन परम मूर्तियों यानी ब्रह्मा, विष्णु और शिव में सबसे अन्तिम मूर्ति का नाम ही शिव है। शिव ही शंकर भी हैं। ब्रह्मा का कार्य सृष्टि करना, विष्णु का कार्य पालन करना और शिव का कार्य संहार करना है। परन्तु साम्प्रदायक शैवों के अनुसार, शिव ही परम तत्व हैं और उनके कार्यों में संहार के अतिरिक्त सृष्टि और पालन के कार्य भी सम्मिलित हैं। शिव परम कारुणिक भी हैं और उनमें अनुग्रह अथवा प्रसाद तथा तिरोभाव यानी गोपन और लोपन की क्रिया भी पायी जाती है। इस प्रकार उनके कार्य पांच प्रकार के हैं। शिव की विभिन्न अभिव्यक्तियां इन्हीं कार्यों में से किसी न किसी से सम्बन्धित हैं, प्रभावित हैं, अनुप्राणित हैं। शिव का उद्देश्य ही भक्तों का कल्याण करना है। शिव विभिन्न कलाओं और सिद्धियों के प्रवर्तक भी माने गये हैं। संगीत, नृत्य, योग, व्याकरण, व्याख्यान, भैषज्य आदि के मूल प्रवर्तक शिव ही तो हैं। इनकी कल्पना सब जीवधारियों के स्वामी के रूप में की गयी है। इसीलिये यह पशुपति, भूतपति और भूतनाथ भी कहे गये हैं। शिव सभी देवताओं में श्रेष्ठ कहे गये हैं। इसीलिये महेश्वर और महादेव इनके विरुद पाये जाते हैं। इनमें माया की अनन्त शक्ति है, इसीलिये शिव मायापति भी हैं। उमा के पति होने से शिव का एक पर्याय उमापति भी है। इनके अनेक विरुद और पर्याय हैं।

गंभीर समाचार

पुर्तगाल में समुद्र तट पर दिखा दुर्लभ बादल

वर्षों बाद देखने को मिला ऐसा नजारा

पुर्तगाल : मानसून के दिनों में अक्सर आसमान में बादल छाते हैं और बारिश होती है। लेकिन सोशल मीडिया पर पुर्तगाल के पोवोआ दा वर्जीम समुद्र तट का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। इसमें एक बेहद प्राकृतिक घटना रोल क्लाउड देखा गया है। इसने लोगों को हैरान कर दिया है। पुर्तगाल में भीषण गर्मी पड़ रही है, इसी दौरान यह नजारा देखने को मिला। वीडियो में देख सकते हैं कि अटलांटिक महासागर से एक विशाल, मोटा और बेलनाकार बादल समुद्र की तरफ तट की ओर आ रहा है। बादल किनारे की ओर आते ही, तेज हवाएं चलने लगती हैं, जिससे समुद्र तट पर मौजूद लोग हैरान रह जाते हैं। इस दृश्य को देखकर लोग डरते भी हैं और रोमांचित भी होते हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर @Volcaholic नाम के अकाउंट से इस वीडियो को शेयर किया गया है। कैप्शन में लिखा है, पुर्तगाल के पोवोआ दा वर्जीम में दिखा अद्भुत रोल क्लाउड। इस वीडियो पर लोग अलग-अलग प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। एक शख्स का कहना है कि वर्षों बाद ऐसा नजारा देखने को मिला है। दूसरे शख्स का कहना है कि क्या यही तूफान यूरोप को गर्मी से राहत दिलाएगा?

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, रोल क्लाउड एक दुर्लभ मौसमीय घटना है। ऐसी स्थिति तब बनती है, जब गर्म, शुष्क हवा और ठंडी समुद्री हवा के बीच टकराव होता है। इससे आकाश में एक लंबा, बेलनाकार और लुढ़कता हुआ बादल बनता है, जो किसी लहर की तरह दिखाई देता है। यह बादल सुनामी की तरह दिखता है। हालांकि, विशेषज्ञों का कहना है कि इसका भूकंप या समुद्री ज्वार-भाटे से कोई संबंध नहीं है। यह एक प्राकृतिक, हानिरहित मौसमीय घटना है।

बता दें कि यूरोप इन दिनों भीषण गर्मी की चपेट में है। स्पेन में तापमान 46 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच गया है और 100 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। पुर्तगाल, इटली, ब्रिटेन, फ्रांस और नीदरलैंड जैसे देशों में भीषण गर्मी पड़ रही है।

धरती से सूरज की फोटो खींच रहा था फोटोग्राफर

कैमरे में कैद सुंदर नजारे को देख जनता हुई हैरान

एरिजोना : अमेरिकी फोटोग्राफर ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) की एक तस्वीर खींची है, जिसने लोगों को चौंका दिया। तस्वीर में दिख रहा है कि इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन सूर्य के सामने से गुजर रहा है और सूरज से तेज सौर ज्वालाएं (सोलर फ्लेयर) निकल रही है। फोटोग्राफर एंड्रयू मैकार्थी ने इस शानदार नजारे को अमेरिका के एरिजोना राज्य में सोनोरन रेगिस्तान के बीच अपने कैमरे में कैद किया। एंड्रयू मैकार्थी को सूरज और चांद की बेहद विस्तृत और खूबसूरत तस्वीरें खींचने के लिए जाना जाता है।

उन्होंने बताया है कि उनके पसंदीदा शॉट्स में से इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन की तस्वीर एक है। इसमें एक साथ दो घटनाओं को उन्होंने कैद किया है। पहली आईएसएस सूरज के सामने से गुजर रहा है और दूसरी उसी समय एक शक्तिशाली सोलर फ्लेयर का फूटना। एंड्रयू की तरफ से इस फोटो को कार्दाशेव ड्रीम्स नाम दिया गया। यह सोवियत खगोलशास्त्री निकोलाई कार्दाशेव को समर्पित है। उन्होंने ही यह पैमाना बनाया था जिससे यह मापा जाता है कि किसी सभ्यता का तकनीकी रूप से कितना विकास हुआ है।

एंड्रयू ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट @cosmic_background पर इस फोटो को बीते महीने शेयर किया था। उन्होंने कैप्शन लिखा-आईएसएस के ट्रांजिट का इंतजार कर रहा था, तभी एक सनस्पॉट में फ्लेयर फूट पड़ा और यह जिंदगी का सबसे यादगार शॉट मिल गया। उन्होंने आगे कहा कि अब तक की मेरी सबसे विस्तृत सोलर ट्रांजिट फोटो है। इससे यह पता चलता है कि सूरज के मुकाबले हमारी सबसे बड़ी स्पेस टेक्नोलॉजी भी कितनी छोटी है। इस शॉट को लेना आसान नहीं था। एंड्रयू ने बताया कि जब उन्होंने यह तस्वीर खींची, तब बाहर का तापमान 121 एफ (करीब 49.5सी) था। इतनी गर्मी में उनके टेलीस्कोप और कंप्यूटर हीटिंग से बचें, इसके लिए उन्होंने आइस पैक्स और थर्मोइलेक्ट्रिक कूलर का इस्तेमाल किया। अब उनकी यह तस्वीर वायरल हो रही है।

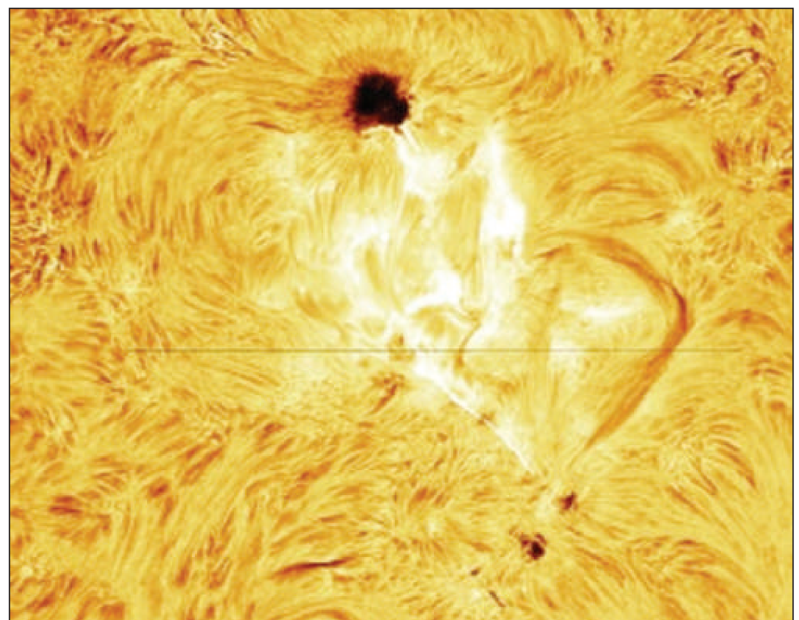

इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) की एक तस्वीर

कभी आपस में क्यों नहीं मिलते प्रशांत और अटलांटिक महासागर?

निज संवाददाता : प्रशांत महासागर और अटलांटिक महासागर आपस में क्यों नहीं मिलते? इन दोनों महासागरों के पानी का घनत्व और तापमान अलग होता है। इनकी जलधाराएं भी अलग दिशा में बहती हैं। इसलिए पास-पास होते हुए भी ये पूरी तरह नहीं मिलते। यह अंतर एक 'हेलोक्लाइन' बनाता है, जो एक अदृश्य अवरोध की तरह काम करता है, जिससे पानी का मिश्रण मिलना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा मजबूत समुद्री धाराएं भी पानी के मिश्रण को रोकती हैं। जहां ये मिलते हैं, वहां एक सीमा बनती है जिसे 'ओसियन फ्रंट' या महासागरीय तट कहते हैं।

इस कपड़े पर नज़र डालें। यह 550डिग्री सेल्सियस तक के तापमान को झेल सकता है और जलेगा नहीं, क्योंकि यह हल्के अग्निरोधी फाइबरग्लास सामग्री से बना है जिसे फायर ब्लैंकेट भी कहते हैं।

दुनिया की सबसे बड़ी इमारत में रहते हैं 20,000 लोग

निज संवाददाता : इस बिल्डिंग का नाम 'रिजेंट इंटरनेशनल अपार्टमेंट बिल्डिंग' है जो कि चीन के हांग्जो में स्थित है। इस बिल्डिंग में लगभग 20,000 लोग रहते हैं जो कि एक छोटे शहर की आबादी के बराबर है। दुनिया की इस सबसे बड़ी आवासीय इमारत में 39 मंजिल है और कई सुविधाएं और व्यवसाय मौजूद हैं, जिसमें स्कूल, विशाल फूड कोर्ट, स्विमिंग पूल, किराना स्टोर, नाई की दुकानें, नेल सैलून से लेकर कैफे तक शामिल हैं। सोशल मीडिया पर इस बिल्डिंग की चर्चा शुरू होते ही, लोगों ने इसे लेकर अपनी प्रतिक्रियाएं देनी भी शुरू कर दी हैं। कई यूजर्स ने इसे 'भविष्य की रिहायशी इमारत' कहा, जबकि कुछ ने इसे ''एक नया शहर'' बताने की कोशिश की।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि हांग्जो के इस क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है और रिजेंट इंटरनेशनल उसकी एक मिसाल है। इस इमारत की स्थिति और खासियतें इसे ना केवल एक आवासीय स्थान बनाती हैं, बल्कि यह एक पर्यटन स्थल के रूप में भी उभर रही है। लोग इसे देखने और इसके अंदर की सुविधाओं का अनुभव करने के लिए आकर्षित हो रहे हैं। इस प्रकार, रिजेंट इंटरनेशनल ने दुनिया भर में रिहायशी इमारतों के क्षेत्र में एक नई परिभाषा स्थापित की है। इसकी सफलता और लोकप्रियता ने यह साबित कर दिया है कि आधुनिक वास्तुकला और तकनीक मिलकर क्या कुछ कर सकती हैं।

इस बिल्डिंग का एक वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर वायरल हुआ है, जिसे @IndianTechGuide नाम के अकाउंट से शेयर किया गया है। 1 मिनट 59 सेकंड के इस वीडियो को अब तक लाखों लोग देख चुके हैं, जबकि 5 हजार से अधिक लोगों ने इस वीडियो को लाइक किया है। वीडियो देख चुके एक यूजर ने लिखा, इतने लोग एक साथ यहां रह रहे हैं। यह काफी रिस्की काम है। दूसरे यूजर ने लिखा, ये बिल्डिंग नहीं, पूरा शहर है। पानी की सप्लाई और सीवरेज का मैनेजमेंट आखिर यहां कैसे होता होगा? तीसरे यूजर ने लिखा, यह अविश्वसनीय है यह देखना आश्चर्यजनक है कि आधुनिक आर्किटेक्चर इतने सारे लोगों को एक छत के नीचे कैसे ला सकता है। चौथे यूजर ने लिखा, वे इतनी बड़ी इमारत में डिलीवरी का मैनेजमेंट कैसे करते हैं? यह एक लॉजिस्टिक चुनौती होनी चाहिए।

16 गंभीर समाचार | स्पोर्ट्स | RNI No. WBHIN/2014/59321 ISSN No. 2456/3005 Kolkata | कोलकाता, 10 जुलाई 2025

भारत आएगी पाकिस्तानी हॉकी टीम

♦एशिया कप में हिस्सा लेने को मिली मंजूरी

कब से होगा मुकाबला

एशिया कप टूर्नामेंट 27 अगस्त से 7 सितंबर तक राजगीर में आयोजित किया जाएगा, जिसमें भारत सहित एशिया की प्रमुख टीमें हिस्सा लेंगी। पाकिस्तान की टीम की भागीदारी से इस टूर्नामेंट का रोमांच और भी बढ़ गया है। भारत-पाकिस्तान हॉकी का यह ऐतिहासिक मुकाबला बिहार की धरती पर देखने को मिलेगा।

निज संवाददाता : पहलगाम में आतंकी हमले और फिर ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हुए सैन्य संघर्ष के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच खेल आयोजन फिर से शुरू होने जा रहे हैं। भारत में अगले महीने हॉकी एशिया कप का आयोजन होना है और इसके लिए पाकिस्तानी टीम को भारत आने की मंजूरी मिल गई है। भारत सरकार ने इसको लेकर अपने इरादे जाहिर कर दिए हैं। न्यूज एजेंसी की एक रिपोर्ट में खुलासा किया गया है कि बिहार के राजगीर में अगस्त-सितंबर में होने वाले हॉकी एशिया कप के लिए पाकिस्तानी टीम को भारत आने से रोका नहीं जाएगा। रिपोर्ट में खेल मंत्रालय के सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि इंटरनेशनल स्पोर्ट्स की जरूरतों को देखते हुए खेलों में हिस्सा लेने से पीछे नहीं हटा जा सकता। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में पाकिस्तान की 31 सदस्यीय हॉकी टीम को भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से हिस्सा लेने की अनुमति मिल गई है। हॉकी इंडिया ने पाकिस्तानी टीम के आने की आधिकारिक जानकारी दी है। बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के महानिदेशक रविन्द्रन शंकरण ने बताया कि हॉकी इंडिया ने उन्हें पाकिस्तान टीम के आने की सूचना दी है। इस बीच एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट को लेकर तैयारियां चरम पर हैं।

मल्टी नेशन इवेंट्स से परेशानी नहीं

रिपोर्ट में बताया गया है कि सरकार भारत में होने वाले मल्टी-नेशन इवेंट्स में किसी भी टीम के हिस्सा लेने के खिलाफ नहीं है। हालांकि यह भी कहा गया है कि बाइलेटरल इससे अलग है। रूस और यूक्रेन का उदाहरण देते हुए खेल मंत्रालय के सूत्र ने कहा-'रूस और यूक्रेन एक-दूसरे से लड़ रहे हैं लेकिन वो भी मल्टी-नेशन इवेंट्स में हिस्सा लेते हैं।' बिहार के राजगीर में 27 अगस्त से 7 सितंबर तक एशिया कप का आयोजन किया जाएगा। वहीं इसके अलावा नवंबर-दिसंबर में तमिलनाडु में जूनियर मेंस हॉकी वर्ल्ड कप का आयोजन भी किया जाएगा। एशिया कप के साथ ही पाकिस्तानी टीम को इस इवेंट में हिस्सा लेने के लिए भी भारत आने की इजाजत मिलेगी।

पाकिस्तान के साथ खेलने पर रोक की मांग

गौरतलब है कि पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकवादी हमले में 26 पर्यटकों की मौत हो गई थी। पाकिस्तान समर्थित आतंकियों की कायराना हरकत के बाद से ही पूरे देश में गुस्सा था। भारत सरकार ने भी इसके बाद से ही पाकिस्तान के साथ अपने कई समझौते और व्यापार को रद्द कर दिया। साथ ही भारत में लगभग सभी पाकिस्तानी सोशल मीडिया अकाउंट्स और यूट्यूब चैनल्स पर भी बैन लगा दिया गया था। इसके बाद से ही लगातार यही मांग हो रही थी कि क्रिकेट वर्ल्ड कप से लेकर हर स्पोर्ट्स इवेंट में भी पाकिस्तान के खिलाफ खेलना बंद करना चाहिए।

भारतीय महिला हॉकी टीम एफआईएच प्रो लीग से बाहर

निज संवाददाता : भारतीय महिला हॉकी टीम का एफआईएच प्रो लीग से बाहर होना बीते 30 जून को ही तय हो गया, वह भी सीज़न का अपना आखिरी मैच चीन के खिलाफ खेलने से पहले ही, जब जर्मनी ने इंग्लैंड को 4-2 से हराया। भारत, जो नौ टीमों में सबसे नीचे था और 15 मैचों में सिर्फ 10 अंक ही जुटा पाया, को प्रो लीग में बने रहने के लिए यह उम्मीद थी कि इंग्लैंड जर्मनी को हरा दे, ताकि अंकतालिका में भारत की गणितीय संभावना बनी रहे। जर्मनी को खुद को सुरक्षित रखने के लिए केवल एक ड्रॉ की ज़रूरत थी, लेकिन स्टाइन कुर्ज़ के दो गोल और कप्तान लीसा नोल्टे व योहाना हैचेनबर्ग के एक-एक गोल की बदौलत पूर्व भारतीय कोच यानेके शॉपमैन के नेतृत्व वाली टीम 16 अंकों के साथ सातवें स्थान पर रही, जबकि इंग्लैंड 14 अंकों के साथ आठवें स्थान पर रहा। अब भारतीय महिला टीम अगले सीज़न एफआईएच नेशंस कप में खेलेगी, जहां विजेता को 2026-27 सीज़न की एफआईएच प्रो लीग में सीधा प्रवेश मिलेगा।

> भारतीय कोच यानेके शॉपमैन के नेतृत्व वाली टीम 16 अंकों के साथ सातवें स्थान पर रही, जबकि इंग्लैंड 14 अंकों के साथ आठवें स्थान पर रहा।

लिवरपूल के फॉरवर्ड जोटा की कार दुर्घटना में मौत

निज संवाददाता : लिवरपूल के फॉरवर्ड डिओगो जोटा की 28 साल की उम्र में एक कार दुर्घटना में मौत हो गई। जोटा के भाई आंद्रे सिल्वा की भी इस दुर्घटना में मौत हो गई। यह दुर्घटना स्पेन के ज़मोरा प्रांत में हुई। 28 वर्षीय जोटा पुर्तगाली सेकेंड-टियर क्लब पेनाफिल के साथ एक पेशेवर फुटबॉलर भी थे। गार्डिया सिविल ने बताया कि जोटा और उनके भाई की बीते गुरुवार को स्थानीय समयानुसार लगभग 00:30 बजे मौत हो गई। उन्होंने कहा कि उनकी कार, एक लेम्बोर्गिनी, एक अन्य वाहन को ओवरटेक करते समय टायर फटने के कारण सड़क से उतर गई और फिर उसमें आग लग गई। जोटा ने अपनी दीर्घकालिक साथी रूटे कार्डसो से जिनसे उनके तीन बच्चे हैं, 11 दिन पहले ही शादी की थी। उन्होंने हाल ही में 22 जून को हुए समारोह के बाहर की तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट कीं। लिवरपूल ने कहा कि वे जोटा के जाने से 'बेहद दुखी' हैं, जिन्हें उन्होंने 2020 में 41 मिलियन पाउंड में वॉल्व्स से साइन किया था। उन्होंने रेड्स के लिए 182 मैचों में 65 गोल किए, जिससे उन्हें 2022 में एफए कप और लीग कप और पिछले सीज़न में प्रीमियर लीग का खिताब जीतने में मदद मिली। जोटा 2017 में एटलेटिको मैड्रिड से वॉल्व्स में चले गए, शुरू में एक सीज़न के लिए लोन पर, फिर उन्होंने इस बदलाव को स्थायी बना दिया और उन्होंने क्लब के साथ अपने तीन सीज़न में 131 मैचों में 44 गोल किए। वॉल्व्स के एक बयान में कहा गया-'हमारे दिल टूट गए हैं।' 'डिओगो को हमारे प्रशंसक बहुत पसंद करते थे, उनके साथी उन्हें बहुत प्यार करते थे और उनके साथ काम करने वाले सभी लोग उन्हें बहुत प्यार करते थे। उन्होंने जो यादें बनाईं, उन्हें कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। हमारी संवेदनाएं डिओगो और उनके भाई के परिवार, दोस्तों और प्रियजनों के साथ हैं।' जोटा ने 2016 में एटलेटिको मैड्रिड में शामिल होने से पहले पैकोस डी फेरेरा के साथ अपने पेशेवर करियर की शुरुआत की और उन्होंने 2016-17 सीज़न पोर्टो के साथ लोन पर बिताया, जहाँ उनके भाई एक युवा खिलाड़ी थे। क्लब के एक बयान में कहा गया-'एफसी पोर्टो शोक में है। यह सदमे और गहरे दुख के साथ है कि हम डिओगो जोटा और उनके भाई आंद्रे सिल्वा के परिवार और दोस्तों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएँ भेजते हैं। शांति से आराम करें।' 2017 में पोर्टो छोड़ने के बाद, आंद्रे सिल्वा ने 2021 में गोंडोमर में शामिल होने से पहले तीन अन्य पुर्तगाली क्लबों में युवा अकादमियों के साथ समय बिताया। उन्होंने 2023 में एक निःशुल्क स्थानांतरण पर पेनाफिल के लिए हस्ताक्षर किए और पिछले दो सत्रों में 59 लीग प्रदर्शन किए।

5 जुलाई, 2025 : भारतीय खेलों का गौरवशाली दिन

शुभ्रांशु राय

पिछले 5 जुलाई का दिन भारतीय खेलों के लिए एक बड़ा दिन था। और यह सिर्फ रिकॉर्ड तोड़ क्रिकेट स्कोर-एक टेस्ट में 1014 रन, जो हमारे 93 साल के टेस्ट क्रिकेट खेलने के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था। भारतीय महिला फुटबॉलरों ने एशियाई कप के लिए क्वालीफाई करने के लिए बहुत उच्च रैंक वाली थाई टीम को हराया। थाई टीम में कई दोहरी नागरिकता वाले खिलाड़ी थे जो यूरोप में लीग में खेलते हैं, फिर अनिमेश कुजूर ग्रीस में ड्रोमिया इंटरनेशनल स्प्रिंट और रिले मीटिंग में 100 मीटर स्प्रिंट में 10.18 सेकंड का समय निकालकर भारत के सबसे तेज़ पुरुष बने, जो पहली बार था जब किसी भारतीय धावक ने 10.2 सेकंड से नीचे का समय निकाला। और अंत में, नीरज चोपड़ा क्लासिक। नीरज की जीत शानदार थी, लेकिन इससे भी अधिक आश्चर्यजनक था लगभग 15,000 लोगों का एक ही एथलेटिक इवेंट के लिए आना, जो जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट द्वारा अच्छी तरह से प्रचारित और वास्तव में अच्छी तरह से आयोजित किए जाने के कारण संभव हुआ। यह बताता है कि अगर हम खेल प्रशासकों और आयोजकों के रूप में एक साथ आ सकते हैं तो क्रिकेट से परे भारतीय खेल में बहुत संभावना है।

महत्वपूर्ण बातें- भारतीय महिला फुटबॉल टीम की उपलब्धि: एशियाई कप के लिए क्वालीफाई करना भारतीय फुटबॉल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पल है।- अनिमेश कुजूर की उपलब्धि: भारत के सबसे तेज़ पुरुष बनने के लिए अनिमेश कुजूर की उपलब्धि भारतीय एथलेटिक्स के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।- नीरज चोपड़ा क्लासिक की सफलता: नीरज चोपड़ा की जीत और बड़ी संख्या में दर्शकों की उपस्थिति भारतीय खेलों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत करती है।

क्लब वर्ल्ड कप: पीएसजी के खिलाफ खेलेंगे एमबाप्पे, रियल सेमी में

निज संवाददाता : काइलियन एमबाप्पे क्लब वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं। रियल मैड्रिड ने क्वार्टर फाइनल में बोरूसिया डॉर्टमंड को 3-2 से हराया। वहीं, पेरिस सेंट जर्मेन ने बायर्न म्यूनिख को 2-0 से हराया। भले ही फ्रेंच क्लब को दो रेड कार्ड मिले, लेकिन उन्हें जीतने में कोई दिक्कत नहीं हुई। एमबाप्पे को सेमीफाइनल में अपने पुराने क्लब के खिलाफ मैदान में उतरना होगा। अंतिम चार में पीएसजी रियल से आगे है। इसका मतलब है कि एमबापे को अपने पुराने क्लब के खिलाफ मैदान में उतरना होगा।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक** : अजय कुमार मोहता, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)